

रोहानी इलाज

आध्यात्मिक चिकित्सा

ख्वाजा शम्सुद्दीन अजीमी



रोहानी इलाज

आध्यात्मिक चिकित्सा

ख्वाजा शम्सुद्दीन अजीमी

समर्पण

हज़ूर सरवर-ए-ब्रहमांड (P.B.U.H.) की सेवा में

संदेह और अनिश्चितता के तूफ़ान से उत्पन्न लगभग दो सौ बीमारियों और समस्याओं को एकत्र कर इस पुस्तक में उनका समाधान प्रस्तुत किया जा रहा है।

पुस्तक "रुहानी इलाज" में जितने भी रोगों के उपचार और समस्याओं के समाधान प्रस्तुत किए गए हैं, वे सभी मुझे सिलसिला ओवैसिया, कलंदरिया, अज़ीमिया से स्थानांतरित हुए हैं, और इस फ़कीर ने इन समस्त आमलियात की ज़कात अदा की है।

मैं ब्रहमांड की सृष्टि के लिए इस रुहानी कृपा को सामान्य करता हूँ और सैय्यदुना हज़ूर (P.U.H.B.) के माध्यम से प्रार्थना करता हूँ कि अल्लाह तआला मेरी इस कोशिश को स्वीकार्यता प्रदान करें, अपने भक्तों को स्वास्थ्य प्रदान करें, और उन्हें कठिनाइयों, संकटों और परेशानियों से सुरक्षित रखें।

आमीन, सुम्मा आमीन।

सामग्री सूची

प्रस्तावना.....	16
कार्य और कर्ता (आमिल) व्यक्तित्व	22
अनुमति और तावीज़ की ज़कात	24
भूतिया व्यक्ति का उपचार.....	25
आपदाओं और विपदाओं से सुरक्षित रहने की विधि।.....	27
आंखों के रोग.....	28
ग्लूकोमा और मोतियाबिंद.....	28
रात की अंधता.....	28
धुंधलापन / दृष्टि की कमजोरी	29
आंख का नर्सिंगहा	29
आंख का नासूर.....	30
आँखों का तिरछापन (स्क्विंट आँखें)	31
आंखों के सामने खून तैरता हुआ नजर आना.....	31
अदृश्य से सहित प्राप्त करना	32
गुप्त पुष्टि (उस्तेखारा)	33
परीक्षा में सफलता के लिए.....	33
एलर्जी (ALLERGY).....	34
हृदय कंपन	35

अग्जीमा (ECZEMA)	36
आंतों के रोग	37
आंतों में घाव.....	37
आंतों की बीमारी	37
आंतों में सूखापन	37
आंत उतरना (हर्निया)	38
(इस्तसका).....	39
जलंधर - पेट में पानी भर जाना.....	39
तंत्रिका की कमजोरी.....	40
अंगों का सुन्न पड़ जाना	41
बच्चों की अवज्ञा	41
हीन भावना.....	43
उदासी.....	43
बुखार.....	44
सामान्य बुखार	44
बारी का बुखार.....	45
टाइफॉइड, मोतीझरा, मियादी बुखार, खसरा	45
बच्चों के रोग और उनका उपचार.....	46

उम्मुस्सबियान (सूखा रोग)	46
पसली चलना और न्यूमोनिया	46
कर्ण पीड़ा (कान का दर्द)	47
काली खाँसी (कुक्कर खाँसी)	47
शय्या-मूत्र (बिस्तर में पेशाब करना)	48
मृत्तिका-सेवन (मिट्टी खाना)	48
ज़िद (हठ) का उपचार	49
अंत्र कृमि (पेट में कीड़े)	49
दंत प्रक्षालन (दांत निकलना)	49
नज़र लगना	50
कान से पीप आना	50
बधिरता या मूकता	51
स्वप्न में भयभीत होना	51
बच्चों का गुम होना	52
भूख न लगना	52
स्मृति का कमजोर होना	52
पढ़ाई में मन का न लगना	53
बदन पर काले दाग होना	53
दुष्ट आदतों से मुक्ति	54
रक्तचाप, मानसिक टूटन, और मानसिक विकार	54

बुरे स्वप्न (अशुद्ध वस्त्र होना) से छुटकारा पाने के लिए	55
शरीर में दर्द.....	56
रोग के बाद कमजोरी	57
बिच्छू या सांप के काटे का इलाज.....	57
सिर के बाल लंबे करने के लिए.....	58
वृद्धावस्था में श्रवण शक्ति का क्षीण होना	58
बहरापन का निवारण	59
बगल में गाँठें.....	59
बेहोशी से जागृत करना	60
बहन-भाई के मध्य विवाद निवारण	60
बरकत (आशीर्वाद) के लिए.....	61
अभाग्य के कारण उत्पन्न समस्याएँ.....	62
बवासीर	63
वायु वाली बवासीर के लिए:	63
खून वाली बवासीर के लिए:.....	63
कुष्ठ (सफेद दाग).....	64
जो रोग समझ में न आए.....	64

पित्त के रोग.....	65
पेट की गड़बड़ी (पेचिश).....	65
पसलियों में दर्द.....	66
पायरीया (गम के रोग).....	66
पेट का बढ़ना और मोटापा कम करने के लिए.....	67
पिंडलीयों या टांगों के मांसपेशियों का ढीला होना.....	67
पत्तियां उड़ना.....	68
फुंसी, फोड़ा, खुजली, छेप.....	68
मूत्र संबंधी रोग और उनका उपचार	69
पेशाब में खून आना.....	69
पेशाब रुक रुक कर आना	69
पेशाब बार बार आना	70
पेशाब में शक्कर आना, सोते समय पेशाब करना और	70
मूत्राशय की कमजोरी	70
सिफिलिस, गोनोरिया और अन्य यौन संचारित रोग	71
स्थानांतरण की रद्दीकरण	71
स्थानांतरण कराने के लिए.....	72
वशीकरण	72

रोगों की पहचान.....	74
तिल्ली का उपचार	74
दौरे पड़ना और शरीर में झटके लगना.....	75
टॉन्सिल्स और कंठमाला.....	75
कंद क्षय रोग (तपेदिक).....	76
जिगर के सभी रोग.....	76
युवा अवस्था में बचपन जैसी आकृति.....	77
धातु रोग.....	77
पशुओं में दूध की कमी	78
यौन आकर्षण उत्पन्न करने के लिए	78
अवांछित यौन इच्छा समाप्त करने के लिए	78
जादू का तोड़	79
जिन्नात के प्रभाव को दूर करने के लिए.....	80
शारीरिक और आध्यात्मिक क्षमताओं की नवीनीकरण	81
चोरी की आदत छुड़ाने के लिए	81
चोरी गए सामान की वापसी के लिए	82
चोट से तकलीफ.....	82

चलने फिरने में अक्षमता	82
चेहरे की सुंदरता और आकर्षण में वृद्धि के लिए.....	83
गैस्ट्रिक समस्याएँ	84
ईर्ष्यालु व्यक्ति या शत्रु की हानि से सुरक्षित रहने हेतु.....	85
इच्छानुसार विवाह हेतु.....	86
यात्रा के दौरान सुरक्षा.....	87
स्मरण शक्ति की दुर्बलता दूर करने हेतु	88
रक्त की कमी (अनीमिया - ANAEMIA) दूर करने हेतु.....	88
स्वयं से बातें करने की प्रवृत्ति.....	89
मानसिक संतुलन की विकृति	89
मस्तिष्कीय दुर्बलता	90
दाग, धब्बे एवं घाव के निशान	90
दवा या इंजेक्शन की प्रतिक्रिया (REACTION)	91
दाँत पीसने की आदत.....	91
दमा (ASTHMA)	92
दाद	94
दाँतों के समस्त रोग	94

दर्द	95
दंत या दाढ़ में पीड़ा.....	95
मस्तिष्कीय पीड़ा (सिरदर्द).....	95
तीव्र शारीरिक पीड़ा (किसी भी अंग में होने वाला तीव्र दर्द).....	96
कान में पीड़ा.....	96
मेरुदंड (रीढ़ की हड्डी) में पीड़ा.....	96
गर्दन एवं कमर में पीड़ा	97
गुर्दों में पीड़ा	98
अर्थराइटिस (लंगड़ी का दर्द)	98
एड़ी का दर्द	99
आधा सिर का दर्द	99
डीप्थीरिया (DIPHTHERIA) या खूनाक.....	100
स्वाद का बिगड़ना.....	100
मधुमेह (DIABETES)	101
ज़ेहन का माओफ़ होना.....	101
रग फटने से खून आना.....	102
रशा (कंपकंपी).....	103
सैयदना हुज़ूर अलैहिस्सलात वस्सलाम की ज़ियारत और क़दमबोसी.....	104

शादी के लिए	105
पति के गुस्से को समाप्त करने के लिए.....	105
पति-पत्नी का झगड़ा.....	106
पति और पत्नी का हाथापाई करना.....	107
सचेतन दुर्बलता को समाप्त करने के लिए.....	107
तापीय रोग (PLAGUE).....	108
आस्था का बिगड़ना.....	110
महिलाओं के रोग.....	111
गर्भपात और बच्चों का जन्म के तुरंत बाद मर जाना.....	111
बांझपन	112
महिनावारी की अनियमितता	112
मासिक धर्म की अधिकता.....	114
ल्यूकोरिया (गर्भाशय के समस्त रोग)	114
प्रसव के बाद पेट का बढ़ना	114
चिल्ला की समस्त तकलीफें	115
बच्चे के जन्म में आसानी.....	116
दूध की कमी	116

थनीला	117
सीने का समुचित विकास	117
चेहरे एवं शरीर पर अनावश्यक रोमों (बालों) की समस्या	118
हिस्टीरिया	119
अत्यधिक क्रोध.....	120
फालिज और लकवा	121
फिस्टुला (FISTULA) अथवा भगंदर.....	122
ऋण की वसूली हेतु	123
ऋण मुक्ति के लिए.....	124
कैदी की मुक्ति के लिए.....	124
ऊंचाई (कद) में वृद्धि हेतु	125
दुआ की स्वीकृति.....	125
कैंसर	126
कुबड़.....	128
खेती-बाड़ी में समृद्धि.....	129
कार्य में मन न लगना	129
कुत्ते का काटना	130

आँतों में कीड़े (कृमि संक्रमण)	131
गुर्दे के सभी रोग	132
गंजापन.....	132
गठिया और घुटनों का दर्द.....	133
लू लगना.....	133
मुंह से बदबू आना	134
मकान या किसी दूसरी जगह को खाली कराना.....	134
मिर्गी का दौरा.....	135
पुरुषों में स्त्रीत्व.....	136
नींद कम आना या बिल्कुल न आना.....	137
नाक से खून आना (नकसीर फूटना).....	138
पुराना नज़ला	138
नाक बंद होने के कारण गंध न महसूस होना.....	139
नाभि का खिसकना (नाफ़ टलना)	139
नशे की लत छुड़ाने के लिए	140
नाक के रोगों के लिए	141
हिचकी का उपचार	142

हकलाहट या लकलकन के लिए	142
हड्डी की बीमारी जिसमें हड्डियाँ गलने लगती हैं और सूरासिफलस	143
हैजा (कोलरा)	143
हड्डियों का पूर्ण न होना और हड्डियों में दर्द	144
हड्डियों का बढ़ना	144
पीलिया या (JAUNDICE)	144
आवाज़ को सुंदर बनाना	145
अल्सर या पेट में घाव	146
एपेंडिसाइटिस	146
आंखों में दर्द या लाली	147
असीब (बुरी आत्माओं) का तावीज़	147
बच्चों के हृदय में छेद	148
बगल और पैरों से दुर्गंध आना	149
पोलियो	149
मानसिक व्याकुलता (जहाँ भूत-प्रेत बाधा का संदेह हो)	151
पेट में पीड़ा	151
तस्खीर अधिकारी और अफसरान	152

जादू टोने का समाधान	152
चीचक.....	153
खून में खराबी.....	153
रात को सोते समय चलना.....	154
व्यापार में बंदिश	155
किसी सवाल का जवाब देते वक्त ज़बान का रुक जाना	156
कांच का बाहर आना.....	156
घर में सभी का बीमार रहना.....	157
मन में खून भर जाना.....	157
नौकरी या व्यवसाय का प्राप्त करना	158
बुरी नज़र	159
(अ) विवाह में बाधा.....	160
(ब) नज़र उतारने की विधि	160

प्रस्तावना

मनुष्य (आदमी) अपने जीवन के सभी चरणों को समय के छोटे-छोटे खंडों में पूरा करता है। उदाहरण के लिए, एक सेकंड का एक अंश भी मनुष्य के जीवन के भीतर एक इकाई के रूप में कार्य करता है, चाहे उसकी आयु सौ (100) वर्ष क्यों न हो, फिर भी वह इन्हीं क्षणों में विभाजित होती रहती है। विचारणीय विषय यह है कि मनुष्य अपने जीवन को व्यतीत करने के लिए अपने ज़ेहन (मन) में समय के इन खंडों को जोड़ता है और इन्हीं खंडों से कार्य लेता है। इन खंडों के प्रवाह में, जिसे हम सोचना या चिंतन करना कहते हैं, हम या तो एक खंड से आगे दूसरे खंड पर पहुंचते हैं या फिर समय के उसी खंड की ओर लौटते हैं।

इसे इस प्रकार समझा जा सकता है कि कोई व्यक्ति अभी यह सोचता है कि वह भोजन करेगा, लेकिन उसके पेट में भारीपन महसूस होता है, इस कारण वह इसे त्याग देता है। वह कितने समय तक इस त्याग पर कायम रहेगा, यह उसे स्वयं भी ज्ञात नहीं होता। इसी प्रकार असंख्य विचार उसकी जीवन संरचना के मूल तत्व हैं, जो उसे असफल या सफल बनाते हैं। अभी वह एक संकल्प करता है, फिर उसे त्याग देता है—चाहे मिनटों में त्याग करे, कुछ घंटों में करे या फिर महीनों और वर्षों में त्याग करे।

इसका अभिप्राय यह है कि 'त्याग' मनुष्य के जीवन का एक प्रमुख तत्व है, क्योंकि वह प्राकृतिक रूप से आराम प्रिय होता है। बहुत सी अवस्थाएँ हैं, जिन्हें मनुष्य कठिनाई, समस्या, रोग, ऊब, निष्क्रियता, बेचैनी आदि नामों

से पुकारता है। इन अवस्थाओं के विपरीत एक ऐसी अवस्था है, जिसे वह 'शांति' कहता है। यह नहीं कहा जा सकता कि ये सभी अवस्थाएँ वास्तविक हैं। वास्तव में, इनमें से अधिकतर अवस्थाएँ केवल मान्यताओं पर आधारित होती हैं।

मनुष्य के मस्तिष्क की संरचना ही ऐसी है कि वह हर प्रकार की सुविधा की ओर दौड़ता है और प्रत्येक श्रम से बचने का प्रयास करता है। यह दो भिन्न दिशाएँ हैं, और इन्हीं दिशाओं में मनुष्य सदैव विचारों के माध्यम से यात्रा करता है। उसकी प्रत्येक गति का मूल स्रोत इन्हीं दिशाओं में से कोई एक दिशा होती है। होता यह है कि हम अभी एक योजना बनाते हैं, फिर उसे व्यवस्थित करते हैं, यहाँ तक कि वह पूर्ण हो जाती है। उसकी दिशा भी सही होती है, किंतु केवल दस कदम चलने के पश्चात् हमारे ज़ेहन (मस्तिष्क) में परिवर्तन उत्पन्न हो जाता है। परिवर्तन होते ही विचारों की दिशा परिवर्तित हो जाती है, और परिणामस्वरूप मार्ग भी बदल जाता है। इस प्रकार वह लक्ष्य, जिसकी ओर हम अग्रसर थे, अदृश्य हो जाता है। तब हमारे पास क्या शेष रहता है? केवल टटोलना और अनुमान के आधार पर आगे बढ़ना। स्पष्ट रहे कि यह चर्चा संदेह (शक) और विश्वास (यक़ीन) के मध्य मार्गों की थी।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि मनुष्य का अस्तित्व भ्रम (वहम) और विश्वास (यक़ीन) पर आधारित है। धार्मिक परिभाषा में इसे 'शक' और 'ईमान' कहा गया है। अल्लाह तआला मस्तिष्क में संदेह को स्थान देने से मना करते हैं और ज़ेहन में विश्वास को दृढ़ करने का आदेश देते हैं। पवित्र कुरआन में स्पष्ट रूप से कहा गया है: *"लारैब"—यह वह पुस्तक है, जिसमें कोई संदेह*

नहीं। यह मार्गदर्शन उन्हीं के लिए है, जो अदृश्य (गैब) पर विश्वास रखते हैं। जिस संदेह को अल्लाह ने वर्जित घोषित किया है, वही वह संदेह है, जिससे हज़रत आदम (A.S.) को बचने का निर्देश दिया गया था। अंततः शैतान ने उन्हें भ्रम में डाल दिया और यह संदेह उनके मस्तिष्क में प्रवेश कर गया, जिसके कारण हज़रत आदम (A.S.) को स्वर्ग से निकाला गया। यहीं से मनुष्य के मस्तिष्क में दो दिशाओं का निर्धारण हुआ—संशय (शक) और विश्वास (यक्रीन)।

इन उल्लेखित तथ्यों के प्रकाश में यह स्पष्ट होता है कि मनुष्य के मस्तिष्क का केंद्र संदेह (शक) और विश्वास (यक्रीन) है। यही वह तत्व हैं, जो मस्तिष्कीय कोशिकाओं (सेल्स) में निरंतर प्रभावी रहते हैं। संदेह जितना अधिक होगा, मस्तिष्कीय कोशिकाओं में उतनी ही अधिक क्षति (टूट-फूट) उत्पन्न होगी। यह जानना अत्यंत आवश्यक है कि यही वे मस्तिष्कीय कोशिकाएँ हैं, जिनके प्रभाव में समस्त तंत्रिका तंत्र (नर्वस सिस्टम) कार्य करता है, और तंत्रिकाओं (नसों) की सक्रियता ही मानव जीवन की आधारशिला है।

किसी वस्तु पर मनुष्य का विश्वास करना उतना ही कठिन है जितना कि भ्रम (फरेब) को असत्य सिद्ध करना। इसका उदाहरण यह है कि मनुष्य जो कुछ वास्तव में है, वह स्वयं को उसके विपरीत रूप में प्रस्तुत करता है। वह सदैव अपनी कमज़ोरियों को छिपाने का प्रयास करता है और उनके स्थान पर उन काल्पनिक (मफ़रूज़ा) गुणों को व्यक्त करता है, जो उसके भीतर वास्तव में विद्यमान नहीं होते। सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि जिस समाज

में वह पला-बढ़ा है, वही समाज उसका दृढ़ विश्वास (अकीदा) बन जाता है। उसका ज़ेहन इस योग्य नहीं रह जाता कि वह इस विश्वास का तर्कपूर्ण विश्लेषण कर सके। यह विश्वास (अकीदा) उसके लिए यकीन (अटल सत्य) का दर्जा प्राप्त कर लेता है, जबकि वास्तविकता में वह केवल एक भ्रम (फरेब) होता है। इसका सबसे बड़ा कारण यही है कि मनुष्य जैसा स्वयं को प्रस्तुत करता है, वह वस्तुतः वैसा नहीं होता, बल्कि इसके विपरीत होता है।

इस प्रकार की जीवनशैली जीने में उसे बहुत सी कठिनाइयाँ आती हैं। ऐसी कठिनाइयाँ जिनका समाधान मनुष्य के पास नहीं होता। इस जीवन में कदम-कदम पर उसे यह खतरा महसूस होता है कि उसका कर्म नष्ट हो जाएगा और निष्कलंक सिद्ध होगा। कभी-कभी मनुष्य यह समझने लगता है कि उसका समस्त जीवन नष्ट हो रहा है। यदि वह नष्ट नहीं हो रहा, तो भी वह भारी संकट में है। यह सब उन मस्तिष्कीय कोशिकाओं की वजह से होता है जिनमें शंका के कारण अत्यधिक टूट-फूट हो रही होती है। मस्तिष्कीय कोशिकाओं की तेज़ टूट-फूट और बदलाव कदम-कदम पर उसके कर्म मार्ग में बाधाएं उत्पन्न करती हैं, परिणामस्वरूप उसका कार्य निष्कलंक साबित होता है और तंत्रिका तंत्र को हानि पहुँचती है।

मनुष्य का मस्तिष्क वास्तव में उसके नियंत्रण में होता है। वह विश्वास की शक्ति से कोशिकाओं की टूट-फूट को बढ़ा या घटा सकता है। मस्तिष्कीय कोशिकाओं की टूट-फूट में कमी से तंत्रिका तंत्र को हानि पहुँचने की संभावना बहुत कम हो जाती है।

मनुष्य भी एक जीव है। किसी प्रकार से उसने आग का उपयोग करना सीख लिया और आग के उपयोग से धीरे-धीरे ज्ञान और कौशल की नींव पड़ी। 'रंग और रोशनी से इलाज' नामक पुस्तक में मनुष्य के दो पैरों पर चलने की विशेषता का वर्णन किया गया है। हमने उस पुस्तक में यह व्याख्या की है कि प्राणी और मनुष्य में रोशनी का विभाजन किस आधार पर स्थापित है और इस विभाजन के आधार पर ही मनुष्य और प्राणी की जीवनशैली में अंतर होता है।

इतिहास में कोई ऐसा समय नहीं आया जब मनुष्य हजारों में से अधिक स्वस्थ रहता। वास्तव में यह होना चाहिए था कि वह अधिक से अधिक प्रकार की रोशनियों और रोशनी के तरीकों को जानता, लेकिन उसने कभी इस ओर ध्यान नहीं दिया, यह हमेशा पर्दे के पीछे रहा। मनुष्य ने पर्दे में झाँकने की कोशिश इसलिए नहीं की क्योंकि या तो उसके सामने रोशनी का पर्दा था ही नहीं, या फिर उसने रोशनी के पर्दे की ओर ध्यान नहीं दिया। उसने उन नियमों को जानने की कोई कोशिश नहीं की जो रोशनी के मिश्रण से संबंधित थे। यदि मनुष्य यह व्यवहार अपनाता तो उसके मस्तिष्कीय कोशिकाओं की टूट-फूट न्यूनतम हो सकती थी। इस स्थिति में वह अधिक से अधिक विश्वास की ओर कदम बढ़ाता, अव्यर्थ विश्वासों और अंधविश्वासों से बचता, शंकाएँ उसे उतना परेशान नहीं करतीं जितनी कि अब करती हैं और उसकी प्रेरणाओं में जो कार्यात्मक रुकावटें उत्पन्न होती हैं, वे कम होतीं। लेकिन ऐसा नहीं हुआ, उसने रोशनी के प्रकारों को नहीं जाना और न ही रोशनी की स्वभाव का ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश की। उसे यह भी नहीं

पता कि रोशनियाँ भी एक स्वभाव और प्रकृति रखती हैं और उनमें प्रवृत्तियाँ भी होती हैं। उसे यह भी ज्ञात नहीं कि रोशनियाँ ही उसकी जीवन हैं और वह उसकी रक्षा करती हैं। वह तो बस उस मिट्टी के पुतले से परिचित है, जो कि अपनी कोई स्वतंत्र जीवन शक्ति नहीं रखता, और जिस पर अल्लाह तआला ने कहा कि वह सड़ी हुई मिट्टी से निर्मित है और कहीं यह भी कहा है कि वह मिट्टी एक खाली स्थान है यानी "खला:" है।

अल्लाह तआला ने कुरआन पाक में फरमाया है:

"इंसान एक नकारात्मक वस्तु था, हमने उसमें अपनी रूह डाली, फिर वह बोलने, सुनने, समझने और महसूस करने वाला इंसान बन गया।"

रूह की परिभाषा यह है कि वह अम्र-ए-रब है। अम्र का संक्षिप्त अर्थ यह है कि जब अल्लाह तआला किसी चीज़ का इरादा करते हैं, तो वह कहते हैं "हो", और वह हो जाती है; यानी इंसान रूह है और रूह अम्र-ए-रब है।

अल्लाह तआला के इस फरमान से अनजान होना वहम और शक को बढ़ाता है, जिसके परिणामस्वरूप इमांन और यकीन टूट जाते हैं।

कुरआन पाक ने क्रौम को एक व्यक्ति के रूप में देखा है, और वही प्रक्रिया जो व्यक्ति के साथ होती है, वही क्रौम के साथ भी घटित होती है। अगर क्रौम में यकीन की तुलना में शक अधिक हो जाता है, तो यह प्रक्रिया दो दिशाएँ अपनाती है। जब यह दिशा आरोहण की ओर होती है, तो आकाशीय

आपदाएँ आने की संभावना होती है, और जब यह अवरोहण की ओर होती है, तो पृथ्वी पर आपदाएँ आती हैं।

जब आकाशीय आपदाएँ नाज़िल होती हैं, तो ये बिखर कर पूरी क्रौम के मस्तिष्क और नसों को प्रभावित करती हैं। इनसे बचने के लिए कोई उपाय यह नहीं है कि क्रौम के यकीन की राह एक हो, अलग-अलग न हो। यही पैग़म्बरों का सिखाया हुआ पाठ है। जब क्रौम विभिन्न समूहों में बंट जाती है और समूहों का यकीन विभिन्न होता है, तो शक पृथ्वी की सतह पर फैल जाता है, जिससे पृथ्वी की आपदाएँ सक्रिय हो जाती हैं और फैल जाती हैं। इस प्रकार बाढ़, भूकंप, महामारी इत्यादि का प्रकट होना होता है, और कभी-कभी गृह युद्ध भी होता है, जिससे क्रौम और व्यक्तियों का तंत्रिका तंत्र नष्ट हो जाता है, जो विभिन्न प्रकार की बीमारियों के फैलने का कारण बनता है।

कार्य और कर्ता (आमिल) व्यक्तित्व

कर्ता व्यक्तित्व किसी कार्य की पुनरावृत्ति करके अपने मस्तिष्क को निरंतर सक्रिय रखते हैं, यहाँ तक कि वे अपने इरादे पर पूर्ण नियंत्रण पा लेते हैं। अभ्यास के माध्यम से उनकी दक्षता जितनी बढ़ती है, उतनी ही उन्हें इच्छाशक्ति द्वारा कार्य करने में आसानी होती है। इस प्रकार के व्यक्ति स्वाभाविक रूप से भी उत्पन्न होते हैं। उनकी प्रवृत्ति स्वयं ही आध्यात्मिकता की ओर आकर्षित होती है, और वे बचपन से बिना समझे-बुझे इन विधियों का बार-बार उपयोग करते हैं। प्रारंभ में उन्हें यह ज्ञान नहीं होता कि उनके भीतर यह स्वाभाविक प्रवृत्ति विद्यमान है, किंतु निरंतर इस शक्ति का उपयोग करते हुए उन्हें सफलता मिलने लगती है। धीरे-धीरे उन्हें यह रहस्य

समझ में आता है कि विचार और इरादा से कार्य किया जा सकता है। जब वे इसे लागू करते हैं और इसे बार-बार दोहराते हैं, और परिणाम उनकी इच्छानुसार उत्पन्न होते हैं, तो वे स्वयं को कर्ता समझने लगते हैं। लोग भी उन्हें कर्ता के रूप में पहचानने लगते हैं।

अनुमति और तावीज़ की ज़कात

हर कर्ता व्यक्तित्व स्वाभाविक रूप से इस विश्वास में होता है कि जब वह किसी को यह शक्ति प्रदान करेगा, तो वह भी उसकी तरह कर्ता बन जाएगा। प्रायः यह देखा गया है कि जब किसी कर्ता ने किसी को अपना कार्य प्रदान किया है, तो वह व्यक्ति भी वही प्रवृत्तियाँ और विशेषताएँ विकसित कर लेता है जो कर्ता में होती हैं। एक प्रवृत्ति का दूसरी प्रवृत्ति में हस्तांतरण मनुष्य का मानसिक गुण है। वास्तविक कर्ता अत्यंत विरल होते हैं, लेकिन दी गई शक्ति से कर्ता बने हुए व्यक्ति प्रचुर संख्या में होते हैं। जो व्यक्ति शक्ति प्राप्त करता है, उसका विश्वास यह पक्का हो जाता है कि यदि वह ऐसा करेगा तो ऐसा ही परिणाम प्राप्त होगा। जैसा कि हमने पहले बताया है, सफलता के स्तर सीधे तौर पर विश्वास की शक्ति पर निर्भर होते हैं।

इस किताब से लाभ उठाने के लिए चिकित्सक चाहे स्वयं रोगी हो या किसी और का इलाज कर रहा हो, वह 11-11 बार दरूद शरीफ पढ़े और 101 बार "بِسْمِ اللَّهِ الْوَاسِعِ جَلَّ جَلَالُهُ" पढ़कर हाथों पर फूंक मारे और तीन बार हाथों को चेहरे पर फेरें। अब इस किताब के सभी औपचारिक क्रियाओं की अनुमति मेरी तरफ से है।

यदि तावीज़ स्वयं उपयोग करने के लिए हो या किसी अन्य को लिखकर दी जाए, तो तावीज़ की ज़कात के रूप में दो रुपए दान करें या रोगी को यह निर्देश दें कि वह तावीज़ की ज़कात के रूप में दो रुपए दान करे।

भूतिया व्यक्ति का उपचार

आसिब एक ऐसा मानसिक विकार है जो मस्तिष्क से जुड़ा होता है। इस समस्या की प्रमुख वजह यह होती है कि शरीर के रक्त में मिठास की तुलना में नमक की मात्रा बढ़ जाती है। जब यह रक्त शरीर के विभिन्न हिस्सों से होकर मस्तिष्क के कोशिकाओं में पहुंचता है, तो वह कोशिकाएं, जो व्यक्ति के चेतन और संवेदनशील अनुभवों को नियंत्रित करती हैं, प्रभावित हो जाती हैं। इसके परिणामस्वरूप, रोगी को कंधों पर भारीपन का अहसास होने लगता है, और उसकी आँखों के सामने ऐसी छवियाँ या रूप दिखाई देने लगते हैं, जिनका न तो वह समझ सकता है, और न ही उनका आपस में कोई संबंध स्थापित कर सकता है।

इस प्रकार के अनुभवों में व्यक्ति कभी किसी पुरुष या महिला की आकृति देखता है, और चूंकि यह अनुभव उसके लिए सामान्य नहीं होता, वह डर जाता है और ऐसी क्रियाएँ करने लगता है जो उसकी सामान्य चेतना के दायरे से बाहर होती हैं। कभी-कभी यह प्रभाव इतना गहरा हो जाता है कि व्यक्ति का मानसिक चेतनता में ठहराव आ जाता है और उसके संवेदनशील अनुभव अनजानी प्रेरणाओं के अधीन हो जाते हैं। ऐसा भी देखा जाता है कि भटकती हुई आत्माएँ, जिनकी प्रकृति नष्ट करने वाली होती है, मरे हुए व्यक्तियों के बाद उन लोगों की खोज में रहती हैं जिनका मानसिक स्वास्थ्य कमजोर होता है। जब ऐसी आत्माएँ अपनी कार्यवाही के लिए इस प्रकार के व्यक्तियों को

ढूँढ लेती हैं, तो वे उनके सामने प्रकट होती हैं और उनके मानसिक स्थिति को प्रभावित करती हैं।

इसका इलाज यह है कि एक कागज़ पर विशेष मंत्र या आयतें लिखी जाएं।

يَا مَهْلَائِيلَ
يَا ثَمْنَائِيلَ
يَا مِيكَائِيلَ
يَا جِبْرَائِيلَ

लिखकर कागज को मोड़कर बत्ती निर्मित करें। इस मोड़े हुए कागज को रूई में लपेट लें। रूई और कागज से निर्मित बत्ती को घी अथवा जैतून के तेल में ऐसी स्थिति में प्रज्वलित करें, जहाँ से धुआँ रोगी तक पहुँच सके। यह प्रक्रिया रात्रि समय में सोते हुए करनी चाहिए। प्रातः सूर्य उगने से पूर्व क़ल

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ

सूरह का उच्चारण करके एक प्याली जल पर उसका दम करें, फिर उसे नहार मुँह रोगी को पिलाएँ। दो सप्ताह तक नमक का सेवन पूर्णतया निषेध रखें। दो सप्ताह के पश्चात एक विस्तृत समयावधि तक नमक का सेवन न्यूनतम मात्रा में और अत्यन्त अल्प रूप में कराएँ। प्रत्येक दिन तीन बार शुद्ध शहद का सेवन भी अत्यन्त आवश्यक है।

आपदाओं और विपदाओं से सुरक्षित रहने की विधि

जब कोई समुदाय अल्लाह तआला द्वारा निर्धारित प्राकृतिक नियमों से भटकता है और जानबूझकर अच्छाई और बुराई का ज्ञान रखते हुए उसके विरुद्ध कार्य करता है, तो उसके भीतर विश्वास की शक्तियाँ धीरे-धीरे क्षीण होने लगती हैं। जैसे-जैसे विश्वास में दुर्बलता आती है, उसके धार्मिक आस्थाओं में दोष उत्पन्न होते हैं और इस दोष के परिणामस्वरूप वह समुदाय अंधविश्वासों का शिकार हो जाता है। अंधविश्वासों का प्रभुत्व मनुष्य के भीतर शंका और अनिश्चितता को जन्म देता है, जिससे उसमें लालच और तृष्णाएँ इस हद तक बढ़ जाती हैं कि जीवन का वास्तविक आधार अल्लाह तआला के स्थान पर भौतिक संसाधनों पर निर्भर हो जाता है। यही वह अवस्था है, जहाँ से समुदायों का पतन प्रारंभ होता है, और चूँकि प्राकृतिक व्यवस्था ऐसी जातियों को सहन नहीं करती, अतः उन पर पृथ्वी और आकाश से विभिन्न आपदाएँ प्रकट होती हैं।

इरादा और क्रिया के साथ संदेह को समाप्त करने की कोशिश करनी चाहिए और पृथ्वी और आकाशी आपदाओं से सुरक्षित रहने के लिए 9 इंच चौड़े और 12 इंच लंबे सफेद आर्ट पेपर पर काले चमकदार स्याही से बहुत सुंदर लिखकर या लिखवा कर यह चित्र अपने घर में लटकाएं।

يَا حَفِيْظُ يَا حَفِيْظُ يَا حَفِيْظُ
 يَا بَدِيْعُ يَا بَدِيْعُ يَا بَدِيْعُ
 يَا بَدِيْعُ الْعَجَائِبِ بِالْحَيْرِ يَا بَدِيْعُ

अगर खुदानखास्ता कोई महामारी फैल गई हो तो यही चित्र सफेद चीनी की तीन प्लेटों पर ज़ाफ़रान और अर्क-ए-गुलाब से लिखें और सुबह, शाम और रात को पानी से धोकर पूरे घरवाले पियें। पिने के लिए पानी उबालकर इस्तेमाल किया जाए।

नोट: अगर ज़ाफ़रान उपलब्ध न हो या खरीदने की क्षमता न हो तो खाने का पीला रंग इस्तेमाल करें।

आंखों के रोग

यह रोग पाचन प्रणाली की खराबी या बाहरी कारणों जैसे गर्मी, सर्दी, चोट, धूल, धुंआ और लगातार जुकाम के कारण होते हैं।

ग्लूकोमा और मोतियाबिंद

हर नमाज़ के बाद ग्यारह बार "الْحَيُّ الْقَيُّومُ الْحَقُّ النَّوْرُ" - Al-Hayy al-Qayyūm al-Haqq an-Nūr" पढ़कर आठों अंगुलियों के शीर्षों पर दम करें और आंखों पर फेरें।

रात की अंधता

रात की अंधता (रतोन्दा) उस रोग को कहते हैं जिसमें अंधेरे में या रात्रि को वस्तुएं या तो नहीं दिखतीं या धुंधली दिखती हैं। ऐसी अवस्था में

يَا عَمَّا نَوَيْلُ يَا عَمَّا نَوَيْلُ

Yā ‘Amā Nawīl Yā ‘Amā Nawīl

(यह एक बार हुआ) ग्यारह सौ बार पढ़कर एक पाउं शुद्ध की हुई कलोजी पर दम करें और प्रातः और संध्या समय एक चुटकी ताजे जल के साथ सेवन करें।

धुंधलापन / दृष्टि की कमजोरी

पाठ करें

"مُعِينُ السَّلَامِ مِائَةُ الْجَيْنِ الصَّبَابِ الْغِلَامِ الْمَرِي"

Mu‘īn as-Salām Miā‘at al-Ĥin aṣ-Ṣāb al-Ghilām al-Marī

सूर्यास्त से पूर्व तीन बार पढ़कर एक बड़े पात्र में जल पर दम करें। इस पात्र से तीन घूंट जल पृथक करके निःशब्द सेवन करें और शेष जल को दाएं हाथ की चुटकी में लेकर उसमें अपनी आंखों को खोलें और बंद करें। जल जब उष्ण हो जाए, तब उसे किसी गमले या क्यारी में डाल दें। फिर दूसरा चुटकी भरकर पहले बाएं आंख को धोएं और फिर दाएं आंख को धोएं। यह प्रक्रिया 90 दिन तक करनी है। अल्लाह तआला के कृपा से दृष्टि की कमजोरी दूर हो जाती है।

आंख का नर्सिंगहा

इस रोग में आंख के ऊपर एक झिल्ली आ जाती है और दृष्टि उस झिल्ली में दब जाती है। कारण एक विशेष प्रकार की गैस होती है। पहले यह गैस

मस्तिष्क पर प्रभाव डालती है और फिर आंख के ऊपर असर करती है। वास्तव में यह गैस ही झिल्ली बनकर आंख के ऊपर पर्दा बना जाती है।

स्टेनलेस स्टील का एक पात्र और एक नई छुरी लें। पात्र में डिस्टिल्ड पानी या घर में उबाला हुआ ठंडा पानी भरें, हाथ धोकर और कुल्ली करके तीन बार

"الْحَيُّ الْقَيُّومُ وَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ يَا رَحِيمُ يَا اللَّهُ يَا مُرِيدُ يَا رَحِيمُ يَا اللَّهُ يَا مُرِيدُ يَا رَحِيمُ يَا اللَّهُ يَا مُرِيدُ"

Al-Hayy al-Qayyūm wa Lā Ilāha Illā Allāh, Yā Raḥīm Yā Allāh, Yā Murīd
Yā Raḥīm Yā Allāh, Yā Murīd Yā Raḥīm Yā Allāh, Yā Murīd.

पढ़कर एक फूंक पानी पर मारें और दूसरी फूंक छुरी पर। अब छुरी से पानी को काटें यानी एक मिनट तक पानी में क्रॉस (X) बनाते रहें। फिर से तीन बार पढ़कर पानी और छुरी पर दम करें और पानी को एक मिनट तक काटें। इसी तरह तीसरी बार भी यही क्रिया दोहराएं। यह पानी दो-दो औंस हर चार घंटे बाद पिलाएं। इस प्रकार से सूरज उगने से लेकर रात्री की नमाज तक यह पानी पूरा हो जाना चाहिए। इलाज में समय लगेगा लेकिन अल्लाह तआला के कृपा से सफलता निश्चित है।

आंख का नासूर

आंख के कोने में एक फुंसी जैसी संरचना उत्पन्न होती है, जिसे आंख का नासूर कहा जाता है। चना की एक दाल लें (यहां दाल से अभिप्रेत चने के आधे भाग से है) और एक पत्थर लें, जो सामान्यतः नदियों के किनारे पाया जाता है। यह पत्थर हल्के सफेद या भूरे रंग का होता है और कभी-कभी

इसमें विभिन्न आकार और चित्र होते हैं, साथ ही यह चिकना भी होता है। पत्थर का आकार निश्चित नहीं होता। इस पत्थर पर पानी डालकर

"اللَّهُ نُورُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ"

Allāhu Nūru as-Samāwāti wa al-Ard.

का उच्चारण करके उसमें दम करें, फिर चने की दाल को पत्थर पर घिसें। घिसने से एक प्रकार का लेप तैयार हो जाएगा। इस लेप को जस्त की सलाई से प्रभावित आंख में, प्रातः और सायं कुछ दिनों तक लगाएं।

आँखों का तिरछापन (स्किवंट आँखें)

जब रोगी पूरी तरह से सीधा देख रहा हो, तब उसकी आंखें बंद कर दें और जिस आंख में भेंगापन है, उस पर अंधेरे में हल्की पट्टी बांध दें। पट्टी बांधते समय यह मानसिक रूप से कल्पना करें कि आप और रोगी आकाश के नीचे हैं। यह पट्टी इक्कीस (21) दिन तक निरंतर बांधी जाए। यदि पट्टी गंदी हो जाए, तो उसे अंधेरे में बदल दें। पट्टी बांधते समय यह सुनिश्चित करें कि दृष्टि सीधी हो, अर्थात् आंख की पुतली मध्य में स्थित हो। इक्कीस (21) दिन के इस उपचार से आंख का भेंगापन पूर्ण रूप से समाप्त हो जाता है।

आँखों के सामने खून तैरता हुआ नजर आना

यह रोग मस्तिष्क की नसों में पानी भर जाने से उत्पन्न होता है। इसके लिए दवा और दुआ निम्नलिखित है।

दिखनी मिर्च एक छटांक और चीनी एक छटांक। दोनों को साफ हथौड़े में बारीक चूर्ण कर लिया जाए। छह (6) माशे रोजाना सोते समय ताजे पानी के साथ कम से कम बीस दिनों तक सेवन करें और साथ-साथ

"अल-रज़ा'अत आमामान नवील"

الرَّضَاعَتْ عَمَّا نُؤِيلَ

Ar-Raḍā'atu 'Ammā Nuwīla

सफेद चीनी की तीन प्लेटों पर लिखकर सुबह, शाम और रात को एक-एक प्लेट पानी से धोकर पिएं। प्लेट पर लिखने का तरीका यह है:

पाक-साफ सफेद चीनी या बलूर की तीन प्लेटें सामने रखें, ग्यारह (11) बार "या हफीज़ ۞ -Yā Ḥafīz" पढ़कर तीनों प्लेटों पर दम करें। फिर ग्यारह (11) बार "या शाफी ۞ -Yā Shāfi" पढ़कर तीनों प्लेटों पर दम करें, तीसरी बार "या काफ़ीउ" पढ़कर प्लेटों पर दम करें। और केसर को गुलाब जल में घोलकर या ज़र्दा का रंग गुलाब जल में मिलाकर इस स्याही से प्लेटों के ऊपर उपर्युक्त हदीस लिखी जाए।

अदृश्य से सहित प्राप्त करना

यदि आर्थिक स्थितियाँ इतनी खराब हो जाएं कि सुधार की कोई संभावना न दिखाई दे, तो केवल उन्हीं स्थितियों में यह उपाय पढ़ने की अनुमति है:

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا إِلِيلُ يَا إِلِيلِيَاةُ يَا اللَّهُ

يَا فَتَّاحُ يَا فَتَّاحُ يَا فَتَّاحُ

يَا جَبْرَائِيلُ يَا مِيكَائِيلُ يَا إِسْمَائِيلُ يَا مَهْلَائِيلُ

आधीरात के बाद, वजू करके मसले पर बैठकर तीन सौ बार पढ़ें और स्थितियों के सुधार की दुआ करके बिना किसी बातचीत के सो जाएं। अधिकतम इक्कीस दिनों में अल्लाह तआला की तरफ से अल-इमदाद अल-गैबी प्राप्त हो जाएगी, इसका तरीका कुछ भी हो, जो अल्लाह तआला पसंद करें।

गुप्त पुष्टि (उस्तेखारा)

कोई कार्य करने से पूर्व उस्तेखारा करना सुन्नत है। उस्तेखारा वास्तव में अल्लाह तआला से परामर्श करना है।

21 बार। صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَى حَبِيبِهِ دَرُودِ-ए-खज़री اَفْتَحْ اِفْتَحْ يَا بَدِيعَ الْعَجَائِبِ بِالْخَيْرِ يَا بَدِيعَ مُحَمَّدٍ وَ سَلَّمَ

Iftah Iftah Yā Badī‘ al-‘Ajā’ib bil-Khayr Yā Badī‘
Ṣalla Allāhu Ta‘ālā ‘alā Ḥabībīhi Muḥammad wa Sallama.

पहले और अंत में एक-एक बार पढ़ें। इसके पश्चात दाहिनी करवट पर लेटकर चेहरे के नीचे दाहिने हाथ की हथेली रखकर सो जाएं। सोते समय जिस बात को जानना हो, उसे मन में दोहराएं। अधिकतम तीन दिनों में जो कुछ भी जाना जाए, वह स्वप्न या जागृत अवस्था में प्रकट हो जाएगा।

परीक्षा में सफलता के लिए

ईशा की नमाज़ के बाद, प्रारंभ और समाप्ति में ग्यारह-ग्यारह बार दरूद शरीफ के साथ तीन सौ बार

أَلْمَلِكُ الْقُدُّوسُ أَلْمَلِكُ الْقُدُّوسُ

Al-Malik al-Quddūs, Al-Malik al-Quddūs

पढ़कर, विनम्रता और श्रद्धा के साथ अल्लाह तआला से प्रार्थना करें। यह क्रिया इम्तिहान के परिणाम आने तक जारी रखें।

एलर्जी (ALLERGY)

सात रंग के रेशमी कपड़ों के छोटे-छोटे टुकड़े किसी स्थान पर फैला कर रखें। एलर्जी से पीड़ित व्यक्ति इन रंगीन टुकड़ों में से कोई एक टुकड़ा उठा ले। उस टुकड़े पर काले धागे से कढ़ाई करके लिखें और रोगी के गले में डाल दें। यदि गले में पहनने या बाजू पर बांधने में कोई बाधा हो, तो इस तावीज़ को तकिए के अंदर रखें। किंतु यह ध्यान देना आवश्यक है कि यह तकिया कोई अन्य व्यक्ति प्रयोग न करे।

يَا مَهْلَائِيلَ
يَا مُمْنَائِيلَ
يَا مِيكَائِيلَ
يَا جِبْرَائِيلَ

एलर्जी के होने का कोई निश्चित कारण निर्धारित नहीं किया जा सकता। कोई व्यक्ति वायु से, किसी औषधि से, सुगंध से, या किसी तीव्र औषधि की प्रतिक्रिया से एलर्जी से ग्रसित हो सकता है। कारण चाहे जो भी हो, सभी के लिए यही उपचार है।

हृदय कंपन

यदि हृदय कंपन हृदय की दुर्बलता, सामान्य शारीरिक कमजोरी, उच्च रक्तचाप, निरंतर मानसिक आघात, या तीव्र औषधियों के प्रभाव के कारण हो, तो सभी का उपचार एक ही है, किंतु विधि भिन्न होगी।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
 یٰۤاَحِیُّ قَبْلَ کُلِّ شَیْءٍ یٰۤاَحِیُّ بَعْدَ کُلِّ شَیْءٍ

तीन बार पढ़कर जल पर फूंक मारें और रोगी को पिलाएं। यदि मानसिक आघात के कारण हृदय कंपन स्थायी हो गया हो, तो इस प्रक्रिया को कागज पर लिखकर शहद में डाल दें और रोगी को दिन में कम से कम तीन बार सेवन कराएं। यदि उच्च रक्तचाप (हाई ब्लड प्रेशर) के कारण हो, तो प्रातः काल खाली पेट चीनी के शरबत पर फूंक मारकर सेवन करें। यदि निम्न रक्तचाप (लो ब्लड प्रेशर) के कारण हो, तो नमक पर फूंक मारकर एक शीशी में सुरक्षित कर लें और भोजन के समय इस नमक को छिड़ककर सेवन करें।

यदि हृदय कंपन का कारण स्पष्ट न हो, तो एक बड़े कागज पर मोटे अक्षरों में सुंदर लेखन में "الله" लिखें और इस कागज को गते पर चिपका दें। रात्रि

में सोने से पूर्व इस गते को ऐसी जगह रखें, जहां कोई अन्य व्यक्ति न हो। फिर "الله" शब्द को गहरी दृष्टि से देखें और फिर नेत्र बंद कर यह कल्पना करें कि अल्लाह का दिव्य प्रकाश वर्षा की भांति हम पर अवतरित हो रहा है। लगभग दस मिनट बाद नेत्र खोलें और बिना कोई वार्तालाप किए शयन करें।

इस साधना को कुछ दिनों तक करने से, अल्लाह के अनुग्रह से, हृदय कंपन की समस्या स्थायी रूप से समाप्त हो जाएगी।

अग्जीमा (ECZEMA)

एक बड़े और मजबूत कागज पर मोटे अक्षरों में

فِي نُوحٍ رَاةٍ زَاهَا نِيَّاهُ

Fī Nūḥin Rāḥa Zahā Niyyāh.

लिखें और जिस अंग पर अग्जीमा हो, उस स्थान पर इस कागज को रगड़ें। जब कागज जर्जर हो जाए, तो उसे जला दें।

कुछ दिनों तक नमक, लाल मिर्च, गरम मसाले और किसी भी प्रकार के मांस का सेवन न करें। मांस में अंडा और मछली भी शामिल हैं।

आंतों के रोग

आंतों में घाव

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

Bismillāhir Raḥmānir Raḥīm.

السَّلَامُ فِي مَرْجَعِ الْبَحْرَيْنِ يَا اللَّهُ

As-Salāmu fī Marja‘i al-Baḥrayn, Yā Allāh.

तीन प्लेटों पर लिखकर रोज़ सुबह, शाम और रात को पानी से धोकर चालीस दिनों तक पिएँ। भोजन का निर्धारण किसी हकीम या डॉक्टर की सलाह से करें।

आंतों की बीमारी

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

Bismillāhir Raḥmānir Raḥīm.

الرَّتْلُكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ الرَّحِيمِ الرَّحِيمِ

Alif-Lām-Rā, Tilka āyātu al-Kitābi al-Mubīn, Ar-Raḥīm, Ar-Raḥīm.

सूर्योदय से पहले ग्यारह बार पढ़कर एक प्याली पानी पर दम करें और निहार मुख नब्बे (90) दिनों तक सेवन करें।

आंतों में सूखापन

تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ
مَا أَغْنَىٰ عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ
سَيَصْلَىٰ نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ
وَأَمْرَأَتُهُ

Tabbat yadā Abī Lahabin watabb
Mā aghnā ‘anhu māluhu wamā kasab
Sayaslā nāran dhāt lahab
Wa-mra'atuhu.

इशा की नमाज़ के बाद 101 बार पढ़कर पानी पर दम करें। 24 घंटे में पीने के लिए केवल यही पानी उपयोग करें। इसका अर्थ यह है कि इतनी मात्रा में पानी पर दम किया जाए जो पूरे दिन और रात की आवश्यकता के लिए पर्याप्त हो। यदि 24 घंटे के बाद पानी बच जाए, तो उसे किसी पौधे या पेड़ की जड़ में डाल दें और अगले 24 घंटे के लिए नया पानी तैयार करें।

उपचार की अवधि 21 दिन है। इस दौरान कोई अन्य पानी न पिएँ।

आंत उतरना (हर्निया)

रात को सोने से पहले 21 बार

وَرَفَعَ دَرَجَاتِهِمْ

Wa-rafa'a darajatihim

पढ़कर फूंक मारें। उपचार की अवधि 90 दिन है। इस दौरान लंगोट पहनने का प्रबंध करें।

(इस्तसक्रा)

जलंधर – पेट में पानी भर जाना

देखने में आया है कि इस रोग का इलाज नहीं होता, लेकिन ऐलोपैथी में सूई (सिरिंज) के द्वारा पेट से पानी निकालना एक उपचार है। लेकिन कुछ समय बाद पेट में पानी फिर भर जाता है और फिर निकाल दिया जाता है। यह कोई स्थायी इलाज नहीं है। इस फ़कीर ने इस्तसक्रा के कई रोगियों का इलाज किया है। अल्लाह के फ़ज़ल और करम से रोगी को पूरी तरह और स्थायी रूप से स्वास्थ्य प्राप्त हो जाता है।

एक कागज़ पर यह लिखें:

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
Bismillāhir Raḥmānir Raḥīm.
 وَإِثْمُهُمَا أَكْبَرُ مِنْ نَفْعِهِمَا

Wa-ithmuhumā akbaru min nafa'ihimā.

फिर इसे जलाकर रात को सोते समय या दिन में एक बार उसका धुआँ लें।

रोगी ज़मीन पर सीधा लेट जाए, आंखें बंद कर ले और दोनों हाथ सिर पर रखे। तीन बार उपरोक्त अरबी आयत पढ़े और यह कल्पना करे कि पेट का पानी रोशनी में बदलकर पैरों के ज़रिए ज़मीन में समाहित (अर्थ) हो रहा है। यह उपचार तब तक जारी रखना चाहिए जब तक रोग से पूरी तरह मुक्ति न मिल जाए।

तंत्रिका की कमजोरी

नसों की कमजोरी के कई कारण हो सकते हैं, जैसे कि – लगातार उलझन, उब, मानसिक तनाव, अधिक मानसिक थकान, नींद की कमी, पाचन तंत्र का लगातार खराब रहना, वातावरण की अशुद्धि, भय और आतंक, आध्यात्मिक मूल्यों से दूर होना, संतोष का अभाव, संदेह, वहम और असुरक्षा की भावना आदि।

सबसे पहले यह ज़रूरी है कि मनुष्य अपने भीतर संतोष (क़नाअत) पैदा करे और अपने मामलों को अल्लाह के हवाले करने की आदत डाले।

अल्लाह पर भरोसा करने का अर्थ यह नहीं कि आदमी निष्क्रिय होकर बैठ जाए। सही विचारधारा (तरज़-ए-फ़िक्र) यह है कि मनुष्य अपने कर्तव्यों को पूरा करने के बाद परिणाम को अल्लाह पर छोड़ दे।

उपचार:

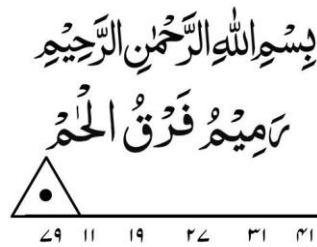
केवल एक घूंट पानी पर एक बार यह पढ़ें:

الرَّضَاعَتْ عَمَّا نُوِيْلُ

Ar-Raḍā'atu 'Amā Nuwīl.

फिर इस पानी पर दम करके सुबह ख़ाली पेट पी लिया जाए।

अंगों का सुन्न पड़ जाना



खाने के पीले रंग को पानी में घोलकर स्याही बना लें। इस स्याही से **उल्लेखित तावीज़** प्लेट पर लिखकर सुबह, तीसरे पहर और रात को पानी से धोकर पिलाएं। इसी तावीज़ को **उसी रंग से चिकने और मोटे एक बालिशत कागज़** पर लिखकर प्रभावित अंग पर दिन में तीन बार घड़ी की सुइयों की दिशा में मलें। **परहेज़**: भोजन में ठंडी और वायुवर्धक चीज़ों तथा नमक से परहेज़ करना ज़रूरी है।

बच्चों की अवज्ञा

यह बात बहुत ध्यान देने योग्य है कि बच्चे मानसिक रूप से जो कुछ भी स्वीकार करते हैं, उसका आधा हिस्सा माता-पिता की सोच और घर के वातावरण से बनता है, और आधा हिस्सा बाहरी वातावरण से। यदि घर का वातावरण शांत न हो और माता-पिता आपस में लड़ते-झगड़ते रहें, तो बच्चे भी माता-पिता की आदतें अपना लेते हैं। फिर यह आदतें उनके अंदर मजबूत हो जाती हैं। पहले भाई-बहन आपस में लड़ते रहते हैं, और फिर माता-पिता से भी लड़ना शुरू कर देते हैं। क्योंकि माता-पिता के बीच मानसिक समन्वय नहीं होता, इसलिए वे बच्चों की आदतों पर ध्यान नहीं देते, जिसका परिणाम यह होता है कि बच्चे अभद्र और अवज्ञाकारी हो जाते हैं। ऐसे माता-पिता

जिनके बीच मानसिक समन्वय होता है या जो अपने समस्याओं की कड़वाहट को बच्चों के सामने नहीं लाते, उनकी संतान माता-पिता की सेवा करती है। अधिक लाड़ प्यार या बिना कारण सख्ती भी बच्चों को विद्रोही बना देती है। यह समस्या बहुत ही कष्टकारी है, अल्लाह तआला माता-पिता को इससे सुरक्षित रखे।

व्यवहार में परिवर्तन के साथ अवज्ञाकारी संतान के लिए यदि यह कार्य किया जाए, तो इसके आशीर्वाद से संतान आज्ञाकारी हो जाती है।

रात के समय जब बच्चा या बड़ा गहरी नींद में सो जाए, सिरहाने खड़े होकर एक बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

Bismillāhir Raḥmānir Raḥīm

بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَّجِیْدٌ فِی لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ

Bal huwa Qur'anun Majīdun fī Lawḥin Maḥfūz

माता या पिता इतनी आवाज़ में पढ़ें कि सोने वाले की नींद खराब न हो। कार्य की अवधि ग्यारह दिन है, और अधिक से अधिक इक्कीस (२१) दिन है।

हीन भावना

हीन भावना इच्छाशक्ति की कमजोरी से उत्पन्न होती है। जब यह समझा जाता है कि हम किसी व्यक्ति के सामने नहीं जा सकते, बात नहीं कर सकते, हम अन्य लोगों से हीन हैं या अन्य लोग हमसे हीन हैं—ये सभी बातें कमजोर इच्छाशक्ति को दर्शाती हैं। विचारधारा सही हो या गलत, दोनों का संबंध मस्तिष्क के उन कोशिकाओं से है जो जीवन में कार्यरत रहने वाली भावनाओं को उत्पन्न करती हैं। और भावनाएँ मनुष्य की इच्छाशक्ति के अधीन होती हैं। इसीलिए जब किसी व्यक्ति के भीतर भावनाएँ उसकी इच्छा के अधीन नहीं रहतीं, तो उसके जीवन में एक शून्यता उत्पन्न हो जाती है। यही शून्यता, दबाव के रूप में, हीन भावना के रूप में प्रकट होती है।

अत्यंत सरल और सहज उपाय यह है कि मनुष्य हर समय वुजू (अभिषेक) की स्थिति में रहे। वुजू में इस बात की सावधानी आवश्यक है कि प्राकृतिक शारीरिक प्रक्रियाओं, जैसे मल-मूत्र त्याग या वायु-त्याग, को न रोका जाए, क्योंकि इससे भी मस्तिष्क पर दबाव पड़ता है। आवश्यकता पड़ने पर पुनः वुजू कर लेना चाहिए।

उदासी

यह बात हर व्यक्ति जानता है कि कोई भी व्यक्ति न तो सदा प्रसन्न रहता है और न ही सदा दुखी। लेकिन यह भी देखा गया है कि लगातार असफलताएँ मनुष्य को तोड़कर रख देती हैं और उस पर निराशा हावी हो जाती है। ऐसी



स्थिति से मस्तिष्क को मुक्त करने के लिए, नीचे दिया गया यंत्र केसर और गुलाब जल से लिखकर रोगी के गले में पहनाया जाए या बाजू पर बाँध दिया जाए, तो उदासी समाप्त हो जाती है।

कागज़ पर यह यंत्र लिखने से पहले दो बार और तावीज़ लिखने के बाद एक बार

بِسْمِ اللّٰهِ الْوَاسِعِ جَلَّ جَلَالُهُ يَا بَدِيعَ الْعَجَائِبِ بِالْخَيْرِ يَا بَدِيعَ

Bismillāhi al-Wāsi'u Jalā Jalā Lahu, Yā Badī'u al-'Ajā'ibi bil-Khayr, Yā Badī'u.

पढ़कर फूँक मारनी चाहिए और फूँक मारते समय यह धारणा रखनी चाहिए कि तावीज़ लिखने वाला और रोगी दोनों अर्श के नीचे खड़े हैं।

बुखार

सामान्य बुखार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

Bismillāhir Raḥmānir Raḥīm

هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ

Huwa Allāhu al-Khāliq al-Bāri' al-Muṣawwiru Lahu al-Asmā'u al-Ḥusnā.

कागज़ पर लिखकर बिना मोमजामा किए सफेद कपड़े की धजी में बाँधकर गले में डाल दें। बुखार उतरने पर तावीज़ और कपड़ा दोनों जला दें।

बारी का बुखार

قُلْنَا يَا نَارُ كُونِي بَرْدًا وَسَلَامًا عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ

Qulnā Yā Nār Kūnī Bardan wa Salāman ‘alā Ibrāhīm.

बेर की लकड़ी या किसी मोमी कागज़ पर लिखकर सफेद धजी में बाँधकर गले में डाल दें। बुखार चाहे एक दिन का हो, दो दिन का हो या तीन दिन का, जब उससे मुक्ति मिल जाए, गले से निकालकर जला दें।

टाइफ़ॉइड, मोतीझरा, मियादी बुखार, खसरा

يَا حَفِيظُ يَا حَفِيظُ يَا حَفِيظُ

يَا بَدِيْعُ يَا بَدِيْعُ يَا بَدِيْعُ

يَا بَدِيْعُ الْعَجَائِبِ بِالْحَيْرِ يَا بَدِيْعُ

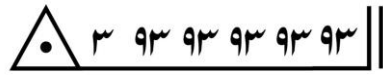
जर्दे के रंग को पानी में घोलकर स्याही बना लें और इस यंत्र को प्लेट पर लिखकर उपयोग करें। यह पानी हर चार घंटे बाद बड़ों को एक टेबलस्पून और बच्चों को एक टीस्पून पिलाएँ। अगले दिन पुनः नई प्लेट लिखकर इसी प्रकार अमल करें। तीसरे दिन भी यही प्रक्रिया दोहराएँ। तीन दिन तक दवा और आहार वर्जित है।

बच्चों के रोग और उनका उपचार

उम्मुस्सबियान (सूखा रोग)

बच्चों का नींद में डरना, अधिक रोना, चीख-चीखकर रोना, काँपना, खुद को या दूसरों को नोचना, बिना किसी कारण बार-बार बुखार होना, किसी भी प्रकार की जन्मजात बीमारी या कमजोरी, सही विकास न होना, शरीर से माँस कम हो जाना, हड्डियों का उभर आना, पानी जैसे दस्त आना, आँखों के चारों ओर काले घेरे पड़ जाना—ये सभी उम्मुस्सबियान रोग के लक्षण हैं।

इससे बच्चों को सुरक्षित रखने के लिए मोमी कागज पर यंत्र लिखकर,



मोमजामा करके आसमानी कपड़े में सिलकर गले में डाल दें। सप्ताह में एक बार, बिना कपड़े के खोल से निकाले, तावीज़ को लोबान की धूनी अवश्य दें।

पसली चलना और न्यूमोनिया

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
 یَاحْفِیْظُ یَاحْفِیْظُ یَاحْفِیْظُ
 یَاقَتَّاعُ الْمُهْمِیْمِیْنَ الْعَزِیْزُ
 یَاشَافِیْ یَاشَافِیْ یَاشَافِیْ
 الْحَىُّ الْقَیُّوْمُ

चीनी की तशतरी पर केसर एवं स्वच्छ जल से यंत्र अंकित करें, तत्पश्चात इसे दूध में मिलाकर एक या दो घूंट रोगी को तीन समय तक पान कराएँ। पूर्ण रूप से न्यूमोनिया के प्रभाव को निष्क्रिय करने हेतु यह प्रक्रिया न्यूनतम दो से तीन दिवस तक दोहरानी चाहिए।

कर्ण पीड़ा (कान का दर्द)

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ

Qul A'ūdhu birabbil-Falaq.

(सूरह अल-फलक) को तीन बार श्रद्धापूर्वक उच्चारित कर एक चम्मच जल या दुग्ध पर अभिसिंचित करें एवं रोगी को सेवन कराएँ।

काली खाँसी (कुक्कर खाँसी)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
يَا حَفِيظُ يَا حَفِيظُ يَا حَفِيظُ
قَصُّ قَصُّ قَصُّ
مَائِعَاتُ الْمَاءِ

चीनी की तशतरी पर पीत वर्ण (पीले रंग) से यंत्र अंकित करें एवं प्रातः एवं सायं, निरंतर ग्यारह दिवस तक स्वच्छ जल से प्रक्षालित कर रोगी को पान कराएँ।

शय्या-मूत्र (बिस्तर में पेशाब करना)

कुछ परिस्थितियों में बालक एक विशिष्ट आयु तक शय्या-मूत्र (बिस्तर में मूत्र त्याग) करते रहते हैं। इसका उपचार इस प्रकार किया जाए कि जब बालक गहरी निद्रा में हो, तब उसके शिरोपार्श्व (सिरहाने) की ओर संयत स्वर में, जिससे उसकी निद्रा भंग न हो, सूराह अल-बकराह की प्रारंभिक आयत

الْمَ ذَلِكَ الْكِتَابُ لَا رَيْبَ فِيهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ

**Alif-Lām-Mīm, Zālikal-kitābu lā rayba fīhi hudan lil-muttaqīn,
alladhīna yu'minūna bil-ghayb.**

तक, इक्कीस (21) दिनों तक प्रति रात्रि पाठ करें।

मृत्तिका-सेवन (मिट्टी खाना)

बहुसंख्यक स्त्रियों को मृत्तिका-सेवन (मिट्टी खाने) की प्रवृत्ति विकसित हो जाती है, एवं शिशु भी इस प्रवृत्ति को अपनाते हैं, जिससे विविध प्रकार के रोग उत्पन्न हो सकते हैं।

इसका निवारण इस प्रकार करें कि तीन बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
فَرْدَمُ مَرْوَجُ

Fardam Marwaj

निम्न पाठ दूध पर अभिसिंचित (दम) कर, बालक को पान कराएँ। जब भी बालक को दुग्ध प्रदान करें, यह प्रक्रिया दोहराएँ। ग्यारह (11) दिनों के भीतर मृत्तिका-सेवन की प्रवृत्ति समाप्त हो जाएगी। यदि माता को भी यह प्रवृत्ति हो, तो वह जल पर अभिसिंचित कर स्वयं सेवन करें।

ज़िद (हठ) का उपचार

ज़िद समाप्त करने के लिए उम्मु-स्सबियान संबंधी तावीज़ कागज़ पर लिखकर बच्चे के गले में डाल दें।

अंत्र कृमि (पेट में कीड़े)

पेट में कीड़े, चाहे वे टेपवर्म (कद्दू के बीज सदृश कृमि) हों, राउंडवर्म (कीचुएं) हों या सूक्ष्म कृमि (छोटे-छोटे कीड़े), इनसे मुक्ति के लिए स(सूरह कौसर) तीन बार पढ़कर पानी पर अभिसिंचित (दम) करें और निहार मुख रोगी को पिलाएँ। रोगी स्वयं भी यह प्रक्रिया कर सकता है। साथ ही, दिन में किसी भी समय, अंतराल के साथ, तीन बार (एक-एक बार) स सूरह कौसर पढ़कर पेट पर फूंक मारें। ग्यारह दिनों तक इस प्रक्रिया को अपनाने से पेट के किसी भी प्रकार के कीड़े पूर्णतः समाप्त हो जाते हैं।

दंत प्रक्षालन (दांत निकलना)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
الرَّتْلُكَ اَیَّاتُ الْكِتَابِ الْمُبِیْنِ

Ar-Ratīlka Āyātu Kitābi al-Mubīn

दांत निकलने के दौरान होने वाली परेशानियों से बचाने के लिए कागज़ पर तावीज़ लिखकर गले में डालें। इंशा'अल्लाह, बच्चा तकलीफों से सुरक्षित रहेगा।

नज़र लगना

जो बच्चे माशा अल्लाह स्वस्थ, हंसमुख या बुद्धिमान होते हैं, उन्हें अक्सर बड़ों की नज़र लग जाती है। यह बात चौंकाने वाली लग सकती है, लेकिन अनुभव में आया है कि माता-पिता और भाई-बहन की भी नज़र लग सकती है।

नज़र लगने से बच्चा बेचैन हो जाता है, दूध पीना छोड़ देता है, रोता है, बुखार भी हो सकता है और धीरे-धीरे चिड़चिड़ा और कमजोर होता जाता है।

नज़र उतारने के लिए **बिस्मिल्लाह** के बाद **إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ** (संपूर्ण सूराह) पढ़कर बच्चे के मुंह पर फूंक मारें, नज़र का असर समाप्त हो जाएगा।

कान से पीप आना

रात को सोते समय नई और साफ रुई के फाहे पर

الَّذِي خَلَقَ فَسَوَّى وَالَّذِي قَدَّرَ فَهَدَى

Alladhī khalaqa fasawwā wa alladhī qaddara fahadā

एक बार पढ़कर फाहा दम करें और प्रभावित कान में सोने से पहले रख दें।

सुबह नई रुई के फाहे पर दम कर के कान में रखें। 24 घंटे में दो बार यह अमल करें। जब कान से पीप आना बंद हो जाए, यह अमल रोक दें।

बधिरता या मूकता

यदि कोई बच्चा जन्मजात गूंगा या बहरा हो, अथवा किसी रोग के परिणामस्वरूप यह स्थिति उत्पन्न हो गई हो, तो इसका उपचार निम्न विधि से किया जा सकता है। जब बच्चा या वयस्क गहरी निद्रा में हो, तो उसके सिरहाने की दाईं ओर खड़े होकर **सूरह मरयम** की प्रथम आयत "**काफ़-हा-या-अइन-साद**" (كهيص). "Kaf Ha Ya Ain Sad") एक बार स्पष्ट रूप से उच्चारित करें, प्रत्येक अक्षर को पृथक-पृथक पढ़ें।

इस उपचार में अधीरता या उतावलेपन से बचें। इसे **छः माह तक निरंतर** जारी रखें। यदि बीच में कुछ समय का व्यवधान आ जाए, तो कोई आपत्ति नहीं, किन्तु प्रयास यह होना चाहिए कि यह क्रम बाधित न हो। महिलाएं भी इस अभ्यास को विशिष्ट दिनों में जारी रख सकती हैं।

स्वप्न में भयभीत होना

लगातार विचारों में व्यस्त रहने के कारण वे ऊर्जा तरंगों, जो तंत्रिका तंत्र (नर्वस सिस्टम) के संचालन में सहायक होती हैं, असंतुलित होकर क्षीण हो जाती हैं। फलस्वरूप, मस्तिष्क का वह भाग, जो चेतना (कॉन्शसनेस) और मानसिक क्रियाशीलता को नियंत्रित करता है, निर्बल पड़ने लगता है। जब यह अवस्था विकसित होती है, तो व्यक्ति को बारंबार भयावह स्वप्न दिखाई देने लगते हैं। यदि मानसिक प्रवाह को किसी एक केंद्र पर स्थिर कर दिया जाए, तो भयावह स्वप्नों की आवृत्ति को नियंत्रित किया जा सकता है। इसके लिए व्यक्ति को चलते-फिरते, बैठते-उठते, वुजू (शुद्धि) की स्थिति में या बिना वुजू के "**अल्शाअतु नज़ीफ़ा**" (الشَّأَةُ) Ash-Shātu Nazīfah) का नियमित रूप से जप (विर्द) करना चाहिए।

बच्चों का गुम होना

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

يَا اِسْرَافِيْلَ

۵	۴	۲
۱۴	۷	۱۰
۶۰	۳۶	۹

अबरक या मोटे कागज पर लिखकर उसे किसी पत्थर या शिला के नीचे इस प्रकार दबा दें कि कोई उलट-पुलट न करे। अधिकतम तीन दिनों तक प्रतीक्षा करें। जब बच्चा घर वापस आ जाए, तो उस तावीज़ को बहते पानी में प्रवाहित कर दें और **सवा पाँच रुपये** की ख़ैरात कर दें।

भूख न लगना

तीन दिनों तक "बिस्मिल्लाह शरीफ़" के साथ बारह बार "या रहीम-Ya Raheem" पढ़कर जो भी चीज़ खाने को दें, उस पर फूंक मारकर उसे खिलाएं।

स्मृति का कमजोर होना

फ़जर (प्रातःकाल) की नमाज़ के पश्चात् तीन बार रब्बि यसर वला तुस्सिर رَبِّ يَسِّرْ وَلَا تُعَسِّرْ. Rabbī yassir wa lā tu‘assir का उच्चारण करके पानी पर दम करें और दम किया हुआ पानी नहार मुँह (सुबह खाली पेट) इक्कीस (21) दिन तक सेवन कराएँ।

पढ़ाई में मन का न लगना

जब बच्चा रात्रि में गहरी नींद में हो, तो उसके सिरहाने बैठकर

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
وَلَقَدْ يَسْرُنَا الْقُرْآنَ لِذِكْرِهِمْ مِنْ مُدَّكَرٍ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वलकद यसरनल कुरआन लिजिकरी फहल मिन मुइजकर

इतनी मुलायम आवाज़ में पढ़ें कि बच्चे की नींद में कोई विघ्न न हो। इस उपचार की अवधि एक महीने की है।

बदन पर काले दाग होना

रात्रि को जब मरीज़ सो जाए और उसके जागने का कोई आशंका न हो, तो घर का कोई सदस्य मरीज़ के समीप एक बालिशत के फासले से

الْمِ ذَٰلِكَ الْكِتَابُ لَا رَيْبَ فِيهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ

अलिफ़ लाम मिम ज़ालिकल किताबो लारैब फिही हुदलिल मुतक़ीन जिनु युमिनून

बिल्ग़ौब

का उच्चारण करें।

दुष्ट आदतों से मुक्ति

दुष्ट आदतें (जैसे चोरी करना, जुआ खेलना, नशा करना, लोगों को बिना कारण कष्ट देना, दूषित संगति में बैठना, आदि) से मुक्ति हेतु, जब रोगी गहरी नींद में हो, तो एक व्यक्ति तीन फीट की दूरी से, मध्यम से ऊँची ध्वनि में **कुल्होअल्लाह** (जो **सूरा इखलास** का एक अन्य रूप है) को **इक्कीस (21)** दिनों तक उच्चारित करें।

रक्तचाप, मानसिक टूटन, और मानसिक विकार

निम्नलिखित नक़्श को कागज पर सुस्पष्ट रूप से लिखकर **फलीता** (बत्ती) के रूप में तैयार करें और उसे रूई में लपेटकर रोगी की **चारपाई** के समीप जलाएं। यह उपचार तब तक जारी रखें, जब तक रोगी को पूर्णरूपेण रोग से मुक्ति न मिल जाए।

९	९	९	९
९	९	९	९
९	९	९	९
९	९	९	९

उच्च रक्तचाप (हाई ब्लड प्रेशर) के उपचार के लिए इस तावीज़ को **हरे** रंग से लिखें।

निम्न रक्तचाप (लो ब्लड प्रेशर) के उपचार के लिए इस तावीज़ को **लाल** रंग से लिखें।

नर्वस ब्रेकडाउन के उपचार के लिए इस तावीज़ को **पीले** रंग से लिखें।

अन्य मानसिक विकारों के उपचार के लिए इस तावीज़ को नीले रंग से लिखें।

सूचना: यदि हरा, लाल, या नीला रंग उपलब्ध न हो, तो पीला रंग भी पर्याप्त है, बशर्ते वह रंग खाद्य उपयोग के लिए सुरक्षित हो।

उपचार की अवधि अधिकतम **चालीस (40)** दिन है। **फलीता** चाहे एक दिन में एक बनाएँ या एक से अधिक बनाकर रख लें। **फलीता** जलाने के लिए **मिट्टी के दीए** में **घी** का उपयोग करें।

बुरे स्वप्न (अशुद्ध वस्त्र होना) से छुटकारा पाने के लिए

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
 یَا حَفِیْظُ یَا حَفِیْظُ یَا حَفِیْظُ
 یَا وَدُودُ یَا وَدُودُ یَا وَدُودُ
 یَا بَدِیْعُ یَا بَدِیْعُ یَا بَدِیْعُ
 الْعَجَائِبُ بِالْخَیْرِ یَا بَدِیْعُ
 ص ص ص ص ص
 ق ق ق ق ق
 یَا رَحِیْمُ یَا رَحِیْمُ یَا رَحِیْمُ

सोने से पहले बिस्तर पर लेटकर ग्यारह बार पढ़ें और छाती पर फूँक मार दें। यह क्रिया इक्कीस (21) दिन तक जारी रखें। गर्म और खट्टी चीजों से परहेज़ करें।

शरीर में दर्द

शरीर में दर्द से तात्पर्य शरीर का टूटना, आलस्य, सुस्ती और जोड़ों में दर्द से है।

يَا حَفِيْظُ يَا حَفِيْظُ يَا حَفِيْظُ
 يَا شَاقِي يَا شَاقِي يَا شَاقِي
 يَا كَافِي يَا كَافِي يَا كَافِي
 يَا بَدْرِيْعُ الْعَجَائِبِ بِالْحَيْرِ يَا بَدْرِيْعُ
 يَا بَدْرِيْعُ الْعَجَائِبِ بِالْحَيْرِ يَا بَدْرِيْعُ
 يَا بَدْرِيْعُ الْعَجَائِبِ بِالْحَيْرِ يَا بَدْرِيْعُ
 يَا حَفِيْظُ يَا حَفِيْظُ يَا حَفِيْظُ

रात को सोने से पहले इकतालीस (41) बार पढ़कर आधे कप पानी पर फूँक मारकर पी लें और बिना बात किए सो जाएं। सामान्य स्थितियों में यह क्रिया तीन दिन करने से पर्याप्त है। लेकिन यदि रोग पुराना हो तो दिनों की संख्या बढ़ाकर ग्यारह दिन करें।

रोग के बाद कमजोरी

तीन प्लेटों पर केसर और गुलाब के जल से

ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ السَّافِلِينَ

Thumma radadnāhu asfala as-sāfilīn

एक प्लेट सुबह, एक तीसरे पहर और एक रात को सोते समय पानी से धोकर कुछ दिनों तक पिलाएं। इंशा अल्लाह कमजोरी दूर हो जाएगी।

बिच्छू या सांप के काटे का इलाज

इसमें बिच्छू, सांप या किसी ज़हरीले कीड़े का काटा शामिल है। अगर किसी ज़हरीली दवा का रिएक्शन (REACTION) हो गया हो तो भी यही तावीज़ इस्तेमाल किया जाएगा।

يَا رَحِيمُ يَا اللَّهُ يَا مُرِيدُ
 يَا رَحِيمُ يَا اللَّهُ يَا مُرِيدُ
 يَا رَحِيمُ يَا اللَّهُ يَا مُرِيدُ
 يَا بَدِيعُ الْعَجَائِبِ يَا خَلْقَ الْبَدَائِعِ

चीनी की प्लेट पर पीले रंग से लिखकर बार-बार धोकर पिलाएं। यहां तक कि जहर का असर खत्म हो जाए।

सिर के बाल लंबे करने के लिए

युवावस्था में बाल मोटे होते हैं, जो बाद में अपेक्षाकृत पतले हो जाते हैं। बाल एक निश्चित सीमा तक बढ़ने के बाद रुक जाते हैं और कुछ समय बाद गिरने लगते हैं। बाल की उम्र लगभग चार साल होती है। कंघी करते समय अगर कुछ बाल गिर जाएं तो यह कोई चिंता की बात नहीं है। लेकिन यदि कंघी में बड़े बालों के साथ छोटे बाल भी निकल आए, तो इसका कोई न कोई कारण जरूर होगा जिसे बीमारी कहा जा सकता है।

बालों के गिरने में सामान्यतः पहली चिन्ह खुश्की होती है। यह खुश्की मिलावटी आहारों के सेवन, तीव्र सुगंधित असंसाधित तेलों के उपयोग, बाल धोने में साबुन का प्रयोग, और अत्यधिक मसालेदार तथा चटपटी वस्तुओं के खाने से उत्पन्न होती है। इन कारणों से बचना अत्यंत आवश्यक है।

अल-करीम अल-आस वल-मफ़ानात अल-फाम

الْكَرِيمُ الْعَاصُ وَالْمَفَانَاتُ الْفَامُ

सौ बार उच्च स्वर में पढ़कर उतने पानी पर दम किया जाए जिससे सिर अच्छी तरह से धोया जा सके। प्रत्येक सप्ताह तीन बार इस पानी से सिर धोएं। इस उपाय की अवधि एक माह निर्धारित की जाती है।

वृद्धावस्था में श्रवण शक्ति का क्षीण होना

इशा की नमाज़ के बाद 41 बार

फसव्वाहुन सब'आ समावातिल-अरज़ थुम्म इस्तवअला 'लल-'आर्श

فَسَوُّهُنَّ سَبْعَ سَمَوَاتٍ وَالْأَرْضِ ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ

पढ़कर दोनों हाथों पर दम करें और तीन बार हाथों को चेहरे पर फेर लें। यह प्रक्रिया 41 दिन तक अवश्य पूरी की जानी चाहिए।

बहरापन का निवारण

कान के भीतर हड्डी के ऊपर बाल होते हैं। यदि किसी कारणवश, जैसे सर्दी-जुकाम या अन्य किसी रोग के कारण, ये बाल मोटे हो जाते हैं, तो ध्वनि तरंगें इन बालों को पर्याप्त रूप से हिला नहीं पातीं, जिससे श्रवण क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति श्रवण में कमी अनुभव करता है या पूरी तरह से बहरा हो जाता है। इस समस्या के निवारण हेतु—**रास अस-सम'अ मिराम** رَأْسُ --- السَّمْعِ الْمَرَامُ रात्रि में शयन से पूर्व और दिन में ज़वाल के समय के तुरंत बाद दाहिने हाथ की छोटी अंगुली पर दम करके इसे कान में घुमाएं। इस शब्दों को कागज़ पर लिखकर तावीज़ के रूप में महिलाएं गले में और पुरुष बाजू में बांध सकते हैं।

बगल में गाँठें

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल तिल्क आयातुल किताबिल मबी अर्रहीम अर्रहीम अर्रहीम

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الرُّتُّكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ الرَّحِيمِ الرَّحِيمِ الرَّحِيمِ

सूर्योदय से पूर्व और सूर्यास्त के पश्चात सौ बार इस आयत का पाठ करें, फिर पानी पर दम करें और उसे पी लें। जब तक रोग का पूर्णतः निवारण न हो जाए, इस प्रक्रिया को निरंतर जारी रखें और साथ ही लाल मिर्च का सेवन त्याग दें।

बेहोशी से जागृत करना

एक प्याले पर एक बार **لَا تَأْخُذْهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ** ला ताखुजु हू सिनतं वला नौमं पढ़कर उस पानी पर दम करें और इसे रोगी के गले में डालें। इसके अतिरिक्त उसी पानी को रोगी के चेहरे पर छिड़कें।

बहन-भाई के मध्य विवाद निवारण

जब यह स्थिति उत्पन्न हो जाए कि बड़े भाई-बहन छोटे से प्रेमपूर्वक व्यवहार न करें और छोटे बड़े की अवज्ञा करें, तो

إِنَّا هُمُ الْيَكِيدُونَ كَيْدًا وَلَا يَكِيدُ كَيْدًا

إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا وَلَا يَكِيدُ كَيْدًا

100 बार इस आयत का पाठ कर तकीयों पर 40 दिनों तक दम किया जाए, इस शर्त के साथ कि एक का तकीया दूसरा उपयोग न करें।

बरकत (आशीर्वाद) के लिए

घर या व्यापार में बरकत (आशीर्वाद) का अभाव विभिन्न प्रकार की परेशानियाँ उत्पन्न करता है और घर में निरंतर लड़ाई-झगड़े होते रहते हैं। जब माता-पिता में आपसी विवाद होते हैं, तो इसका प्रतिकूल प्रभाव संतान पर पड़ता है। यदि संतान की सही प्रकार से परवरिश नहीं होती, तो माता-पिता का सम्मान उनके हृदय से समाप्त हो जाता है और वे माता-पिता से संघर्ष करने लगते हैं।

घर में बरकत (आशीर्वाद) के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि हम अल्लाह तआला के इस आदेश को स्मरण रखें कि अल्लाह तआला फिजूलखर्ची करने वालों को नापसंद करता है।

व्यापार में बरकत (आशीर्वाद) के लिए यह सिद्धांत सदैव ध्यान में रखना चाहिए कि सद्भावना और उचित लाभ प्राप्ति से व्यापार में वृद्धि होती है। इन सिद्धांतों का पालन करने के बावजूद यदि बरकत (आशीर्वाद) न हो, तो इसका आध्यात्मिक उपचार निम्नलिखित है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

ب س م ا ل ۵

ا ل و ا س ع ج

ل ج ل ا ل ۵

۹۹۹ ۹۹۹ ۹۹۹

उपरोक्त चित्र को सफेद चमकदार कागज या मोमीय कागज पर लिखकर दरवाजे की चौखट या दीवार में छोटे कील से गाड़ दें। तावीज़ गाड़ने से पूर्व संतान को यथा संभव मिठाई वितरित करें।

अभाग्य के कारण उत्पन्न समस्याएँ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

يَا وَدُّدُ يَا وَدُّدُ يَا وَدُّدُ
 اَللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۝ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ
 سُبْحٰنَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ قُلْ هُوَ
 اللّٰهُ اَحَدٌ ۝ يُحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ ۝ وَالَّذِيْنَ
 اٰمَنُوْا اَشَدُّ حُبًّا لِلّٰهِ ۝

इशा की नमाज़ के बाद, एक सौ एक (101) बार पढ़कर हाथों पर दम करें और फिर हाथों को तीन बार चेहरे पर फेर लें। इस प्रक्रिया को इक्कीस (21) दिन, चालीस (40) दिन या निन्यानवे (90) दिन तक जारी रखें, और परिस्थितियों के अनुसार कार्य की अवधि तय करें।

बवासीर

बवासीर दो प्रकार की होती है: एक खून वाली और दूसरी वायु वाली। यह बीमारी अधिक देर तक बैठने, पुरानी कब्ज, अधिक मसालेदार आहार खाने, शराब पीने और अन्य मादक पदार्थों के सेवन से होती है।

वायु वाली बवासीर के लिए

वायु वाली बवासीर में मलत्याग के बाद शुद्धि इस प्रकार करनी चाहिए कि बाएं हाथ की बड़ी अंगुली बवासीर के स्थान पर घर्षण करती है और शुद्धि करते समय "फिलुन, फिलुन, फल fa'lun fa'lun fa'al - فَعْلُنْ فَعْلُنْ فَعْلُنْ " इस मन्त्र का जप करते रहें।

खून वाली बवासीर के लिए

"मानी कमीरा-مَانِي قَمِيرًا " इस मन्त्र को शुद्धि करते समय उसी प्रकार पढ़ें जैसा वायु वाली बवासीर में "फिलुन, फिलुन, फल fa'lun fa'lun fa'al - فَعْلُنْ فَعْلُنْ فَعْلُنْ " पढ़ने का निर्देश दिया गया है।

कभी-कभी बवासीर का दर्द इतना तीव्र हो जाता है कि रोगी असहज हो जाता है और ऐसा महसूस करता है जैसे बवासीर की जगह पर सुइयाँ चुभ रही हैं। अल्लाह तआला अपने संरक्षण में रखें। इस दर्द के कारण रोगी न तो उठ सकता है और न बैठ सकता है, और चिल्लाता हुआ इधर-उधर टहलता रहता है। इसका तात्कालिक इलाज यह है:

रोगी "हुआ अल्लाहु अल्लाज़ी लाह इलाह इलाहू Huwa Allāhu alladhī lā ilāha illā Hu - هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ - " इस मन्त्र को पढ़कर अपनी तर्जनी अंगुली पर दम करे और उस अंगुली को पानी में डाल दे। इंशा अल्लाह, दर्द तुरंत ठीक हो जाएगा।

कुष्ठ (सफेद दाग)

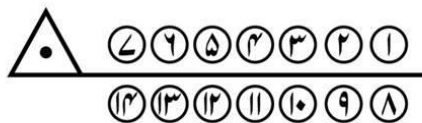
"कुल हुआ अलमईन यामारूफल मनान वल हालिम"

قُلْ هُوَ الْمُعِينُ يَا مَعْرُوفُ الْمَنَانُ وَالْحَلِيمُ

यह मन्त्र कुछ समय तक प्लेट पर लिखकर पानी से धोकर तीन बार पिएं। इस रोग में मछली, अंडा और दही से बचना अत्यंत आवश्यक है।

जो रोग समझ में न आए

कागज पर _____



लिखकर गले में डालें। यदि रोग दौरे की शकल में हो तो एक तावीज़ धोकर पिलाएं।

पित्त के रोग

पित्त में पथरी हो या ज़हर उत्पन्न हो गया हो, तो इसके लिए एक बार "अल्लाहु ला इलाहा इलल्लाहु ॐ अल-हय्युल कय्यूम- الْحَيُّ الْقَيُّومُ " सुबह, शाम और रात पानी पर दम करके पिलाएं। चालीस दिन यह कार्य जारी रखें।

पेट की गड़बड़ी (पेचिश)

पेचिश साधारण हो या खून वाली, दोनों में इसका कारण आंतों में घाव होना होता है। इस रोग में ज़मीन में उगने वाली सब्जियाँ, तीखा मसाला, अधिक नमक-मिर्च और मांस की हड्डियाँ बहुत हानिकारक होती हैं। पुरानी पेचिश का दीर्घकालिक इलाज निरंतर उपचार से समाप्त हो जाता है।

समय से पहले कुछ न कुछ खाने की आदत अत्यंत हानिकारक साबित होती है। आहार में सागो दाना, मूंग की दाल, खिचड़ी जिसमें दाल दो भाग और चावल एक भाग हो, का सेवन किया जाना चाहिए। बकरी के मांस के शोरबे में, जिसमें नमक-मिर्च केवल नाममात्र हो, रोटी को अच्छे से भिगोकर सेवन करें। उपचार निम्नलिखित है:

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا

Inna Allāha kāna bikulli shay'in 'Alīmā

सूर्योदय से पूर्व, सुबह खाली पेट एक प्याली पानी पर दम करके एक महीने तक सेवन करें। दम किया हुआ पानी पीने के बाद आधे घंटे तक किसी भी प्रकार का आहार या पेय लेना निषेध है।

पसलियों में दर्द

पसलियों, सीने, कमर या सिर में होने वाले किसी भी तीव्र दर्द के लिए कोई दूसरा व्यक्ति वुजू करके दर्द की जगह पर सात बार "بِاللَّهِ" लिख दे और इस क्रिया को दिन में सात बार दोहराए।

पायरीया (गम के रोग)

यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि दांतों के रोग सीधे तौर पर पेट से संबंधित होते हैं। पेट की कार्यप्रणाली यदि सही रहती है और दांतों की सफाई का पूरा ध्यान रखा जाता है, तो दांतों के रोग नहीं होते। पायरीया में मसूड़ों के भीतर नमी जमा होकर सड़ जाती है और फिर यह नमी पिआं के साथ रक्त के मिश्रण में बाहर निकलती रहती है। यह एक अत्यधिक कठिन रोग है, जिसे ठीक होने में समय लगता है। पेट के सही संचालन और दांतों की सफाई के साथ-साथ, सुबह सूर्योदय से पहले, एक निश्चित समय तक पालक के पत्ते पर "إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى" Ilā ajalīn musammā-" एक बार दम करके पालक को अच्छी तरह चबाकर खाएं। चबाते समय यह ध्यान रखें कि लार गले में न जाए। पालक के पत्तों को अच्छे से चबाकर थूक दें। इस क्रिया को दिन

में तीन बार दोहराएं और हर बार एक के बाद एक तीन पत्ते चबाएं। इस प्रक्रिया को आधे घंटे तक कोई भी आहार या पेय सेवन करने से पहले करें।

पेट का बढ़ना और मोटापा कम करने के लिए

۱۲	۱۲	۱۲	۱۲
۱۲	۱۲	۱۲	۱۲
۱۲	۱۲	۱۲	۱۲
۱۲	۱۲	۱۲	۱۲

यह चित्र एक बड़े कागज पर लिखकर रात को सोने से पहले और सुबह उठने के बाद पेट पर गोलाकार रूप में मलें। हर दिन पेट को किसी डोरी या धागे से नापें। पहले ही दिन से पेट में कमी आनी शुरू हो जाएगी। जब पेट अपनी असली स्थिति में आ जाए, तो इस उपाय को बंद कर दें। यदि इस दौरान कागज फट जाए तो उसे जला दें और नए कागज पर यह चित्र फिर से लिख लें।

पिंडलीयों या टांगों के मांसपेशियों का ढीला होना

आधे सीर काले तिल का तेल लें। उस पर "11,000" $\text{كُلُّ شَيْءٍ يَرْجِعُ إِلَىٰ أَصْلِهِ}$ बार पढ़कर उस पर दम करें। इसे इस प्रकार करें: तेल को किसी बोतल में बंद करके सुरक्षित रखें। रोजाना एक बार जितना हो सके (कम से कम 1,000 बार पढ़ना आवश्यक है), पढ़कर

बोतल में फूंक मारें और फिर बोतल का ढक्कन बंद कर दें। इस प्रकार 11,000 की संख्या पूरी करें। इसका उपयोग इस प्रकार करें: रोजाना 3 माशा तेल को रोटी पर लगा कर खाएं और 3 माशा तेल को हल्के हाथ से दोनों घुटनों और पिंडलीयों पर मालिश करें।

पत्तियां उड़ना

पानी में खोया का पेड़ा या चीनी घोलकर, "11" كُنْ فَيَكُونُ बार पढ़कर उस पर दम करें और मरीज को दिन में तीन बार पिलाएं। एक बार यह उपाय करना पर्याप्त है। अगर रोग में अधिक गंभीरता हो तो इसे 11 दिन या अधिक से अधिक 21 दिन तक जारी रखें।

फुंसी, फोड़ा, खुजली, छेप

786

7	8	6	7	8	6
7	8	6	7	8	6
7	8	6	7	8	6
7	8	6	7	8	6
7	8	6	7	8	6

चीनी की प्लेट पर ऊपर दिए गए चित्र को खाने के पीले रंग से लिखकर, पानी से धोकर पिएं और 786 के बिना बड़े प्लेट पर लिखकर पानी से धोकर एक बाल्टी पानी में डालकर उस पानी से स्नान करें।

छेप के लिए इलाज की अवधि चार महीने है। मामूली फुंसी के लिए 11 दिन, फोड़ों से निजात पाने के लिए एक महीना, और खून की सफाई के लिए एक प्लेट रोज़ाना 40 दिनों तक धोकर पिएं।

मूत्र संबंधी रोग और उनका उपचार

पेशाब में खून आना

पेशाब में खून आने या जलन की कई कारण हो सकते हैं, जैसे गुर्दे या मूत्राशय में पथरी की उपस्थिति। अत्यधिक गर्म चीजें या लाल मिर्च का सेवन भी पेशाब में जलन का कारण बन सकता है। पेशाब के रोगों में हानिकारक आहार से परहेज के साथ-साथ एक बार

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हुआल्लाहुलखालिकुलबारीउलमुसीवरुलाहुलअस्माउलहुस्ना

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

هُوَ اللّٰهُ الخَالِقُ البَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الاسْمَاءُ الْحُسْنٰی

पढ़कर पानी पर दम करें और दिन में आठ बार पिलाएं।

पेशाब रुक रुक कर आना

सुबह सूर्योदय से पहले और शाम सूर्यास्त के तुरंत बाद ग्यारह बार

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
 अलमलिकुलकुद्दूसर्रहमानिर्रहीम
 بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
 الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

पढ़कर पेट पर फूंक मारें, जब तक रोग से पूरी तरह से मुक्ति न मिल जाए, यह उपचार जारी रखें।

पेशाब बार बार आना

रात के समय एकांत में बैठकर सौ बार

या इलाहा या इलियाहा या अल्लाह

يَا اِيْلٰ يَا اِيْلِيَّاهُ يَا اللّٰه

पढ़ें और पेट पर फूंक मारें। तीन माह तक यह क्रिया जारी रखें।

पेशाब में शक्कर आना, सोते समय पेशाब करना और

मूत्राश

ع	ص	م	ح
ء	ا	ر	ق
ا	ك	ل	ت
ل	ت	ا	ى

उपरोक्त मंत्र को पीले रंग से किसी मोम कागज पर लिखकर गले में डालें, और प्लेटों पर लिखकर सुबह, दोपहर और शाम एक एक प्लेट पानी से धोकर पियें या कोई अन्य व्यक्ति लिखकर पिलाए।

सिफिलिस, गोनोरिया और अन्य यौन संचारित रोग

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
 یَا حَفِیْظُ یَا حَفِیْظُ یَا حَفِیْظُ
 یَا وُدُّوُدُّ یَا وُدُّوُدُّ
 یَا بَدِیْعُ یَا بَدِیْعُ
 یَا بَدِیْعُ الْعَجَائِبِ بِالْحَبِیْرِ یَا بَدِیْعُ

जब भी पानी पिएं, यह कार्य करके पानी पर दम कर लें।

स्थानांतरण की रद्दीकरण

यदि किसी नौकरी के संदर्भ में एक स्थान से दूसरे स्थान या एक शहर से दूसरे शहर में तबादला हो गया हो और उसे रोकना आवश्यक हो, तो इसके लिए इशा की नमाज के बाद 19 दिन तक 19 बार

तब्बत यदाअबी लहबिन व तब्ब . **Tabbat yadaa abi lahabin watabb**

تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ (पूरा सूराह) पढ़कर दुआ करें।

स्थानांतरण कराने के लिए

यदि किसी को एक शहर से दूसरे शहर या एक विभाग से दूसरे विभाग में स्थानांतरण कराना हो, तो इशा की नमाज के बाद 41 बार आयतुल कुर्सी (अज़ीम तक) पढ़कर 40 दिनों तक दुआ करें। यदि किसी मजबूरी से कार्य में अंतर आ जाए, तो दिन गिनकर बाद में पूरे कर लें।

वशीकरण

शत्रु के षड्यंत्र से बचने, शासक को अनुकूल बनाने, समाज में सम्मान और सफलता पाने के लिए, पति के क्रोध को शांत करने, या बदमिजाज पत्नी को वश में करने के लिए वुजू करके रात को सोने से पहले 100 बार

"बिस्मिल्लाह अल-वासिअु जल्ला जलालुहु"

بِسْمِ اللّٰهِ الْوَاسِعِ جَلَّ جَلَالُهُ

पढ़कर इच्छित व्यक्ति की कल्पना करें, उस पर फूंक मारें और दुआ करके सो जाएं। यह प्रक्रिया 40 दिनों तक करें, अधिकतम अवधि 90 दिन तक हो सकती है। महिलाओं को विशेष दिनों में रुके हुए दिनों को बाद में पूरा करना होगा।

किसी कठोर शासक या अत्याचारी के हृदय में कोमलता और प्रेम उत्पन्न करने के लिए "كهييحص . Kaf Ha Ya Ain Sad कहा या ऐन साद" (काफ हा या ऐन साद) इस प्रकार पढ़ें: "क" पढ़कर दाएँ हाथ की छोटी उंगली मोड़ लें, "हा" पढ़कर अगली उंगली मोड़ लें, "या" पढ़कर बीच की उंगली मोड़ लें, "ऐन" पढ़कर तर्जनी उंगली मोड़ लें और

"साद" पढ़कर अंगूठे को तर्जनी उंगली के अंतिम जोड़ पर रखकर मुट्ठी बंद कर लें। जब शासक के समक्ष पेशी हो, तो हाथ खोल दें। यह आवश्यक नहीं कि हाथ शासक की आंखों के सामने ही खोला जाए।

रोगों की पहचान

फजर की अज़ान के तुरंत बाद

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम इफ्तह इफ्तह इफ्तह"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اِفْتَحْ اِفْتَحْ اِفْتَحْ

Iftah Iftah Iftah

सौ बार पढ़कर आँखें बंद कर लें और उस रोगी की कल्पना करें जिसके बारे में जानकारी प्राप्त करनी है। रोग की स्थिति ज़ेहन में स्पष्ट हो जाएगी। यदि रोगी स्वयं जानना चाहे कि उसे क्या बीमारी है, तो यह अमल करके अपने दिल के अंदर देखे, ज़ेहन में रोग की प्रकृति प्रकट हो जाएगी।

यदि किसी बीमारी का उपचार जानना हो, तो यही अमल रात को सोने से पहले उत्तर दिशा की ओर मुख करके करें, किसी से बातचीत न करें और सो जाएं। जब तक स्थिति स्पष्ट न हो जाए, इस अमल को प्रतिदिन जारी रखें। निदान या उपचार का खुलासा स्वप्न में या किसी अन्य रूप में हो जाएगा।

तिल्ली का उपचार

कागज़ पर "फहिन कत्तारिल कलम Fahin qattāru al-qalam - فِهِنْ قَطَّارِ - الْقَلَمُ" लिखकर रोगी के गले में डाल दें या तिल्ली की जगह पेट पर बाँध दें। इसके

अलावा, थोड़ी-सी राख को तर्जनी (कलीमे की उंगली) पर लगाकर एक बार "या वदूद-
 يَا وَدُودُ" पढ़ें, उंगली पर फूंक मारें और तिल्ली के ऊपर उस उंगली से एक बार (X) का
 निशान बना दें।

दौरे पड़ना और शरीर में झटके लगना

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا حَيُّ قَبْلَ كُلِّ شَيْءٍ يَا حَيُّ بَعْدَ كُلِّ شَيْءٍ
 يَا حَيُّ قَبْلَ كُلِّ شَيْءٍ يَا حَيُّ بَعْدَ كُلِّ شَيْءٍ
 يَا حَيُّ قَبْلَ كُلِّ شَيْءٍ يَا حَيُّ بَعْدَ كُلِّ شَيْءٍ

यदि शरीर में झटके लगते हों या कोई अंग अकड़ जाता हो, चाहे यह रक्तचाप (ब्लड
 प्रेशर) के कारण हो या रक्त की कमी के कारण, तो पीले रंग की प्लेटों पर लिखें और
 एक सुबह व एक शाम पानी से धोकर ग्यारह दिनों तक पिलाएँ।

टॉन्सिल्स और कंठमाला

जब जलते हुए कोयले बुझने लगते हैं, तो उन पर राख जमने लगती है। इस राख का
 कुछ हिस्सा सफेद होता है, जिसे "राख का फूल" कहा जाता है। इसे तर्जनी उंगली
 (इंगित उंगली) के पहले पोर पर लगाएँ, फिर एक बार "या वदूद-
 يَا وَدُودُ" पढ़कर इस पर फूंक मारें और प्रभावित स्थान पर उंगली से (X) का निशान बना दें। यदि रोग
 फैला हुआ हो, तो नई राख लेकर इसी प्रक्रिया को दोहराएँ।

कंद क्षय रोग (तपेदिक)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
الرَّتِلْكَ اَیَّاتُ الْكِتَابِ الْمُبِیْنِ
الرَّرْحِیْمُ الرَّحِیْمُ الرَّحِیْمُ

तीन प्लेटों पर लिखकर, एक सुबह, एक शाम और एक रात को पानी से धोकर **नब्बे दिन** तक पिलाएँ। टीबी के उपचार में **रंगीन चिकित्सा** भी अत्यंत प्रभावी और लाभकारी सिद्ध हुई है। अनुभव में यह पाया गया है कि **नीली किरणों के तेल** से क्षतिग्रस्त और असाध्य फेफड़ों को भी संपूर्ण रूप से स्वस्थ किया जा सकता है। इस विषय पर विस्तार से चर्चा "**रंग व रोशनी से उपचार**" पुस्तक में की गई है।

जिगर के सभी रोग

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا الْكَلِمَاتِ رَبِّیْ

एक कागज़ पर लिखकर तावीज़ बना लें। महिलाएँ इसे गले में पहनें और पुरुष इसे बाजू पर बाँधें। इसके अलावा, कागज़ या प्लेटों पर लिखकर पानी से धोकर खाली पेट पिएँ। यदि जिगर या गुर्दों की खराबी के कारण शरीर में सूजन आ जाए, तो यह उपचार उसे भी समाप्त कर देता है।

युवा अवस्था में बचपन जैसी आकृति

वे मानसिक कोशिकाएँ जो शरीर की संरचना का संतुलन बनाए रखती हैं, यदि किसी कारण प्रभावित हो जाएँ, तो व्यक्ति का चेहरा युवा अवस्था में भी बच्चों जैसा दिखाई देता है। इसके लिए चाहिए कि सूर्योदय से पहले और रात को सोने से पहले वुजू करके **बिस्मिल्लाह शरीफ** के बाद एक हजार बार "या शाफी **يَا شَافِي** -" पढ़कर दोनों हाथों पर फूंक मारें और हाथ चेहरे पर फेरें। न्यूनतम उपचार अवधि तीन महीने और अधिकतम छह महीने है।

धातु रोग

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

يَا شَافِي يَا شَافِي يَا شَافِي

يَا كَافِي يَا كَافِي يَا كَافِي

يَا وَدُودُ يَا وَدُودُ يَا وَدُودُ

يَا رَحِيمُ يَا رَحِيمُ يَا رَحِيمُ

यह पढ़कर एक प्याली पानी पर दम करें और सुबह खाली पेट, सूरज निकलने से पहले, उत्तर दिशा की ओर बैठकर तीन घूँट में धीरे-धीरे पिएँ। गर्म और कब्ज़ करने वाले पदार्थों से परहेज़ करें।

पशुओं में दूध की कमी

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

مِنْ ثَمَرَةِ رُزْقًا

११	११	११
११	११	११
११	११	११

किसी स्वच्छ लकड़ी पर, जिसमें कोई दुर्गंध न हो, यह यंत्र लिखकर लकड़ी में छेद करें और उसे डोरी से बकरी, गाय या भैंस के गले में बाँध दें। इंशाअल्लाह, दूध की वृद्धि होगी।

यौन आकर्षण उत्पन्न करने के लिए

कई बार ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है कि पुरुष या महिला में यौन इच्छा या तो बहुत कम हो जाती है या समाप्त हो जाती है। इसे सामान्य करने के लिए, कागज़ पर अ- Al-qaynā al-qaynā الْقَيْنَا الْقَيْنَا लिखकर महिलाओं को अपनी चोटी में और पुरुषों को अपने बाजू पर बाँधना चाहिए।

अवांछित यौन इच्छा समाप्त करने के लिए

वुजू करके तीन बार यह पढ़ें:

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ

Lā ilāha illā anta subḥānaka innī kuntu mina ḡālimīn

ط اللَّهُ نُورُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ط

Allāhu nūru as-samāwāti wal-arḡ

لَا تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ ط

Lā ta'khudhuhu sinatun walā nawmun

फिर इसे एक प्याली पानी पर दम करें और संबंधित व्यक्ति को पिलाएँ। यह प्रक्रिया लगातार चालीस दिनों तक जारी रखें।

जादू का तोड़

अधिकतर स्थितियों में जादू का विचार मात्र एक वहम होता है, लेकिन इसका पूर्णतः इनकार भी नहीं किया जा सकता। जादू एक विद्या है, जिसका उल्लेख कुरआन में भी मिलता है। यदि वास्तव में किसी व्यक्ति पर जादू का प्रभाव हो और कोई ज्ञानी व्यक्ति इसकी पुष्टि कर दे, तो यह उपाय करें।

सुबह बहुत जल्दी उठकर फज्र की नमाज़ अदा करें और सूरह फलक (قل أعوذ برب الفلق - Qul a'ūdhu birabbi al-falaq) पढ़ते हुए किसी समुद्र, नदी या झरने को पार करें। इस दौरान किसी से बात न करें। जल स्रोत पार करने के बाद, पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें और शहादत की उंगली से ज़मीन पर "हामान - हारूत - هَامَانُ - هَارُوتُ" लिखकर हाथ से मिटा दें। यह प्रक्रिया सूर्योदय से पहले पूरी करें। यदि

किसी स्थान पर समुद्र या नदी उपलब्ध न हो, तो गांव या शहर से बाहर किसी कुएं के पानी में अपना चेहरा देखें।

जिन्नात के प्रभाव को दूर करने के लिए

यदि बीमारी की सटीक पहचान न हो और यह कहा जाए कि व्यक्ति पर जिन्नात या प्रेतात्मा का प्रभाव है, तो रोगी को साफ़ जगह पर बैठकर यह विधि अपनाएं –

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
 يَا حَفِیْظُ يَا حَفِیْظُ يَا حَفِیْظُ
 يَا بَدِیْعُ يَا بَدِیْعُ يَا بَدِیْعُ
 الْعَجَائِبِ بِالْحَيْرِ يَا بَدِیْعُ

नितांत शांति और संतोष के साथ ग्यारह बार पढ़कर मरीज़ पर दम करें। दम करते समय यह सोचें कि मैं और मरीज़ दोनों अर्श-ए-मुअल्ला के नीचे हैं। यदि मरीज़ पर जिन्नात का प्रभाव है, तो दम करते समय यह स्पष्ट हो जाएगा। एक बार यह पुष्टि होने पर कि मरीज़ पर जिन्नात का प्रभाव है, ग्यारह बार या हफ़ीज़ **يَا حَفِیْظُ** पढ़कर पुनः दम करें। मरीज़ अपनी असल स्थिति में लौट आएगा।

शारीरिक और आध्यात्मिक क्षमताओं की नवीनीकरण

जब हालात जटिल हो जाते हैं और समस्याएं हल नहीं होतीं, तो व्यक्ति पर जड़ता हावी हो जाती है। इस जड़ता के कारण उसकी समझ और इच्छाशक्ति निष्क्रिय हो जाती है। कोशिश करने के बावजूद वह किसी परिणाम तक नहीं पहुँच पाता। जीवन के व्यवसाय में असफल रहता है। इसका असर शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर भी पड़ता है। यह स्थिति न केवल उसके लिए बल्कि उसके घर के अन्य सदस्यों के लिए भी कष्टकारी बन जाती है। इससे छुटकारा पाने के लिए चांदी की अंगूठी पर नौ खानों का निर्माण कराया जाए और उन खानों में नौ का बंदोस्त अंकित कराया जाए, और यह अंगूठी दाहिने हाथ की छोटी अंगुली के समान अंगुली में पहनी जाए। इंशा अल्लाह, समस्याएं हल हो जाएंगी।

चोरी की आदत छुड़ाने के लिए

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

يَا حَفِيْظُ يَا حَفِيْظُ يَا حَفِيْظُ يَا حَفِيْظُ يَا حَفِيْظُ

يَا وُدُّوُ يَا وُدُّوُ يَا وُدُّوُ يَا وُدُّوُ يَا وُدُّوُ

بِسْمِ اللّٰهِ الْكَرِيْمِ وَالْمُتَكَبِّرِيْنَ وَعَادٍ وَثُمُوْدٍ

۹۹۹

۹۹۹

۹۹۹

कागज पर संबंधित व्यक्ति का नाम लिखकर उसे तकिए के भीतर रुई के बीच रखा जाए, जिससे उसकी चोरी की आदत में सुधार हो। यह तकिया अन्य किसी व्यक्ति द्वारा उपयोग में न लाया जाए।

चोरी गए सामान की वापसी के लिए

إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ

कागज पर आवश्यक जानकारी लिखकर उसे किसी भारी पत्थर के नीचे स्थिर स्थान पर दबा दिया जाए, ताकि वह स्थान हिल-डुल न सके और।

चोट से तकलीफ

ऐसी चोट जिसमें कोई अंग स्थान से बाहर निकल जाए या बंद चोट, जिसकी वजह से दर्द या सूजन हो, उसे खत्म करने के लिए एक बार:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ۝

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" पढ़कर पानी पर दम करके पिलाएं और कागज पर लिखकर तावीज़ को चोट की जगह या प्रभावित अंग पर बांधें।

चलने फिरने में अक्षमता

शरीर की लंबाई के बराबर कच्चे सूत का नीला धागा सात बार नापें और उसे इतना छोटा कर लें कि गले में डाला जा सके, एक बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

فِي أَيِّ الْأَعْيُنِ بِكُمَا تُكَدِّبِينَ ۝

पढ़ें और धागे में एक गांठ लगाएं। इस प्रकार इक्कीस (21) गांठें लगाएं और यह गंडा रोगी के गले में डाल दें। ठीक होने के बाद गंडा निकालकर उसे नहर, नदी या समुद्र में बहा दें।

चेहरे की सुंदरता और आकर्षण में वृद्धि के लिए

कुछ व्यक्तियों के चेहरे पर कोई स्पष्ट दोष नहीं होते, फिर भी वे देखने में आकर्षक नहीं लगते। यह स्थिति कभी-कभी मानसिक कष्ट का कारण बन सकती है, क्योंकि ऐसा व्यक्ति सामाजिक दृष्टि से उपेक्षित महसूस कर सकता है, जिससे उसकी आत्मविश्वास और मानसिक स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

△ فَاوَالِقَلَمٌ وَذَاتُ الْكَلَامِ

ن	م	ن	م	ن	م
ح	و	ح	و	ح	و

इस समस्या से निजात पाने के लिए, उच्च गुणवत्ता वाली काली चमकदार स्याही से एक सुंदर हस्तलिखित रचनात्मक चित्र फुल स्केप सफेद कला पत्र पर तैयार किया जाता है। इस चित्र को फ्रेम करवा कर रात के समय सोने से पूर्व, तीन से चार फीट की दूरी से, दस से पंद्रह मिनट तक नियमित रूप से देखा जाए। यह अभ्यास चेहरे की आकर्षण क्षमता में वृद्धि और मानसिक आत्मविश्वास में सुधार हेतु सहायक हो सकता है।

एक सौ बार

قَالَ يُبْشِرِي هَذَا غَلْمٌ ط وَأَسْرُؤُهُ بِضَاعَةٌ ط

Qāla yubashiriyā hādhā ghulamun wa asrūhū bī'āh

पढ़कर एक लोटे पानी पर दम करें और इस पानी से मुँह धोएं। मुँह धोने के बाद दोनों गालों को थपथपाएं, फिर तौलिये या कपड़े से चेहरा सुखाए बिना सो जाएं। हालांकि, पानी को बगीचे या गमले में डालें ताकि उसका अपमान न हो।

इलाज की अवधि कम से कम चालीस (40) दिन और अधिकतम नब्बे (90) दिन है। महिलाएँ अपनी मासिक धर्म के दिनों को छोड़कर बाद में बाकी दिनों को पूरा करें।

गैस्ट्रिक समस्याएँ

पाचन तंत्र में खराबी, पेट की सूखापन, कब्ज और कब्ज़ जैसी समस्याओं के कारण कई गैसीय विकार उत्पन्न होते हैं। गैसीय विकारों में एक विकार हबस-ए-रिह (Gas retention) है, जिसमें गैस निचले अंगों की बजाय ऊपर की ओर बढ़ने लगती है। जब यह गैस दिल के पास इकट्ठी हो जाती है, तो दिल पर दबाव पड़ता है और व्यक्ति को सांस लेने में कठिनाई होने लगती है। यदि यह गैस सिर की ओर बढ़ती है, तो सिर में तेज दर्द या साइनस (Sinus) की समस्या उत्पन्न हो सकती है। यदि यह गैस हाथों की ओर बढ़ती है, तो हाथों में दर्द और कभी-कभी सनसनाहट भी महसूस हो सकती है। अगर गैस पेट में इकट्ठी हो जाती है, तो पेट में गर्मी का एहसास होता है और इसके कारण बार-बार छींकने की समस्या उत्पन्न हो सकती है। यदि यह गैस आंतों में बनी रहती है और इसका समय पर इलाज नहीं किया जाता, तो यह जिगर और आंतों से संबंधित कई विकारों का कारण बन सकती है।

आहार में परिवर्तन और परहेज़ के साथ हबस-ए-रिह, पत्थर जैसी कठोरता, कोलिक का दर्द, आंतों का बढ़ना, आंतों की कमजोरी, दस्त और अन्य संबंधित रोगों के उपचार के लिए, एक साफ, पारदर्शी विदेशी शीशी लें और उसमें उबला हुआ पानी भरें। इसके बाद इसमें एक मजबूत कार्क (कॉर्क) लगा दें। पानी भरते समय ध्यान रखें कि शीशी के ऊपरी चौथाई हिस्से में खाली स्थान रहे। इस शीशी को ऐसी जगह पर रखें जहां सुबह से तीन-चार बजे तक सूर्य की रोशनी आती हो। शाम के समय शीशी को हटा लें। इस पानी में हल्दी का रंग मिलाकर रोशनाई (इंक) तैयार करें और इस रोशनाई से सफेद चीनी की तीन प्लेटों पर अलग-अलग यह चित्र (नक्श) लिखें।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

رِیَا حِیْنِ مَاءٍ	رِیَا حِیْنِ مَاءٍ	رِیَا حِیْنِ مَاءٍ	رِیَا حِیْنِ مَاءٍ
رِیَا حِیْنِ مَاءٍ	رِیَا حِیْنِ مَاءٍ	رِیَا حِیْنِ مَاءٍ	رِیَا حِیْنِ مَاءٍ
رِیَا حِیْنِ مَاءٍ	رِیَا حِیْنِ مَاءٍ	رِیَا حِیْنِ مَاءٍ	رِیَا حِیْنِ مَاءٍ
رِیَا حِیْنِ مَاءٍ	رِیَا حِیْنِ مَاءٍ	رِیَا حِیْنِ مَاءٍ	رِیَا حِیْنِ مَاءٍ

सुबह नाश्ते से पंद्रह मिनट पहले, दोपहर और रात को खाने से आधा घंटा पहले, एक-एक प्लेट धूप में तैयार किए गए पानी से धोकर पिएं।

ईर्ष्यालु व्यक्ति या शत्रु की हानि से सुरक्षित रहने हेतु

फ़ज़्र की नमाज़ अदा करने के पश्चात या रात्रि में शयन से पूर्व, प्रारंभ और अंत में ग्यारह-ग्यारह बार दुरूद शरीफ़ के साथ,

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

نَصْرُ مَنْ لّٰهُ وَفَتْحٌ قَرِیْبٌ ط

सौ (100) बार पाठ कर हृदय (सीने) पर फूंक मारें। **इंशा अल्लाह**, ईर्ष्यालु व्यक्तियों और शत्रुओं की बुरी प्रवृत्तियों से रक्षा होगी।

यह साधना केवल आवश्यकता पड़ने पर ही करने की अनुमति है। हमारी ओर से केवल उस स्थिति में इसकी स्वीकृति है जब यह प्रमाणित हो जाए कि कोई व्यक्ति शत्रुता रखता है।

इच्छानुसार विवाह हेतु

तावीज़ लेखन की विधि: नीचे दिए गए आलेख (नक्श) के ऊपर पतले कागज़ को रखकर उसे तालिकाओं (खानों) में विभाजित करें, फिर कागज़ को अलग कर ऊपर "**बिस्मिल्लाह शरीफ़**" अंकित करें। इसके पश्चात तालिकाओं की प्रविष्टि इस प्रकार करें कि सर्वप्रथम वे चार खाने अंकित करें जिन पर क्रम संख्या (1) दी गई हो, तत्पश्चात (2) क्रमांकित खानों की प्रविष्टि करें और इसी क्रम में सभी आठ खाने पूर्ण करें। इसके नीचे "**मुहिब**" (अर्थात् जो विवाह करना चाहता है) का नाम लिखें, तथा इस नाम के बाद "**अल-हुब**" अंकित कर "**महबूब**" (अर्थात् जिससे विवाह प्रस्तावित है) का नाम लिखें।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

وَلَمْ	يُولَدْ	وَلَمْ	يَكُنْ	(3)
هُوَ	اللَّهُ	أَحَدٌ	اللَّهُ	(5)
يُولَدْ	وَلَمْ	يَكُنْ	لَهُ	(4)
قُلْ	هُوَ	اللَّهُ	أَحَدٌ	(1)
الصَّمَدُ	لَمْ	يَلِدْ	وَلَمْ	(2)
لَهُ	كُفُوًا	أَحَدٌ	قُلْ	(2)
اللَّهُ	الصَّمَدُ	لَمْ	يَلِدْ	(2)
كُفُوًا	أَحَدٌ			(8)

..... الْحُبُّ

प्रेमी ताबेज मोहिब से प्यार करता है। शयन तकिए के नीचे स्थापित करे। यदि त्वरित प्रभाव अपेक्षित हो, तो इस तावीज़ को दो प्रस्तरखंडों (पत्थरों) के मध्य दाबित करें। प्रत्येक प्रस्तरखंड का भार न्यूनतम दो सेर होना अनिवार्य है। यदि उनका भार अधिक हो, तो कोई आपत्ति नहीं, किन्तु दो सेर से कम नहीं होना चाहिए। इन प्रस्तरखंडों को धरातल (भूमि) पर स्थापित करें, किसी भी प्रकार के लकड़ी के आधार, चौकी या विस्तर (शय्या) पर न रखें। यह प्रक्रिया केवल नैतिक एवं विधिसम्मत उद्देश्यों के लिए संपादित की जाए। यदि इसका प्रयोग अनुचित अथवा अवैध कार्यों हेतु किया गया, तो प्रतिकूल परिणाम संभावित हैं।

यात्रा के दौरान सुरक्षा

यात्रा पर प्रस्थान करने से पूर्व या निवास स्थान से निकलने के पश्चात,

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
 يَا حَفِیْظُ يَا وُدُّوْدُ يَا رَحِیْمُ يَا مُرِیْدُ يَا حَفِیْظُ
 يَا وُدُّوْدُ يَا وُدُّوْدُ يَا اللّٰهُ يَا حَفِیْظُ

इसका पाठ कर आकाश की ओर मुख करके फूंक मारें। इंशा अल्लाह यात्रा के दौरान प्रत्येक विपत्ति एवं आकस्मिक दुर्घटना से रक्षा होगी तथा अदृश्य सहायता भी प्राप्त होगी।

स्मरण शक्ति की दुर्बलता दूर करने हेतु

प्रातःकाल निहार मुख वुजू या कुल्ला करने के पश्चात, "रब्बि यस्सिर वला तुअस्सिर رَبِّ يَسِّرْ وَلَا تُعَسِّرْ" - तीन बार पढ़ें और जल पर दम कर सेवन करें। इस साधना को चालिस (40) दिन तक निरंतर करना चाहिए। यदि किसी कारणवश बाधा आ जाए, तो शेष दिन पूरे कर लें।

रक्त की कमी (अनीमिया - Anaemia) दूर करने हेतु

शरीर में रक्त की कमी को दूर करने के लिए "बिस्मिल्लाह शरीफ़" तीन बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
يَا حَيُّ قَبْلَ كُلِّ شَيْءٍ يَا حَيُّ بَعْدَ كُلِّ شَيْءٍ

Yā Ḥayy Qablā Kullī Shay'in Yā Ḥayy Ba'da Kullī Shay'in

पढ़ें और फिर जल, चाय, शरबत या दुग्ध जिस भी पेय का सेवन करें, उस पर दम कर पी लें।

जब रक्त की न्यूनता समाप्त हो जाए, तो इस प्रक्रिया को विराम दे दें।

स्वयं से बातें करने की प्रवृत्ति

नब्बे (90) दिनों तक प्रतिदिन एक बार

"अल्लाहु ला इलाहा इल्ला हूअल-हय्युल-कय्यूम"

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ط

का पाठ कर, प्रातःकाल सूर्य उदय से पूर्व, एक सुराही जल या मटके पर दम करें और रोगी को वही जल सेवन हेतु दें। यदि रोगी स्वयं इस प्रक्रिया को संपन्न करने की अवस्था में हो, तो यही आयत प्रातः एवं रात्रि में शयन से पूर्व एक बार पढ़कर, हाथों पर दम करे और दोनों हाथ मुख पर फेर ले।

मानसिक संतुलन की विकृति

मस्तिष्क पर निरंतर मानसिक दबाव के कारण संतुलन प्रभावित हो जाता है। इसका कारण कठिन परिस्थितियाँ, मानसिक उलझनें या मधुमेह हो सकता है। मानसिक अस्थिरता की कोई भी वजह हो, इसका उपाय एक ही है:

प्रत्येक बार जल पीते समय, एक घूँट जल लेकर "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ" पढ़कर दम करें और सेवन करें।

यदि रोगी की अवस्था इतनी गम्भीर हो कि वह स्वयं यह प्रक्रिया न कर सके, तो "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ" को ज़ाफ़रान एवं गुलाब जल से एक तश्तरी (प्लेट) पर लिखकर, प्रातः निहार मुख पिलाएँ।

मस्तिष्कीय दुर्बलता

मानसिक उलझन एवं नर्वसनेस (Nervousness) को समाप्त करने हेतु आहार में नमक की मात्रा को घटाकर चतुर्थांश (1/4) कर देना चाहिए।

الرَّضَاعَتْ عَمَانَوِيلُ

♦۸♦

उपचार के लिए, किसी मोमयुक्त कागज के एक टुकड़े पर ज़ाफ़रान एवं गुलाब जल से यह लिखें, फिर इसे एक पाउंड शहद में डाल दें। यह शहद प्रतिदिन तीन बार, एक-एक चम्मच सेवन करें। जब तक स्वास्थ्य पूर्ण रूप से पुनः स्थापित न हो जाए, इस उपचार को संपूर्ण रूप से त्यागें

दाग, धब्बे एवं घाव के निशान

शरीर पर दाग एवं धब्बे, चाहे वे घाव के कारण हों या जलने से, सभी के लिए प्रातः सूर्योदय से पूर्व एवं रात्रि में सोने से पहले, बिस्मिल्लाह शरीफ के पश्चात एक हजार (1000) बार "या शाफ़ी-يَا شَافِي" का पाठ करें। इसके बाद दोनों हाथों पर दम करें और प्रभावित स्थानों पर फेर लें। साथ ही, जब भी पानी या कोई अन्य पेय पदार्थ पिएं, तो ग्यारह (11) बार "या शाफ़ी-يَا شَافِي" पढ़कर उस पर दम कर लें।

दवा या इंजेक्शन की प्रतिक्रिया (Reaction)

कभी-कभी कोई तीव्र अथवा विषाक्त औषधि प्रयोग करने से रक्त विषाक्त (Toxic) हो जाता है, जिससे शरीर पर दाने (Rashes) पड़ जाते हैं, पित्त (Bile) बढ़ सकता है, तथा रोगी को मस्तिष्क में चुभन एवं शरीर में झटके (Convulsions) अनुभव हो सकते हैं। यदि यह प्रभाव अधिक बढ़ जाए, तो मरीज़ बेहोश भी हो सकता है। इसी प्रकार, फूड पॉइजनिंग (Food Poisoning) अथवा साँप, बिच्छू, मधुमक्खी या अन्य जहरीले जीवों के काटने से भी रक्त दूषित हो सकता है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
 یَا رَحِیْمُ یَا اللّٰهُ یَا مُرِیْدُ یَا رَحِیْمُ یَا اللّٰهُ یَا مُرِیْدُ
 یَا رَحِیْمُ یَا اللّٰهُ یَا مُرِیْدُ یَا بَدِیْعُ الْعَجَائِبِ
 بِالْحَیْرِ یَا بَدِیْعُ

ऐसी स्थिति में एक बार यह आयत पढ़ें, फिर पानी पर दम करके रोगी को पिलाएँ एवं चिकनी मिट्टी के ढेले पर दम करके उसे बार-बार सूँघाएँ।

दाँत पीसने की आदत

नींद के दौरान दाँत पीसने (Bruxism) की बीमारी कई कारणों से हो सकती है। इसका एक प्रमुख कारण आंतों में कीड़े (Parasites) भी हो सकते हैं। चाहे कारण कुछ भी हो,

जब रोगी गहरी नींद में सो जाए, तो उसके सिरहाने के पास खड़े होकर इतनी धीमी आवाज़ में कि उसकी नींद बाधित न हो, कुछ दिनों तक कोई व्यक्ति "खयाअस" (Kaf Ha Ya Ain Sad) का पाठ करे। ध्यान रखें कि उच्चारण संतुलित हो एवं हर शब्द के मध्य उचित अंतराल रखा जाए।

दमा (Asthma)

ईश्वर द्वारा निर्धारित प्राकृतिक नियमों के अनुसार, मनुष्य वास्तव में प्रकाश (Light) का एक संयोजन है। मानव जीवन एवं स्वास्थ्य का आधार इन प्रकाशीय ऊर्जाओं पर ही निर्भर करता है। कई रोग प्रकाश की कमी से उत्पन्न होते हैं, जबकि कुछ रोग प्रकाश की अधिकता के कारण जन्म लेते हैं।

प्रकाश केवल एक प्रकार का नहीं होता, बल्कि मानव जीवन में विभिन्न प्रकार के प्रकाशीय प्रभाव होते हैं, जिनकी गणना मानवीय बुद्धि से परे है। समझने के लिए, इन ऊर्जाओं को विभिन्न रंगों के रूप में विभाजित किया जा सकता है। मनुष्य को ये प्रकाशीय ऊर्जा कहाँ से प्राप्त होती हैं, और मस्तिष्क में उतरकर किस प्रकार विभाजित होती हैं, फिर ये मस्तिष्क की अरबों कोशिकाओं को प्रभावित कर इंद्रियों की संरचना कैसे करती हैं, इसका संपूर्ण विवरण "रंग एवं प्रकाश चिकित्सा" (Color and Light Therapy) में वर्णित है।

दमा एवं श्वसन तंत्र संबंधी रोग भी प्रकाशीय ऊर्जा (Light Energies) के असंतुलन के कारण उत्पन्न होते हैं। जो ऊर्जाएँ संपूर्ण शरीर में रक्त संचार को नियंत्रित करती हैं,

यदि उनमें असंतुलन आ जाए, तो रक्त की अशुद्धियाँ (Impurities) त्वचा के रोमछिद्रों (Pores) द्वारा पूरी तरह बाहर नहीं निकल पातीं।

जब यही रक्त फेफड़ों (Lungs) तक पहुँचता है, तो फेफड़ों की झिल्ली में अशुद्धियाँ (Impurities) जमा होने लगती हैं। धीरे-धीरे इन अशुद्धियों में दुर्गंध (Putrefaction) उत्पन्न होती है, फिर सूक्ष्म विषाणु (Virus) विकसित हो जाते हैं। जब फेफड़े इन सूक्ष्मजीवों से पूरी तरह भर जाते हैं, तो श्वसन प्रणाली (Respiratory System) प्रभावित होती है। फेफड़ों का पंपिंग तंत्र (Pumping System) ठीक से कार्य नहीं कर पाता, जिससे सांस लेने में कठिनाई होने लगती है, और यही स्थिति दमा (Asthma) कहलाती है। उपचार:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

يَا فَارِقُ يَا فَارِقُ يَا فَارِقُ

يَا فَارِقُ يَا فَارِقُ يَا فَارِقُ

يَا فَارِقُ يَا فَارِقُ يَا فَارِقُ

चीन मिट्टी की सफेद प्लेटों (Porcelain Plates) या सोने की पत्तियों (Gold Foil) पर पीले रंग (Zarda Color) से दिए गए विशिष्ट प्रतीक (Naqsh) को लिखें। इसके बाद, इस प्रतीक को पानी से धोकर रोगी को दिन में तीन बार पिलाएँ।

सावधानियाँ: रोगी को स्वच्छ एवं प्रदूषण रहित वातावरण में रखना चाहिए। न मी वाली हवा (Humid Air), खट्टी (Sour) एवं ठंडी वस्तुएँ इस रोग में हानिकारक हैं।

अत्यधिक ठंडा (Cold) एवं अधिक गर्म (Hot) मौसम भी दमा रोगियों के लिए प्रतिकूल होता है।

दाद

सुबह, दोपहर और शाम

رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۝

ग्यारह ग्यारह बार पढ़कर दाद पर दम करें।

दाँतों के समस्त रोग

यदि दाँत उम्र से पहले हिलने लगें, पाइरिया हो, मसूड़े गल रहे हों, दाँतों पर चूना जम जाए, कीड़ा लग जाए, काले धब्बे पड़ जाएँ, हल्दी जैसा पीला रंग आ जाए या दाँत की हड्डी टुकड़ों में टूटने लगे तो इसके लिए: प्रत्येक सुबह खाली पेट **Wal-Jurūh** नौ बार पढ़कर एक गिलास पानी पर दम करें। उसमें से एक घूँट पानी अलग कर लें और शेष पानी से अच्छी तरह कुल्ला करें। कुल्ला करने के बाद अलग किया हुआ घूँट पी लें। आधे घंटे तक कुछ भी खाने-पीने से परहेज़ करें।

दर्द दंत या दाढ़ में पीड़ा

जिस दंत या दाढ़ में पीड़ा हो, उसे अंगुलियों से हल्के दबाव के साथ पकड़कर छोड़ दें और अंगुलियों पर निम्नलिखित आयत का उच्चारण कर फूँक दें:

بِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا

(Izā zulzilatil-arḍu zilzālahā)

मस्तिष्कीय पीड़ा (सिरदर्द)

एक स्वच्छ सूती वस्त्र (रूमाल) पर

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

رَضَيْنَا بِالْقَضِيْنَا فَاتُو بُرْهَانَ أَلْفَ مَرَّةٍ

(Raḍīnā bi-al-qāḍainā faātū burhān alfa marratan)

निम्नलिखित इबारत का उच्चारण कर फूँक दें और उसमें गिरह बाँध दें: इस वस्त्र को मस्तिष्क पर इस प्रकार बाँधें कि गिरह कनपटी के समीप स्थित हो। यदि पीड़ा दीर्घकालिक हो, तो इस प्रक्रिया को प्रातःकाल बाँधकर रात्रि में शयन से पूर्व अल्प अवधि हेतु खोलकर पुनः बाँध दें। यह क्रम आवश्यकतानुसार निरंतर जारी रखें। वुजू या स्नान के समय इसे खोलने में कोई बाधा नहीं।

तीव्र शारीरिक पीड़ा (किसी भी अंग में होने वाला तीव्र दर्द)

यदि किसी भी शारीरिक अंग में किसी भी कारणवश तीव्र पीड़ा अनुभव हो,

إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زُلْزَالَهَا وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا

(Izā zulzilatil-arḍu zilzālahā wa akhrajatil-arḍu athqālahā)

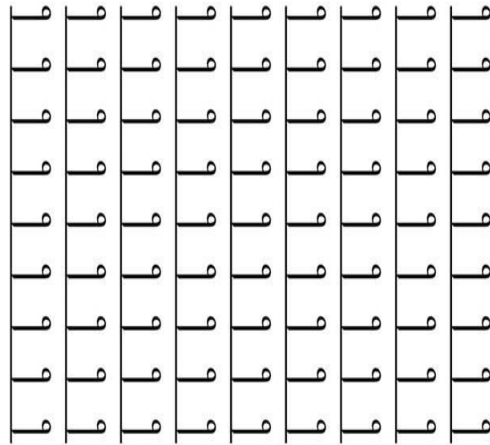
ऐसी ध्वनि में जिसका रोगी श्रवण न कर सके, प्रातः एवं सायं सात (7) बार उच्चारण कर दाहिने कान में फूँक दें।

कान में पीड़ा

पर्याप्त मात्रा में शुद्ध सरसों के तेल को हल्का गर्म करें, फिर उस पर एक बार "सूरः कुल अ'ऊधु बिरब्बिल फलक-^١ قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ" का पाठ कर दम करें और प्रभावित कान में कुछ बूँदें डालें। तेल को सदैव हल्का गर्म करके ही कान में डालना चाहिए।

मेरुदंड (रीढ़ की हड्डी) में पीड़ा

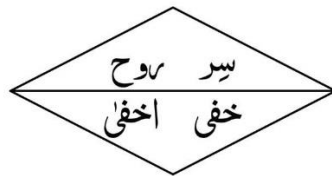
गर्दन तोड़ बुखार, कशेरुकाओं (vertebrae) के अनुचित स्थान पर पहुँचने, उनके मध्य रिक्तता उत्पन्न होने, मेरुदंड में दरार पड़ने, मेरुदंड के अनुपात में विकृति आने अथवा तंत्रिका तंत्र (spinal cord) में किसी प्रकार की क्षति होने की स्थिति में, नीली



एवं पीली स्याही को मिश्रित कर निम्नलिखित तावीज़ लिखा जाए। इसे मोमजामा कर प्रभावित क्षेत्र पर नीले धागे से बाँध दिया जाए।

गर्दन एवं कमर में पीड़ा

यदि पीड़ा कूल्हों के मध्य मेरुदंड के जोड़ में हो, या मेरुदंड के ऊपरी भाग में गर्दन के जोड़ पर हो, अथवा संपूर्ण मेरुदंड में किसी स्थान पर तीव्र हो, तथा उसकी तरंगें मस्तिष्क तक पहुँचती हों, तो इस स्थिति में ऊपर-नीचे दो त्रिकोण (triangle) बनाकर निम्नलिखित



बीरी की लकड़ी या 'ओद' (oud) की लकड़ी पर शुद्ध रूप से लिखकर उसे गले में लटका लें।

यदि पीड़ा तीव्र हो तो कागज़ या चीनी की प्लेट पर लिखकर उसे पानी से धोकर मरीज को पिलाएं।

गुर्दों में पीड़ा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

ل م ن ق

اَلْمَلِکُ الْقُدُّوْسُ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمِ

۷۹۵

۷۹۵

۷۹۵

गुर्दे का दर्द चाहे वह वायुजन्य हो या पथरी के कारण हो, दोनों ही स्थितियों में किसी मोमी कागज पर उपरोक्त वर्णित चित्र या तावीज़ लिखकर उसे डोरी से इस प्रकार कमर में बांधें कि तावीज़ गुर्दों के पास रहे। इस तावीज़ को पानी से धोकर पीने से भी लाभकारी परिणाम मिलते हैं। यदि गुर्दे में पथरी हो तो वह रेत के रूप में पेशाब के द्वारा बाहर निकल जाती है।

अर्थराइटिस (लंगड़ी का दर्द)

यह रोग रोगी को चलने-फिरने में असमर्थ बना देता है। केवल प्रभावित अंग ही शरीर का भार नहीं सहन कर पाता, बल्कि कई बार कमर में भी झुकाव आ जाता है। आत्मिक चिकित्सा में इस दर्द का मुख्य कारण गुर्दे की क्रियावली में गड़बड़ी मानी जाती है। साथ ही गुर्दों में गैस का संचित होना, जिससे न केवल दर्द होता है, बल्कि

पथरी भी बन सकती है। इससे मुक्ति प्राप्त करने के लिए जब भी पानी पिएं, "Yā Shāfi al-Abrār Muqīman Sadīdan" **يَا شَافِي الْأَبْرَارِ مُقِيمًا سَدِيدًا** का पाठ करें और उस पर फूंक मारें।

एड़ी का दर्द

यह दर्द चलते समय, उठते-बैठते समय और यहां तक कि वजू करने के दौरान भी महसूस हो सकता है। इसके लिए "Wa-msahū bi-ru'ūsikum wa-arjulakum ilā al-ka'bayn" **وَأَمْسَحُوا بِرُؤُوسِكُمْ وَأَرْجُلِكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ** का नियमित जाप करें। जब दर्द समाप्त हो जाए, तो इस जाप को बंद कर दें।

आधा सिर का दर्द

इस प्रकार के दर्द में रोगी को सूर्योदय से पहले इस प्रकार बिठाया जाता है कि उसका मुँह पूरब की दिशा में हो। रोगी से कहा जाता है कि वह सिर के उस भाग पर हाथ रखे, जहाँ दर्द हो। फिर, एक अल्पवयस्क व्यक्ति से "Bismillāhi ar-Raḥmāni ar-Raḥīmi Farīqun Kadhdhabta Muhaym" **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ فَرِيقٌ كَذَّبَتْ مُهَيْمٌ** का पाठ कर फूंक मारी जाती है।

डीप्थीरिया (Diphtheria) या खूनाक

यह रोग सामान्यतः निर्दोष बच्चों को होता है। इस रोग में सूक्ष्म कीटाणु जो आँख से भी न दिखाई दें, श्वसन नलिका में इतनी तीव्रता से विकसित होते हैं कि कुछ घंटों में श्वसन नलिका बंद हो जाती है। यदि समय पर उपचार नहीं किया जाता है तो ये कीटाणु झिल्ली के रूप में श्वसन नलिका को पूरी तरह से बंद कर देते हैं और रोगी की सांस रुक जाती है। इस रोग से मुक्ति पाने के लिए " مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ " **Manzhā alladhī yashfa‘u ‘indahū illā bi-idhnihi** " का पाठ करके पानी पर दम करें और इस पानी को बार-बार गले में डालें तथा गले को सहलाते रहें ताकि पानी नीचे उतर सके। इस रोग में लापरवाही न करें, यह अत्यंत घातक है।

स्वाद का बिगड़ना

यदि स्वाद बिगड़ जाए और सब कुछ फीका या कड़वा लगे तो सूर्योदय से पूर्व नाशते से पहले " **As-sinu bis-sin** **السِّنِ بِالسِّنِ** " का जाप करते हुए पानी पर दम करें और उस पानी को तीन घंटे में पिएं, ध्यान रहे पानी का मुँह पूर्व की दिशा में हो।

मधुमेह (Diabetes)

शुगर चाहे पेशाब में हो या रक्त में, दोनों ही स्थितियों में निम्नलिखित तावीज़ को कागज या चीनी की प्लेट पर केसर और गुलाब के अर्क से लिखकर तीनों समय भोजन से पंद्रह से बीस मिनट पहले पानी से धोकर पिएं।

ع	ص	م	ح
ء	ا	ر	ق
ا	ل	ل	ت
ل	ت	ا	ى

मधुमेह के रोगी के लिए मिठास से परहेज अत्यंत आवश्यक है, लेकिन जामुन इस रोग में लाभकारी है। काले चने (छिलकों सहित) को पीसकर इससे बनी रोटी खाने से विशेष रूप से लाभ होता है। यह मधुमेह के इलाज में प्रभावी माना जाता है।

ज़ेहन का माओफ़ होना

यदि स्थायी मानसिक दबाव, तंत्रिका तनाव या अन्य किसी कारण से ज़ेहन माओफ़ हो, यानी कोई बात समझ में न आए, मानसिक या शारीरिक कार्य करते समय ज़ेहन साथ न दे, तो ऐसी स्थिति में काली स्याही से लोबान के बहुत छोटे-छोटे टुकड़ों पर

"9" का अंक लिखें और इन टुकड़ों को जलते हुए कोयले पर डालकर धूनी की तरह जलाएं।

यह प्रक्रिया ऐसी जगह करनी चाहिए जहाँ केवल रोगी हो और कोई अन्य व्यक्ति न हो, और रात का समय सबसे उपयुक्त है। धूनी लेने के बाद ध्यान करें, अर्थात् अपनी आँखें बंद करके अपने दिल के अंदर देखें। ध्यान 15 मिनट से लेकर आधे घंटे तक किया जाए। इस प्रक्रिया से ज़ेहन में ऐसी रोशनियाँ स्थानांतरित होने लगती हैं, जिससे समस्याओं का समाधान आसानी से समझ में आता है और ज़ेहन में परिस्थितियों का सामना करने की शक्ति उत्पन्न होती है।

रग फटने से खून आना

यदि किसी गंभीर चोट के कारण कोई रग फट जाए और उससे खून बहने लगे, तो यह खतरनाक स्थिति है। ऐसे में लापरवाही नहीं करनी चाहिए। तुरंत उपचार के साथ-साथ

कान / बहर मिदादं लिकलमाति रब्बी
 كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِكَلِمَاتِ رَبِّي

प्लेट पर या तश्तरी पर खाने की ज़र्द रंग की स्याही से लिखकर रोगी को बार-बार पिलाएं। बेहोशी की हालत में पानी चम्मच से उसके गले में डालें।

रशा (कंपकंपी)

किसी मोमी कागज़ पर

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
الرَّحْمٰنُ عَلَّمَ الْقُرْآنَ خَلَقَ الْاِنْسَانَ
عَلَّمَهُ الْبَيَانَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ

Ar-Raḥmānu 'Allama al-Qur'āna Khalaqa al-Insāna

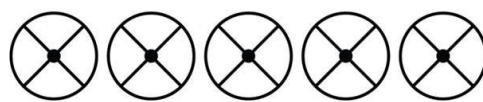
'Allamahu al-Bayān Ash-Shamsu wal-Qamaru bi-Ḥusbān

लिखकर एक तावीज गले में पहनाएं और एक तावीज सुबह नहार मुँह रोज़ाना पानी से धोकर काफ़ी अवधि तक पिलाएं।

रसूली (दर्द)

यदि रसूली शरीर के किसी भी स्थान पर हो,

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
يَا بَدْرِعُ الْعَجَائِبِ يَا خَيْرِ يَا بَدْرِعُ



तो (दायरों के बीच में बिंदी लगाकर इसे इस प्रकार काटें कि एक क्रॉस बन जाए) कागज़ या प्लेट पर ज़र्द रंग या जाफ़रान और अर्क-ए-गुलाब से लिखकर दिन में तीन

बार कई महीनों तक सेवन करें। इस प्रक्रिया को तब तक जारी रखें जब तक रसूला (गांठ) समाप्त न हो जाए।

सैयदना हुज़ूर अलैहिस्सलात वस्सलाम की ज़ियारत और

क्रदमबोसी

प्यारे नबी, शफीउल-मज़म्बीन, रहमतुल-लिल-आलमीन, सर्कार-ए-दो आलम, आका-ए-दो जहान, सिरवर-ए-कायनात हुज़ूर अलैहिस्सलात वस्सलाम की ज़ियारत और क्रदमबोसी प्राप्त करने के लिए, ईशा की नमाज़ के बाद सारे कार्यों से मुक्ति प्राप्त कर रात को सोने से पूर्व,

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى حَبِيْبِهِ مُحَمَّدٍ وَسَلَّمَ
 بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيْمِ
 يَا وَدُودُ يَا بَدِيْعُ الْعَجَائِبِ يَا خَيْرِ يَا بَدِيْعُ
 بِسْمِ اللهِ الْوَاسِعِ جَلَّ جَلَالُهُ يَا حَفِيْظُ

तीन सौ बार पढ़कर आँखें बंद करके पंद्रह से बीस मिनट तक हुज़ूर अकराम अलैहिस्सलात वस्सलाम का तसव्वर करें। और बिना बात किए, उसी तसव्वर को बनाए रखते हुए सो जाएं।

इक्कीस (21) दिनों के इस अमल (प्रक्रिया) की बरकत से, ईशा अल्लाह, हुज़ूर की ज़ियारत और क्रदमबोसी की साअदत प्राप्त होगी।

ज़ियारत की साअदत प्राप्त होने के बाद, मीठे चावल पका कर बच्चों को खिला दें।

शादी के लिए

सभी कामों से मुक्त होकर रात को सोने से पहले पहले और आखिर में ग्यारह-ग्यारह बार दुरुद शरीफ पढ़ने के बाद सूरह इखलास इकतालीस (41) बार पढ़ें और केवल शादी के लिए दुआ करें। इस कार्य की अवधि नब्बे (90) दिन है। इस दौरान यदि मंगनी या शादी हो जाए तो भी नब्बे (90) दिन पूरे करना आवश्यक है। महिलाएं अनुपस्थिति के दिनों की गिनती करके बाद में उन्हें पूरा कर सकती हैं।

पति के गुस्से को समाप्त करने के लिए

पत्नी, पति की तुलना में अधिक प्रेम करने वाली होती है। उसके अंदर प्रेम का ऐसा सागर होता है, जिसके कारण मानवता की वृद्धि और सुरक्षा जारी रहती है। यदि पत्नी के साथ पूरी तरह से प्रेम किया जाए और पति द्वारा उसे मानसिक शांति मिले, तो समाज में अधिकांश बुराईयां समाप्त हो सकती हैं, जिसका सीधा असर आने वाली पीढ़ियों पर पड़ता है।

पति के दुराचार से छुटकारा पाने के लिए, इशा की नमाज के बाद पत्नी, पहले और आखिर में ग्यारह-ग्यारह बार दुरुद शरीफ के साथ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

بِسْمِ اللَّهِ الْوَاسِعِ جَلَّ جَلَالُهُ

Bismi llāhi al-Wāsi' u Jalla Jalāluhu

मसले पर बैठकर एक तसब्बीह पढ़े और दुआ करे।

अगर ऐसा स्थिति उत्पन्न हो जाए कि पति तलाक देने के लिए तैयार हो या पत्नी को अलग करने की जिद हो या पत्नी को घर से बाहर निकाल दे और تلاک लेने के लिए उसे घर न बुलाए, तो पत्नी को चाहिए कि रात को सोने से पहले वुजू करके मसले पर बैठकर इकतालीस (41) बार सूरह $\text{هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ}$ पूरी सूरह पढ़े, फिर बिना बात किए बिस्तर में जाए और आंखें बंद करके सो जाए और अपने पति का ध्यान करते हुए सो जाए। इस कार्य की अवधि भी नब्बे (90) दिन है।

पति-पत्नी का झगड़ा

हर व्यक्ति तीन कमजोरियों से बना होता है:

1. सत्ता की इच्छा
2. यौन शक्ति का प्रभुत्व
3. क्रोध या गुस्सा

ये तीनों कमजोरियां पुरुष और महिला दोनों में होती हैं। कुछ घरों में महिलाओं में इतना गुस्सा होता है कि पुरुष की ज़िंदगी कठिन हो जाती है। इसका इलाज वही है, जैसा हमने "पति के गुस्से को समाप्त करने के लिए" के शीर्षक में बताया है, केवल इस बार पत्नी की जगह पति यह कार्य करें।

पति और पत्नी का हाथापाई करना

ताली दोनों हाथों से बजती है। जब पति-पत्नी बिना वजह लड़ते रहते हैं, तो उस घर का माहौल बिगड़ जाता है और बच्चों की शिक्षा में कमी आ जाती है। इसका समाधान इस तरह करना चाहिए कि पति-पत्नी में से कोई एक, बच्चों की शिक्षा के लिए त्याग करें और चुप रहें। वह उदाहरण आपने सुना ही होगा "एक चुप सौ को हराए"। अगर दोनों में से किसी की भी प्रकृति में त्याग न हो तो

وَالْكَاطِمِينَ الْغَيْظَ وَالْعَافِينَ عَنِ النَّاسِ

وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ

Wa-al-Kāzimīna al-Ghayza wa-al-‘Āfina ‘Ani an-Nāsi

wa-Allāhu Yuḥibbu al-Muḥsinīn

हर नमाज के बाद सौ (100) बार पढ़कर एक घूंट पानी पर दम करके पिएं।

(आयत का अनुवाद यह है: "जो लोग क्रोध को पी जाते हैं और लोगों को माफ कर देते हैं। अल्लाह ऐसे भले लोगों से प्रेम करता है।")

सचेतन दुर्बलता को समाप्त करने के लिए

मानव शरीर में दो प्रकार के मानसिक तंत्र काम करते हैं। एक को हम सचेतन (conscious) कहते हैं, जबकि दूसरे को अवचेतन (unconscious) कहा जाता है। सचेतन अवचेतन द्वारा उत्पन्न प्रेरणाओं को स्वीकार कर हमारे मानसिक और शारीरिक अंगों के कार्यों का नियमन करता है, जिससे हम इन मानसिक और

يَا رَحِيمُ يَا اللَّهُ يَا مُرِيدُ
 يَا رَحِيمُ يَا اللَّهُ يَا مُرِيدُ
 يَا رَحِيمُ يَا اللَّهُ يَا مُرِيدُ
 يَا بَدِيعُ الْعَجَائِبِ يَا خَيْرُ الْخَيْرِ يَا بَدِيعُ

शारीरिक कार्यों को समझ और नियंत्रित करने में सक्षम होते हैं। यदि सचेतन दुर्बल होता है, तो वह अवचेतन की प्रेरणाओं को पूरी तरह से स्वीकार नहीं कर पाता, जिससे जीवन में कार्यों के निष्पादन में अनेक कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं। इस मानसिक दुर्बलता को समाप्त करने के लिए, हल्दी के रंग और गुलाब जल से चीनी की सफेद प्लेट पर निम्नलिखित तावीज़ लिखकर, सुबह के समय पानी से धोकर तीन माह तक सेवन कराएं।

तापीय रोग (Plague)

यह एक ऐसा रोग है, जो सामान्यतः चूहों के द्वारा उत्पन्न होता है। पहले यह रोग चूहों में, उनके शरीर पर उपस्थित कीटाणु (फ्लोज) के द्वारा फैलता है। उसके बाद, ये कीटाणु इंसानों तक पहुँचकर उनमें महामारी का रूप धारण कर लेते हैं। इस रोग का प्रारंभ एक जोड़ में सूजन (गांठ) के रूप में होता है और इसके साथ बुखार भी उत्पन्न होता है। सूजन जितनी अधिक गंभीर होती है, उतना ही बुखार बढ़ता जाता है। अंततः बुखार 108 डिग्री तक पहुँच सकता है और रोगी दो दिन या तीसरे दिन तक मृत्यु का शिकार हो जाता है। बुखार की स्थिति में वृद्धि से रोगी बेहोश हो जाता है

और किसी को पहचानने या बात करने में असमर्थ हो जाता है। कानों में जो आवाजें पहुँचती हैं, वे सुनाई देती हैं, लेकिन स्पष्ट रूप से नहीं सुनाई देतीं। सूजन आमतौर पर बगल या जांघों में होती है।

तापीय रोग के कीटाणु चूहों के बिलों से बाहर निकलकर मनुष्य के पैरों में चिपक जाते हैं और ऊपर की ओर बढ़ते जाते हैं। अंततः यह जांघों और बगल तक पहुँच जाते हैं। ये कीटाणु जांघों और बगल के मांस को अत्यधिक पसंद करते हैं। यह इतनी तीव्रता से फैलते हैं कि यदि एक मिनट में उनकी संख्या एक लाख हो, तो अगले ही मिनट में उनकी संख्या दस लाख हो सकती है। इसका उपचार निम्नलिखित है: (सूरा बकरा, आयत २२८)

الطَّلَاقُ مَرَّتَانٍ ۖ فَاِمْسَاكَ بِمَعْرُوفٍ اَوْ تَسْرِیْحٍ بِاِحْسَانٍ ۗ وَلَا یَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَاْخُذُوْا مِمَّا
اَتَيْنٰمُوْهُنَّ شَیْئًا اِلَّا اَنْ یَّخَافَا اِلَّا یُقِیْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۗ فَاِنْ خِفْتُمْ اِلَّا یُقِیْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ فَلَآ
جُنَاحَ عَلَیْهِمَا فِیْمَا افْتَتَدْتُمْ بِهٖ ۗ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَعْتَدُوْهَا ۗ وَمَنْ یَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظَّالِمُوْنَ

**Aṭ-Ṭalāqu Marratāni Fa-imsākun Bi-Ma'rūfin Aw Tasriḥun Bi-Iḥsān,
Wa Lā Yaḥillu Lakum An Ta'khudhū Mimmā Ātaytumūhunna
Shay'an Illā An Yakhāfā Allā Yuqīmā Ḥudūda Ilāh, Fa-in Khiftum
Allā Yuqīmā Ḥudūda Ilāhi Falā Junāḥa 'Alayhimā Fimā Aftadat Bihi,
Tilka Ḥudūdu Ilāhi Falā Ta'tadūhā, Wa Man Yata'adda Ḥudūda Ilāhi
Fa-ulā'ika Humu az-Zālimūn**

इस आयत के अनुसार, कोई व्यक्ति एक हजार बार इस आयत को पानी पर दम करके रोगी को एक-एक घूंट पानी में मिलाकर पिलाए। इसी प्रकार दिन में कम से कम पाँच बार यह प्रक्रिया दोहराई जाए। पहले घंटे के बाद दूसरे घंटे में, दूसरे घंटे के बाद चौथे घंटे में, चौथे घंटे के बाद सातवें घंटे में, और सातवें घंटे के बाद बारहवें घंटे

में यह कार्य किया जाए। यदि रोगी में सुधार हो, तो रात के समय भी यही प्रक्रिया करें। सुधार की पहचान यह है कि बुखार कम होना शुरू हो जाएगा और अंततः रोगी ठीक हो जाएगा।

आस्था का बिगड़ना

जब आस्था बिगड़ जाती है, तो मन में ऐसे विचार और शंकाएँ उत्पन्न होने लगती हैं जिनमें परमात्मा, रसूल और धर्म से विमुखता का अहसास होता है, और यह विमुखता अनैच्छिक होती है। आस्था की कमजोरी और आत्म-गिल्ट (विवेक की फटकार) के कारण एक अदृश्य, गंदा फोड़ा उसके अंदर विकसित हो जाता है, जो उसे इतना अशांत कर देता है कि इसकी तुलना किसी बड़ी बीमारी से भी नहीं की जा सकती। अल्लाह तआला हमें अपनी हिफाज़त में रखें। इस कष्टकारी स्थिति से मुक्ति पाने के लिए, ताजे या धुले हुए खद्दर या बारीक कपड़े का एक कुर्ता सिलवाना चाहिए। यह कुर्ता पूरे शरीर पर एक-एक इंच लंबा हो और टखनों तक नीचे जाए। उसकी आस्तीनें भी एक-एक इंच खुली हों। फिर इस कुर्ते को पहन कर किसी अंधरे कमरे में जाएं। (यदि कमरे में अंधेरा न हो तो उसे अंधेरा कर लिया जाए)। इस कुर्ते को पहन कर पंद्रह मिनट तक टहलें और टहलते समय निम्नलिखित आयतें पढ़ते रहें:

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ

Al-ḥamdu lillāhi rabbi al-‘ālamīn, ar-Raḥmāni ar-Raḥīm, Māliki yawmi ad-dīn

पंद्रह मिनट के बाद, अंधेरे में ही कुर्ता उतारकर उसे तह कर के उसी कमरे में किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें। यह कार्य तब तक किया जाए जब तक आस्था ठीक न हो जाए। केवल अंधेरा होना शर्त है।

महिलाओं के रोग

गर्भपात और बच्चों का जन्म के तुरंत बाद मर जाना

गर्भ में बच्चे का सही तरीके से विकास न होना या जन्म के बाद बच्चे का मर जाना, इन परिस्थितियों के कारण माँ के मस्तिष्क में उन कोशिकाओं की कमजोरी उत्पन्न होती है जो बच्चे की सृष्टि में काम करती हैं। माँ के मस्तिष्क में कमजोरी का मुख्य कारण मानसिक उलझनें, ल्यूकोरिया और घर का नाखुशगवार माहौल होते हैं। गर्भावस्था के दौरान अधिक या गलत दवाओं का उपयोग भी इस स्थिति को उत्पन्न कर सकता है।

इन कारणों के निवारण के साथ-साथ "उम अल-सिब्यान" (जिसका उल्लेख किताब के आरंभ में किया गया है) वाला तावीज़ पीले रंग के चिकने कागज पर लिख कर माँ को गर्भावस्था के प्रारंभिक दौर में अपने गले में पहनना चाहिए और प्रत्येक गुरुवार को शाम के समय तावीज़ को कपड़े के आवरण से निकाले बिना लोबान की धूनी देनी चाहिए। जन्म के बाद यह तावीज़ माँ अपने गले से उतार कर बच्चे के गले में पहनने दे।

बांझपन

बच्चे न होने के अनेकों कारण हो सकते हैं, जैसे कि महिला के आंतरिक अंगों में कोई रोग होना या पुरुष के शरीर में संतानोत्पत्ति के शुक्राणु का अभाव होना। यदि पुरुष और महिला दोनों की स्वास्थ्य स्थिति ठीक है और फिर भी गर्भधारण नहीं हो रहा, तो कुरआन की इन आयतों की बरकत से, इंशा अल्लाह, माँ की गोद भर जाएगी।

महिला को 100 बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
اِقْرَأِ بِسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَ ۝ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۝
حَمَّهٗ ۝ الرَّتَّفِ ۝ تِلْكَ اٰیٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِیْنِ ۝

Iqra' bismi rabbika allathee khalaq, khalaq al-insāna min 'alaq

Hā-Mīm, tilka āyātu al-kitābi al-mubīn

ईशा की नमाज़ के बाद पढ़कर, पानी पर दम करके, 90 दिनों तक खुद पिए और अपने पति को भी पिलाए। छुट्टी के दिन गिनकर बाद में पूरे किए जा सकते हैं।

महिनावारी की अनियमितता

महिनावारी की अनियमितता से महिलाओं में कई प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं। नलों में जलन, पेट का बढ़ना और निर्धारित समय से पहले अत्यधिक दर्द की स्थिति उत्पन्न होना आम है। यह भी देखा गया है कि यदि माहवारी सही समय और पूरी

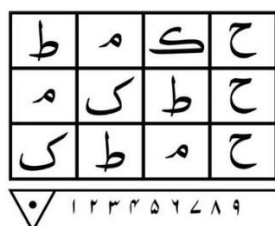
अवधि तक नहीं होती, तो महिलाओं के चेहरे पर बाल उग आते हैं। यदि अनियमितता पुरानी हो जाए और रोग का रूप धारण कर ले, तो गर्भाशय में सूजन आ जाती है, जिससे महिलाएं प्रजनन क्षमता खो देती हैं। इसका प्रभाव रूप और रंग पर भी पड़ता है और शरीर फूलने लगता है। खून गाढ़ा और संकेंद्रित हो सकता है, और कमर में दर्द और जोड़ों में टूटन जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। यदि "महिनावारी का सिस्टम" धीरे-धीरे कम हो कर उम्र से पहले पूरी तरह से बंद हो जाए, तो महिलाएँ पुरुष लक्षणों का अनुभव करने लगती हैं।

जैसे खाने और पानी पीने के बाद स्वाभाविक रूप से मल-मूत्र का होना जरूरी है, वैसे ही महिलाओं की सेहत के लिए "महिनावारी" भी अनिवार्य है। इसके लिए एक तावीज़ लिखा जा रहा है, जिसमें Bismillah शरीफ लिखना मना है।

महिनावारी की अनियमितता में यदि कमर में दर्द हो, तो यह तावीज़ पीठ पर इस तरह बांधें कि तावीज़ रीढ़ की हड्डी के आखिरी जोड़ से स्पर्श करता रहे। अगर नलों में जलन हो, तो यह तावीज़ नाभि के ऊपर बांधें। (नोट: तावीज़ को धागे में बांधा जाए, जिसका रंग बैंगनी या जामुनी हो, कपड़ा या किसी भी प्रकार की पट्टी का इस्तेमाल न करें।)

नहाने की आवश्यकता या शौच के समय भी तावीज़ को शरीर से अलग न करें। तावीज़ को मोम से ढक लें ताकि पानी गिरने से तावीज़ पर लिखे गए उकेरे गए निशान खराब न हों। तावीज़ इस प्रकार है:

(यहां तावीज़ का पाठ या विवरण दिया जाएगा)



मासिक धर्म की अधिकता

पीली रोशनी से ताबीज़ लिखकर गले में पहनें। यदि अधिकता अधिक हो, तो केवल तीन दिनों तक प्रतिदिन एक ताबीज़ सुबह खाली पेट पानी से धोकर पी लें।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
يَا عَجَائِبَ الْحَقِّ يَا وَرَاءَ الْخَلْقِ

ल्यूकोरिया (गर्भाशय के समस्त रोग)

هُوَ الْأَمْرُ هِيَ عَمَّا نَوِيْلُ
بِحَقِّ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ

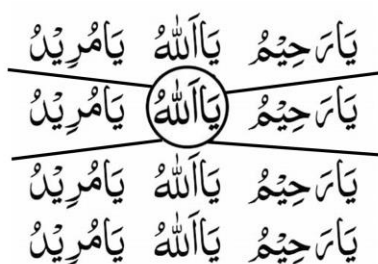
गर्भाशय के रोगों (जिनमें रसौली भी शामिल है) के लिए उपरोक्त ताबीज़ गले में पहनाएँ। यदि रोग गंभीर हो, तो प्रतिदिन एक ताबीज़ सुबह खाली पेट चालीस दिनों तक पानी से धोकर पीएँ या पिलाएँ।

प्रसव के बाद पेट का बढ़ना

अक्सर देखा गया है कि यदि बच्चे के जन्म के बाद पेट की सही देखभाल न की जाए तो पेट बढ़ जाता है। इसके लिए **تَطْيِرِ شَيْءِ الْحِرْصِ** Taṭīrin shay' al-ḥirṣ को पीले

रंग से प्लेट पर लिखें और सुबह, दोपहर और शाम एक-एक प्लेट पानी से धोकर पिलाएँ, जब तक कि पेट अपनी वास्तविक स्थिति में न आ जाए।

चिल्ला की समस्त तकलीफें



प्रसव के बाद चिल्ला (विश्राम अवधि) के दौरान महिलाएँ विभिन्न समस्याओं का सामना करती हैं या कर सकती हैं।

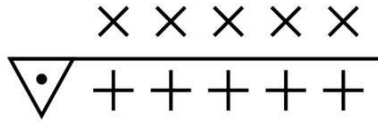
इनसे पूर्णतः सुरक्षित रहने के लिए, उपरोक्त नक़्श (लिखित ताबीज़) को पीले रंग से मोमी कागज पर लिखकर ताबीज़ में बाँधें।

ताबीज़ बनाने की विधि: कच्चे नीले धागे के ग्यारह तार लें और महिला की ऊँचाई के अनुसार माप लें। इसे दोहराकर या तिहराकर इतना मोटा कर लें कि ग्यारह गाँठें लगाने के बाद इसे गले में आसानी से पहना जा सके। फिर तीन बार

"या रहीम, या अल्लाह, या मुरीद-**يَا رَحِيمُ يَا اللَّهُ يَا مُرِيدُ**"

पढ़ें और हर बार फूँक मारकर एक गाँठ लगाएँ। इस प्रकार, अनुमानित समान दूरी पर ग्यारह गाँठें लगाएँ। चिल्ला का स्नान करने के बाद, इस ताबीज़ को गले से उतारकर किसी गड्ढे में दफना दें।

बच्चे के जन्म में आसानी



उपरोक्त नक़्श (लिखित ताबीज़) को मोमी कागज़ पर लिखकर प्रसव के समय गर्भवती की दाईं जांघ पर बाँधें। इंशा अल्लाह, प्रसव आसानी से होगा।

सावधानी: यह ताबीज़ तब तक जांघ पर न बाँधें जब तक कि प्रसव के लक्षण शुरू न हो जाएँ। यदि पहले बाँध दिया जाए, तो प्रसव पूर्व-समय पर हो सकता है, जिससे बच्चे पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

दूध की कमी

वह महिलाएँ जो अपने बच्चे को स्तनपान कराना चाहती हैं लेकिन दूध की मात्रा अपर्याप्त होती है, वे निम्नलिखित नक़्श

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

مِنْ ثَمَرَةِ رَزَقًا

९९	९९	९९
९९	९९	९९
९९	९९	९९

चीनी की प्लेटों पर पीले रंग से लिखकर एक-एक प्लेट सुबह, दोपहर और शाम पानी से धोकर पिएँ। आवश्यकता अनुसार इस अमल को जारी रखें और जब दूध उतरने लगे, तो यह प्रक्रिया रोक दें।

थनीला

थनीला एक ऐसा रोग है, जिसका यदि सही इलाज न किया जाए, तो यह कैंसर का रूप ले सकता है। इससे छुटकारा पाने के लिए तीन बार

مَا فِي قَلْبِي غَيْرَ اللَّهِ

Mā fi qalbī ghayra llāh

पढ़कर, एक बड़े प्याले में गुनगुने पानी पर दम (फूँक) करें। तीन घूँट पानी पिएँ और शेष पानी से प्रभावित स्तन को धोएँ। अधिकतम तीन बार यह प्रक्रिया दोहराएँ।

सीने का समुचित विकास

स्त्रियों का सौंदर्य, मातृत्व एवं शारीरिक संरचना उनके स्तनों के उचित विकास से गहराई से संबद्ध है। स्तनों का गदाज़ (सुडौल एवं मृदु) होना स्त्री-पुरुष भेद का एक प्राकृतिक संकेतक भी है। जिन स्त्रियों के स्तनों का पूर्ण विकास नहीं होता, वे जैविक एवं सौंदर्यात्मक दृष्टि से असंतोष का अनुभव कर सकती हैं। इस प्राकृतिक संतुलन की प्राप्ति हेतु सूरह अत-तीन की प्रथम आयत

Wa at-Tīn wa az-Zaytūn

وَالْتِّينِ وَالزَّيْتُونِ

को प्रतिदिन रात्रि में शयन से पूर्व 100 बार पढ़कर स्तनों पर फूँक मारें तथा निर्वाक (बिना बोले) सो जाएँ। यह प्रक्रिया 90 दिनों तक निरंतर अपनाएँ। साथ ही, तीन माह तक प्रतिदिन 60 ग्राम (एक छटांक) पनीर का सेवन करें।

चेहरे एवं शरीर पर अनावश्यक रोमों (बालों) की समस्या

कुरआन में यह उद्घोषित किया गया है कि अल्लाह तआला ने समस्त सृष्टि को एक सुनिश्चित मात्रात्मक संतुलन (divine proportion) के आधार पर उत्पन्न किया है। यही संतुलन स्त्री एवं पुरुष के बीच जैविक एवं शारीरिक भिन्नता को परिभाषित करता है।

मानव शरीर में रक्त प्रवाहित रहता है तथा वायु, प्रकाश एवं कॉस्मिक ऊर्जा शरीर में सतत प्रविष्ट होती रहती है। यह जैविक प्रक्रियाएँ शरीर के विभिन्न छिद्रों (pores) के माध्यम से विषैले तत्वों को पसीने एवं रोमों (बालों) के रूप में निष्कासित करती हैं। जिन अंगों में रक्त संचार अधिक तीव्र होता है, वहाँ रोमों की अधिकता भी देखी जाती है। पुरुषों के चेहरे पर दाढ़ी इसी कारण विकसित होती है, किंतु स्त्रियों में यह प्रक्रिया मासिक धर्म चक्र (menstrual cycle) के माध्यम से नियंत्रित होती है। यदि किसी कारणवश यह चक्र व्यवस्थित न रहे, तो शरीर में विषैले तत्वों के निष्कासन में बाधा उत्पन्न होती है, जिससे स्त्रियों के चेहरे एवं शरीर पर अनावश्यक बाल विकसित होने लगते हैं।

इस जैविक असंतुलन को सुधारने के लिए निम्नलिखित विधि अपनाएँ:

250 ग्राम (एक पाव) कलौंजी को शुद्ध जल से धोकर धूप में पूर्णरूपेण सुखा लें। इसे नीले रंग की पारदर्शी कांच की शीशी में भरकर रखें। इशा की नमाज़ के उपरांत प्रतिदिन 100 बार

فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ

Fī sittati ayyāmin thumma istawā ‘alā al-‘arsh

पढ़कर इस कलौंजी पर फूँक मारें एवं शीशी का ढक्कन बंद कर दें। यह क्रम 21 दिनों तक निरंतर दोहराएँ। 22वें दिन से, प्रतिदिन प्रातःकाल खाली पेट 1/4 चम्मच (छोटा चाय चम्मच) कलौंजी जल के 2-3 घूँट के साथ ग्रहण करें। कलौंजी सेवन के 30 मिनट बाद तक किसी भी अन्य खाद्य-पदार्थ का सेवन निषिद्ध है। जब तक संपूर्ण 250 ग्राम कलौंजी समाप्त न हो जाए, इस प्रक्रिया को जारी रखें।

हिस्टीरिया

रोग की तीव्रता में निम्नलिखित तावीज़ को पीली स्याही से लिखकर बत्ती बना लें। इस कागज़ की बत्ती को रुई में लपेटकर बाती बना लें और इसे घी या जैतून के तेल में ऐसी जगह जलाएं, जहां रोगी को धुआं लगे।

۷۸۲

يَا فَتَّاحُ	يَا فَتَّاحُ	يَا فَتَّاحُ
يَا فَتَّاحُ	يَا فَتَّاحُ	يَا فَتَّاحُ
يَا فَتَّاحُ	يَا فَتَّاحُ	يَا فَتَّاحُ

फ्राइंग पैन में थोड़ी चीनी डालकर आग पर रखें, ध्यान रखें कि चीनी जले नहीं। जब रंग भूरा हो जाए, तो उतारकर आधा कटोरा पानी डालें और इस पानी से तावीज़ को धो लें। ग्यारह दिनों तक प्रतिदिन एक तावीज़ का पानी पिलाएं और धुले हुए तावीज़ का कागज़ जला दें। खाने में सामान्य रूप से जितना नमक लिया जाता है, उसमें तीन-चौथाई कमी कर दें और बाज़ार का पिसा हुआ नमक बिल्कुल न लें। लाहौरी साबुत नमक घर में पीसकर प्रयोग करें।

अत्यधिक क्रोध

सामान्यतः यह देखा गया है कि कमज़ोर तंत्रिका तंत्र वाले व्यक्तियों को अधिक क्रोध आता है। कुछ लोग सामाजिक कठोरता, अभाव की भावना या श्रेष्ठता के अहसास की वजह से भी अत्यधिक क्रोधित होते हैं। यह भी देखा गया है कि कुछ लोग बाहर मित्रों के बीच सहनशील और विनम्र होते हैं, लेकिन घर में पत्नी और बच्चों के सामने गुस्से में रहते हैं। ऐसे लोगों में किसी न किसी रूप में अधिकार की भावना होती है।

यदि रोगी स्वयं इस क्रोध से मुक्ति चाहता है, तो क्रोध के समय एक बार "या वदूद" (يَا وَدُودُ) पढ़कर पानी पर दम करें और तीन सांस में पानी पी लें। यदि घर के अन्य सदस्य किसी व्यक्ति के क्रोध से मुक्ति चाहते हैं, तो उन्हें यह करना चाहिए कि सूर्योदय से पहले एक घूंट पानी पर "या वदूद" (يَا وَدُودُ) पढ़कर रोगी को खाली पेट पिला दें। यदि यह संभव न हो, तो यह पढ़ा

हुआ पानी उस मटके में डाल दें जिससे सभी घरवाले पानी पीते हों। इस प्रक्रिया को अधिकतम चालीस दिनों तक जारी रखें।

फालिज और लकवा

पुस्तक "रंग और रोशनी से उपचार" में फालिज, पोलियो और लकवे के कारकों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई है। संक्षेप में, यह समझना आवश्यक है कि मस्तिष्क के भीतर प्रकाश की संरचनात्मक विभाजन प्रणाली ही मानसिक, स्नायविक एवं शारीरिक स्वास्थ्य का निर्धारण करती है। जब प्रकाशीय धारा उम्मुद्दिमाग से प्रवाहित होती है और कोई ऐसा कारक उत्पन्न हो जाता है जिससे इस प्रवाह के मध्य कॉस्मिक रे (Cosmic Ray) आकर व्यवधान उत्पन्न कर देती है तथा अपने मूल स्थान से न्यूनतम चार इंच दाहिनी ओर विस्थापित हो जाती है, तब विद्युत-चुंबकीय प्रणाली बाधित हो जाती है। परिणामस्वरूप, कंधे से लेकर पैर तक प्रभावित होता है, जिसे फालिज अथवा पोलियो कहा जाता है।

लकवे की अवस्था मुख्य रूप से स्नायु-तंत्र से संबंधित है। यह केवल उम्मुद्दिमाग के असंतुलन के कारण उत्पन्न नहीं होती। जब मस्तिष्कीय कोशिकाओं की मध्यवर्ती तरंग एक विशिष्ट दिशा में तीव्रता से प्रवाहित होती है और उसका प्रभाव चेहरे की किसी विशेष दिशा में केंद्रित हो जाता है, तब यह चेहरे की पेशियों को विकृत कर देता है। यह विकार सीधे कान, नेत्र, नासिका एवं जबड़े पर प्रभाव डालता है। कुछ परिस्थितियों में दृष्टि-संबंधी क्षमताएं भी प्रभावित हो सकती हैं। नासिका की

अस्थियां विकृत हो सकती हैं तथा जबड़े का वह भाग, जो दंत संरचना को नियंत्रित करता है, भी विकारग्रस्त हो सकता है।

चिकित्सा विधि:

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

رَمِيمٌ فَرَقُ الْحَامِ

△
٢٩ ١١ ١٩ ٢٤ ٣١ ٢١

खाद्य श्रेणी में प्रयुक्त पीले वर्णक को जल में विलयित कर स्याही तैयार करें। इस स्याही से निर्दिष्ट तावीज़ तीन चीनी निर्मित पात्रों पर उकेरें एवं प्रातः, सायं तथा रात्रिकाल में स्वच्छ जल से धोकर रोगी को सेवन कराएं। इसी पीली स्याही से तावीज़ को चिकने एवं मोटे, लगभग एक बालिशत विस्तार वाले पत्र पर संकलित करें एवं दिन में तीन बार मस्तक, ग्रीवा, ललाट एवं मुखमंडल पर लेपित करें। उपचार के दौरान फालिज एवं लकवे से संबंधित अनुशासनात्मक परहेज अनिवार्य रूप से अपनाएं।

फिस्टुला (Fistula) अथवा भगंदर

خَلَقَ الْإِنْسَانَ ۝

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللَّوْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ۝

मोम-आवृत पत्र पर चालीस तावीज़ संकलित करें। इसके लिए खाद्य पीले वर्णक से निर्मित स्याही का प्रयोग करें। प्रतिदिन प्रातःकाल, निराहार अवस्था में एक तावीज़ को जल से धोकर चालीस दिन तक नियमित सेवन कराएं। इस चिकित्सा-प्रक्रिया के दौरान लाल मिर्च तथा समस्त प्रकार के मांसाहार (जिसमें अंडा भी सम्मिलित है) का संपूर्ण निषेध अनिवार्य है।

ऋण की वसूली हेतु

يَا تَكْفِيلُ يَا خَوَائِلُ يَا حَمَائِلُ
يَا فَتَّاحُ يَا فَتَّاحُ يَا فَتَّاحُ

किसी भी स्याही से एक पत्र पर निर्दिष्ट आलेख संकलित कर उसे चार तहों में मोड़कर तावीज़ बना लें। इस तावीज़ को दो समतल शिलाखंडों के मध्य एक स्थिर स्थान पर इस प्रकार रखें कि कोई उसे विचलित न कर सके। प्रत्येक शिला का न्यूनतम भार दो सेर होना आवश्यक है, जिससे ऊपरी शिला का पूर्ण भार तावीज़ पर बना रहे।

विशेष टिप्पणी: तावीज़ को अधिक प्रभावशाली और शक्तिशाली बनाने हेतु, ऋणी व्यक्ति का नाम एवं उसकी माता का नाम तावीज़ को मोड़ने से पूर्व अनिवार्य रूप से लिखें।

(२)

इशा की नमाज़ के उपरांत इकतालीस बार आयतुल कुसी (عظیم तक) का पाठ करें, तत्पश्चात् हाथों पर दम कर तीन बार मुख पर फेरें। इसके बाद ऋण प्राप्ति के लिए प्रार्थना करें। यह प्रक्रिया नब्बे (९०) दिनों तक निरंतर जारी रखी जाए। महिलाएं यदि किसी कारणवश मध्य में कार्यस्थगित करें तो विलंबित दिवसों को बाद में पूर्ण करें।

ऋण मुक्ति के लिए

प्रारंभ एवं समापन में एक बार दुरुद शरीफ, एक बार स्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, तथा एक हजार बार “یا فُتَّاحُ-فُتَّاحُ” का पाठ करें। यह प्रक्रिया सोने से पूर्व नब्बे (९०) दिनों तक अनवरत जारी रखें तथा तत्पश्चात् बिना वार्तालाप किए शयन करें।

कैदी की मुक्ति के लिए

तस्कीर-ए-हुक्काम (अधिकारियों को प्रभावित करने वाला) तावीज़ कैदी को गले में धारण कराना चाहिए। साथ ही, प्रत्येक गुरुवार की संध्या में बिना तावीज़ को उसके मौम जामा (मोमयुक्त आवरण) एवं वस्त्र-आच्छादन से निकाले लोबान की धूप दी जानी चाहिए।

अंचाई (कद) में वृद्धि हेतु

यदि कद अपेक्षाकृत न्यून हो एवं उसमें वृद्धि अपेक्षित हो,

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
الرَّتِلْكَ اَیَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِیْنِ ۝ الرَّحِیْمُ
الرَّرْحِیْمُ الرَّحِیْمُ یَا اللّٰهُ یَا مُرِیْدُ

तो ज़र्रदा के रंग एवं अरक-ए-गुलाब से तीन चीनी निर्मित पात्रों पर निर्दिष्ट आलेख संकलित करें। प्रातः निहार मुख, अपराहन असर के उपरांत, एवं रात्रि शयन से पूर्व एक-एक पात्र को जल से धोकर सेवन करें। यह प्रक्रिया छह माह तक निरंतर जारी रखें।

चौबीस घंटे में कम से कम बारह घंटे शयन की योजना को अमल में लाया जाए। शयन करते समय यह सुनिश्चित किया जाए कि टाँगें कमान की भाँति न हों, बल्कि सीधी और संतुलित स्थित में रहें। सिरहाने को अपेक्षाकृत ऊँचा रखा जाए, ताकि रक्त परिसंचरण पैरों की ओर अधिक केंद्रित हो।

दुआ की स्वीकृति

दुआ के कुबूल होने हेतु, तहेज्जुद की नफल नमाज़ अदा कर, प्रारंभ और अंत में ग्यारह-ग्यारह बार दुरूद-ए-इब्राहीमी (जो नमाज़ में पढ़ा जाता है) का

उच्चारण करते हुए, तीन सौ बार ज़ियारत वाला अमल पढ़कर दुआ करें।
इंशाअल्लाह, दुआ कुबूल होगी।

कैंसर

(कैंसर), रक्त में विकृति उत्पन्न करने वाला एक गम्भीर रोग है। इसके उत्पत्ति के प्रमुख कारणों में से एक यह है कि जब कोई व्यक्ति अपने मानसिक विचारों में अत्यधिक व्यस्त हो जाता है, तो वह मानसिक गतिविधियों से उत्पन्न होने वाली विद्युत धारा विषाक्त हो जाती है। यह विषाक्त धारा रक्त में भी विष का संचार कर देती है। परिणामस्वरूप, इस असंतुलित विद्युत प्रवाह के कारण रक्त में सूक्ष्म विषाणु (वायरस) उत्पन्न हो जाते हैं, जो एक निश्चित स्थान पर बस जाते हैं। वह विद्युत धारा, जो जीवन के क्रियात्मक प्रयोजनों के लिए आवश्यक है, अब इन विषाणुओं का आहार बन जाती है। इससे रक्त में मौजूद लाल कण (RBC) धीरे-धीरे समाप्त हो जाते हैं, और श्वेत कणों की संख्या बढ़ जाती है, जो शरीर के लिए अनुपयुक्त हो जाते हैं। यह श्वेत कण बलगम या लार के रूप में शरीर से बाहर निकलने लगते हैं, और इतने अधिक मात्रा में निकलते हैं कि अंततः व्यक्ति हड्डियों के ढाँचे में परिवर्तित होकर मृत्यु की ओर अग्रसर हो जाता है।

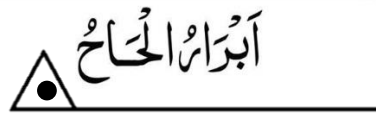
कैंसर की एक अन्य श्रेणी यह है कि विषैले कण एक स्थान पर एकत्रित हो जाते हैं। इन विषाक्त कणों के जमा होने से निकटवर्ती रक्तवाहिकाएँ

क्षतिग्रस्त हो जाती हैं, जिससे रक्त प्रवाह में विकृति उत्पन्न होती है और इसके परिणामस्वरूप मृत्यु का कारण बनती है।

यहां तक कि कैंसर के बाहरी लक्षणों की चर्चा हुई। अब आध्यात्मिक दृष्टिकोण से समझें कि कैंसर एक ऐसा रोग है, जो स्वभावतः संवेदनशील, शिष्ट और स्वतंत्र होता है, तथा यह सुनने और समझने की क्षमता रखता है। यदि इस रोग से मित्रता स्थापित की जाए और कभी-कभी, विशेष रूप से तब जब रोगी गहरी निद्रा में हो, उसे एकांत में प्रोत्साहित किया जाए, तो जैसे "कैंसर, तुम अत्यंत दयालु हो, तुम बहुत अच्छे हो, यह व्यक्ति बहुत कष्ट में है, कृपया उसे माफ कर दो, अल्लाह तुम्हें इसका अच्छा बदला देगा," तो यह रोगी को छोड़कर मित्रता की ओर अग्रसर हो जाता है।

इसके अतिरिक्त, जो लाल रंग में विद्युत धारा प्रवाहित होती है, वही कैंसर की आहार स्रोत होती है। यही कारण है कि रक्त में जो लाल कण होते हैं, वे उस इलेक्ट्रिक धारा का पालन करते हैं, जो कैंसर के विकास को पोषित करती है। इसलिए, यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि रोगी के आस-पास का वातावरण पूर्णतः लाल रंग में रंगा जाए। जैसे कि उसके कक्ष की दीवारें, दरवाजे, खिड़कियों के पर्दे, पलंग की चादरें, तकियों के कवर, यहाँ तक कि रोगी के पहनने के वस्त्र भी लाल रंग में होना चाहिए। इसके साथ ही, भोजन में लाल रंग मिश्रित पानी से एक स्याही तैयार की जाए, जिससे

٤	٦	٥	٢	٣	٢	١
١٢	١٣	١٢	١١	١०	٩	٨
٢१	٢०	١٩	١٨	١٧	١٦	١५



ص والقلم ص والقلم ص والقلم

इकतालीस (41) तावीज़ लिखे जाएं। एक तावीज़ रोगी के गले में स्थायी रूप से पहना रहे और शेष चालीस तावीज़ों को प्रत्येक दिन एक तावीज़ के हिसाब से चालीस (40) दिनों तक पानी से धोकर पिलाया जाए।

कुबड़

हराम मग़ज़ में स्वस्थ रेशे प्राकृतिक नियम के अनुसार कमज़ोर रेशों को मज़बूती प्रदान करते रहते हैं। इन रेशों को ऊर्जा प्रदान करने का माध्यम वह विद्युत प्रवाह (इलेक्ट्रिक करंट) है, जो मस्तिष्क में संचित होकर उसके समस्त कोशिकाओं (सेल्स) में प्रवाहित होती है। यदि यह विद्युत प्रवाह समान रूप से मज़बूत रेशों में वितरित होती रहे, तो व्यक्ति का वक्षस्थल (छाती) सुदृढ़ रहता है। किन्तु यदि किसी कारणवश यह प्रवाह असंतुलित हो जाए, तो पसलियाँ कमज़ोर एवं शिथिल हो जाती हैं, जिससे व्यक्ति कुबड़ा हो जाता है। इस रोग में पवित्र कुरआन की निम्नलिखित आयत

إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ۝

का बार-बार जप (स्मरण) किया जाए और जब भी जल ग्रहण करें, उस पर इस आयत को फूँककर पिएँ।

खेती-बाड़ी में समृद्धि

एक बड़े कागज़ पर

"अल्लाहु नूरुस्समावाति वल-अर्ज़"

اللَّهُ نُورُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ

लिखकर पाँच या दस सेर जल में घोल लें और इस जल को खेत में छिड़क दें। केवल एक बार इस प्रक्रिया को अपनाने से भूमि की उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है।

कार्य में मन न लगना

अस्थिर मानसिकता तथा व्यावसायिक कार्यों में अरुचि समाप्त करने के लिए प्रत्येक नमाज़ के पश्चात् "बिस्मिल्लाह" के साथ 100 बार

Bihawli wa quwwati, Lā ilāha illā Allāh, al-Muhaymin, al-

بِحَوْلٍ وَقُوَّتٍ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ
الْمُهَيِّمِينَ الْعَزِيزِ الْجَبَّارِ الْمُتَكَبِّرِ

निम्नलिखित आयत का उच्चारण करें और दुआ करें। यदि संबंधित व्यक्ति अत्यधिक आलसी हो, तो उसकी पत्नी अथवा कोई निकट संबंधी यह वज़ीफ़ा पढ़कर उसके लिए प्रार्थना करे। यह प्रक्रिया न्यूनतम 21 दिन और अधिकतम 40 दिन तक जारी रखें।

कुत्ते का काटना

सूरह माएदा की आयत 3

يَسْتَلُونَكَ مَاذَا أُحِلَّ لَهُمْ ط
 قُلْ أُحِلَّ لَكُمْ الطَّيِّبَاتُ وَمَا عَلَّمْتُم مِّنَ الْجَوَارِحِ
 مُكَلِّبِينَ تَعْلَمُونَ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللَّهُ
 فَكُلُوا مِمَّا أَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهِ
 وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

**Yas'alūnaka mādhā uḥilla lahum, qul uḥilla lakumu ṭayyibātu wamā
 'allamtum mina al-jawārihi mukallibīn tu'allimūnahunnāmimā
 'allamākumu llāh, fakulū mimmā amsakan 'alaykum wa dhukurū
 ismā llāhi 'alayhi wattaqū llāha inna llāha sarī'u al-ḥisāb.**

इस आयत को 11 बार पढ़कर जल पर फूँक दें और तीन दिन तक, प्रतिदिन तीन बार पिलाएँ।

आँतों में कीड़े (कृमि संक्रमण)

पेट में कृमि (केंचुए या अन्य परजीवी) होने से स्वास्थ्य बुरी तरह प्रभावित होता है। भोजन शरीर का पोषण करने के स्थान पर इन कीड़ों की आहार सामग्री बन जाता है। परिणामस्वरूप, पेट हमेशा फूला रहता है और थपथपाने पर ढोल की भाँति ध्वनि उत्पन्न होती है। कृमि संक्रमण के लक्षणों में निद्रा के दौरान मुँह से लार बहना और दाँत पीसना सम्मिलित हैं।

इस रोग के निवारण हेतु निम्नलिखित कुरआनिक आयत का पाठ करें:

يُذِجُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ
وَفِي ذَالِكُمْ بَلَاءٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ۝

(सूरह अल-बकरह आयत ४९)

काले रंग की स्याही से कागज पर लिखकर तावीज़ के रूप में गले में पहनाएं और वही आयत चीनी की प्लेटों पर भोजन के पीले रंग से लिखकर, सुबह, शाम और रात को सोने से पूर्व, पानी से धोकर पिलाएं। यह प्रक्रिया तीन दिनों से लेकर अधिकतम ग्यारह दिनों तक की जाए।

गुर्दे के सभी रोग

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

ل م ن ق

اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمِ

۷۹۵ ۷۹۵ ۷۹۵

गुर्दे में दर्द हो, चाहे वह वातजन्य हो या पथरी का, दोनों स्थितियों में मोम कागज पर नीचे दिए गए आकर को लिखकर गले में या दर्द वाली जगह पर बांधें। इस तावीज़ को धोकर पीने से भी अत्यधिक लाभ होता है। दर्द समाप्त हो जाता है और यदि गुर्दे में पथरी है, तो वह रेत बनकर मूत्र के रास्ते बाहर निकल जाती है।

गंजापन

स्वच्छ, पारदर्शी आसमानी रंग की शीशी या बोतल में शुद्ध तिलों का तेल भरकर रखें और एक तस्बीह के साथ "अल्ल त

الرَّاتِلِكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ
الرَّحِيمِ الرَّحِيمِ الرَّحِيمِ

Al-Rā, tilka āyātu al-kitābi al-mubīn.

Al-Raḥīm, al-Raḥīm, al-Raḥīm.

पढ़कर चालीस दिनों तक ८० करें, और 41वें दिन से प्रतिदिन सोते समय तेल को अच्छी तरह से सिर में मालिश कर लगाएं।

गठिया और घुटनों का दर्द

"फालिज का इलाज देखें।"

ज़नहरी (पलकों के फुंसियों)

एक बार

"لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ"

Lā tudrikuhu al-abṣār wa huwa yudrikul abṣār

पढ़कर अंगूठे के पहले हिस्से पर दम करें और अंगूठे से आंखों पर (पलकों के फुंसियों) को घुमा दें। कुछ दिनों के इस उपचार से रोग समाप्त हो जाएगा।

लू लगना

"بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ"

"هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى"

Huwa Allāhu al-Khāliq, al-Bāri', al-Muṣawwir, lahu al-asmā' al-ḥusnā

एक सफेद कागज पर लिखकर, बिना मोम के कपड़े में लपेटकर गले में बांधें। लू के प्रभाव समाप्त होने पर तावीज़ और कपड़ा दोनों जला दें। कच्ची खांड के शरबत पर यही आयत पढ़कर पीने से व्यक्ति लू के प्रभाव से सुरक्षित रहता है।

मुंह से बदबू आना

पेट में इन्फेक्शन और गंध के कारण गैस जब ऊपर की तरफ बढ़ती है, तो मुंह से बदबू आने लगती है। अगर मसूढ़ों में या दांतों के बीच में खाद्य कण जमा हो जाएं और सड़ जाएं, तब भी बदबू आती है, लेकिन वह गैस के कारण मुंह से निकलने वाली बदबू दूसरों के लिए मानसिक परेशानी का कारण बनती है। रोगी को इसका अधिक अहसास नहीं होता, लेकिन यह बदबू दूसरों को बहुत कष्ट देती है। इसके उपचार के लिए आहार में संतुलन बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। ऐसे रोगी को चाहिए कि वह अनियमित रूप से कोई भी खाद्य पदार्थ न खाए, केवल उन समयों में खाए जो उसने अपने लिए निर्धारित किए हैं। बासी और खमीर वाली चीजें न खाएं, खाना हल्का और जल्दी पचने योग्य हो। जब भी पानी पिएं, तो "مَرْكُونُ رُكُونِي" Markoon, rukooni " तीन बार पढ़कर उसे दम कर के पिएं। जुहर की नमाज़ के बाद "مَرْكُونُ رُ" की एक तस्बीह पढ़कर, एक पाउंड शुद्ध शहद पर दम करें। इस शहद को दिन में तीन बार, सुबह नाश्ते से पहले, दोपहर और रात के खाने से पहले एक-एक चम्मच खाएं। दांत हमेशा बिल्कुल साफ रखें, चाहे वह मंजन से हों या मुस्वाक से।

मकान या किसी दूसरी जगह को खाली कराना

यदि किसी व्यक्तिगत आवश्यकता के लिए या किरायेदार की प्रकृति से असंतुष्ट होने पर मकान या अन्य स्थान को खाली कराना हो, तो इशा की नमाज़ के बाद तीन सौ बार

وَأَلْفَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ

वैल्कट मा फीहा वा तकहालत

पढ़कर आंखें बंद कर लें और किरायेदार का ध्यान करके फूंक मारें। इस प्रक्रिया को कम से कम चालीस दिन और अधिकतम नब्बे दिन तक करना चाहिए।

मिर्गी का दौरा

कभी-कभी मानसिक विचारों का इतना अधिक दबाव हो जाता है कि मस्तिष्क की वह क्षमता जो विचारों को व्यवस्थित करती है, प्रभावित हो जाती है। यदि इस स्थिति में पानी सामने आ जाए, तो मस्तिष्क कार्य करना बंद कर देता है और मिर्गी का दौरा पड़ता है। जब तक विचारों का दबाव सामान्य से अधिक रहता है, रोगी बेहोश रहता है, और जैसे ही यह दबाव कम होता है, रोगी को होश आ जाता है। दौरे से क्योंकि सभी नसें सुस्त हो जाती हैं, इसलिए हिलने-डुलने में देरी होती है। इसका तत्काल और तात्कालिक इलाज यह है: मरीज़ के सिर को ज़मीन से हाथ पर केवल एक इंच ऊपर उठा लिया जाए। इससे ज़्यादा नहीं। दो-तीन बार सिर को हल्की हलचल से हिलाया जाए। दौरा खत्म हो जाएगा, फिर भी आँखों की पुतलियों की निगरानी कुछ समय तक की जाए ताकि वे कोशिकाएँ जो याददाश्त से संबंधित हैं, देखने वाले की नज़र से टकराएं और चेतना बहाल हो जाए। मिर्गी के रोग की एक पहचान यह भी है कि पुतलियाँ अपनी जगह से कुछ ऊँची हो जाती हैं।

मिर्गी के मरीज़ का आध्यात्मिक उपचार यह है: चालीस दिनों तक सुबह खाली पेट एक प्लेट पर

الطُّرُقُ النَّاسُ وَالْأَجْنََّةُ وَالرُّوحُ الْعِبَادِ الصَّالِحِينَ فِي الْكَوْنِ

Al-ṭuruqu al-nāsu wal-ajnatu wal-rūḥu al-‘ibādi al-ṣāliḥīn fī al-kawn

लिखकर पानी से धोकर पिलाएँ और साथ ही एक बड़े कागज पर लिखकर सिर से पैर तक कागज को पूरे शरीर पर मलें। यदि कागज फट जाए तो पुनः लिख लें। उपचार के दौरान इस बात का ध्यान रखा जाए कि रोगी को कब्ज की शिकायत न हो।

पुरुषों में स्त्रीत्व

क्रोमोसोम (Chromosome) में बारह छल्ले होते हैं और हर छल्ले का अपना विशिष्ट रंग होता है। गर्भ में यदि इन छल्लों के रंग में समानता रहती है तो बच्चा पूर्ण रूप से पुरुषी लक्षणों से संपन्न होता है, और यदि एक भी छल्ले का रंग बाकी ग्यारह छल्लों के रंग के समान नहीं रहता, तो उसी अनुरूप बच्चे में पुरुषी गुणों की कमी हो जाती है। यदि इन बारह छल्लों में से किसी एक छल्ले का रंग बहुत अधिक या बहुत कम हो जाता है तो लड़की उत्पन्न होती है।

कुछ पुरुषों में पुरुषी आकर्षण कम और स्त्रीत्व अधिक दिखाई देता है। उनके बोलने का तरीका, चलने का ढंग और रूप-रंग में नारीत्व की झलक होती है। कुछ पुरुषों की आवाज भी महिला की आवाज की तरह होती है। इसके

निवारण के लिए सुबह उठने के बाद और रात को सोने से पूर्व लंबे समय तक अ

الرِّجَالُ قَوَّامُونَ عَلَى النِّسَاءِ

"Ar-rijālu qawwāmūna 'ala an-nisā'."

का जप किया जाए।

नींद कम आना या बिल्कुल न आना

नींद न आने के प्रमुख कारणों में मस्तिष्क में रूखापन, स्नायविक तनाव, मानसिक संघर्ष या दूसरे शब्दों में मानसिक अशांति, मानसिक दबाव, चिंता, दुख और भय होते हैं। पहले इन सभी बातों से जहाँ तक संभव हो, मन को मुक्त करना आवश्यक है। यह कार्य ध्यान केंद्रित करने की प्रक्रिया के माध्यम से बहुत आसान हो जाता है।

सभी कार्यों से निवृत्त होकर आरामदायक बिस्तर पर लेट जाएँ। शरीर को ढीला छोड़ दें, आँखें बंद कर लें और यह कल्पना करें कि गर्दन से नाभि तक शरीर पर काँच का एक बड़ा जार रखा हुआ है, जिसमें हल्की, शीतल और आनंददायक दिव्य प्रकाश भरा हुआ है। जब यह धारणा स्थिर हो जाए, तो सूरह बकरह की पहली आयत " **لَمْ نَلِكْ** " **الْكِتَابُ لَا رَيْبَ فِيهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ** " **Alif-Lām-Mīm. Dhālika al-kitābu lā rayba fihi hudan lil-muttaqīn** " से **يُوقِنُونَ**. Yuqinon" तक पढ़ना आरंभ करें। कुछ बार पढ़ने से मीठी निद्रा प्राप्त होगी।

नाक से खून आना (नकसीर फूटना)

सफेद कागज पर तीन बार काली स्याही से "याबदीऊ. **يَابَدِيْعُ**" लिखें। फिर इस कागज को जला दें और जलने के बाद राख को उंगलियों से मसलकर नकसीर के रोगी को सुंघाएँ। यह प्रक्रिया कुछ बार करने से नकसीर का रोग समाप्त हो जाता है।

पुराना नज़ला

ऐसा पुराना नज़ला, जिसकी वजह से मस्तिष्क से दुर्गंध आती हो, नाक बंद रहती हो, आँखें भारी लगती हों, कानों में आवाज़ें सुनाई देती हों, और ऐसा प्रतीत होता हो कि मस्तिष्क में कोई वस्तु भरी हुई है—इससे मुक्ति पाने के लिए निम्नलिखित उपाय करें:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

يَا مِيكَائِيلُ يَا إِسْرَافِيْلُ يَا سَمَوَائِيْلُ يَا فَزْرَائِيْلُ

"Yā Mīkā'il, Yā Isrāfil, Yā Samwā'il, Yā Farzā'il."

कागज़ या चीनी की प्लेटों पर लिखकर इसे तीन समय पानी से धोकर पिएँ। आहार में उन चीज़ों से बचें जो पेट को हानि पहुँचाती हैं।

नाक बंद होने के कारण गंध न महसूस होना

यह एक रोग है जिसमें व्यक्ति सूंघने की क्षमता खो देता है, न उसे सुगंध आती है और न ही दुर्गंध। यहाँ तक कि वह सड़े-गले भोजन को भी पहचान नहीं सकता। यह समस्या मस्तिष्क के उन कोशिकाओं से जुड़ी है जो घ्राणेंद्रिय (सूंघने की शक्ति) को नियंत्रित करती हैं। इसके कई कारण हो सकते हैं, जिनका विवरण इस संक्षिप्त ग्रंथ में संभव नहीं।

उपचार:

जब भी पानी पिँ, उस पर एक बार "वल्लाहु यख्तस्सु बिरहमतिहि मय्यशा वल्लाहु जू अल-फ़ज़ल अल-अज़ीम. وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ Wa-llāhu yakhtaṣṣu biraḥmatihi" पढ़कर फूँक मार लें और फिर सेवन करें। इसके अतिरिक्त, एक खुले मुँह वाले टिन-लेपित स्टील के कटोरे में नमक मिला पानी भरें, इस पर भी यही पढ़कर फूँक मारें। फिर इस पानी को सुबह खाली पेट और रात को सोने से पहले पाँच-पाँच बार नाक में चढ़ाकर बाहर निकालें। ध्यान दें कि निकला हुआ पानी कटोरे में न गिरे, बल्कि कच्ची ज़मीन पर ही गिरे। यह उपचार लंबा चल सकता है, इसलिए बिना किसी घबराहट के इसे जारी रखें। इंशा अल्लाह, रोग से मुक्ति मिल जाएगी।

नाभि का खिसकना (नाफ़ टलना)

दो ताले इस प्रकार जोड़ें कि एक ताले की कुंडी दूसरे ताले में आ जाए।



इसके बाद, यही आकृति कागज़ पर बनाकर इसे मोड़कर एक तावीज़ तैयार करें। इस तावीज़ को मोम से सुरक्षित कर एक डोरी में बाँधें और इसे इस प्रकार पेट पर बाँधें कि तावीज़ नाभि के ऊपर रहे। स्नान आदि के समय भी यह तावीज़ बंधा रहना चाहिए। आराम मिल जाने पर पीरान-ए-पीर दस्तगीर हज़रत मुहीउद्दीन अब्दुलकादिर जीलानी की रूह को ईसाल-ए-सवाब करें।

नशे की लत छुड़ाने के लिए

नशे का आदी व्यक्ति जब रात को गहरी नींद में हो, तो उसके सिरहाने खड़े होकर सूरह माएदह की आयत 90 पढ़ें।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
إِنَّمَا الْحَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنْصَابُ وَالْأَزْلَامُ رِجْسٌ
مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ
فَاجْتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

"Ya ayyuha alladhina amanu innama alkhammaru walmaisiru walansabu walazlamu rijsun min amali ashshaytani fajtanibuhu la'allakum tuflihun."

पढ़ें कि उसकी नींद में कोई विघ्न न हो। इस अमल को चालीस दिनों तक जारी रखने से नशे की आदत समाप्त हो जाती है।

नाक के रोगों के लिए

नाक में हड्डी का बढ़ना, श्वास का रुकना, नाक के अंदर झिल्ली का क्षरण, गलघोंटू (डिप्थीरिया), नाक में अतिरिक्त हड्डी का निर्माण, नाक के अंदर फुंसियाँ, नाक का दुर्गंध और नाक में फोड़े जैसी समस्याओं के लिए:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
 × × × × ×
 × × × × ×
 × × × × ×
 یٰۤاَبَدِیْعُ یٰۤاَبَدِیْعُ یٰۤاَبَدِیْعُ

किसी मोमयुक्त कागज पर यह आयत लिखें और कागज को मोड़ कर तावीज़ बनाएँ। इसे मोम से कवर करके गले में पहनें। यह तावीज़ आसमानी रंग या काली चमकदार स्याही से लिखा जाना चाहिए।

हिचकी का उपचार

पानी पर एक बार

وَيَمْدُهُمْ فِي طُعْيَانِهِمْ يَعْْمَهُونَ

"वयमुदुहुम फ़ी तुग्यानिहिम यामहून".

"Wa yamudduhum fi tugyanihim ya'mahoon."

दम करके और यदि प्रभाव तेज़ करना हो तो प्लेट पर लिखकर पानी से धोकर पिलाएँ। अधिकतम तीन बार। यह दम किया हुआ पानी पीते ही हिचकियाँ बंद हो जाती हैं।

हकलाहट या लकलकन के लिए

एक आदमी की ऊँचाई के बराबर दर्पण के सामने बैठकर सौ बार

وَحُلُّلُ عُقْدَةٍ مِّنْ لِّسَانِي

Wahlul 'uqdatan min lisānī

रात को सोने से पहले इस तरह पढ़ें कि हर शब्द अलग-अलग उच्चारित हो और होंठों का हिलना दर्पण में दिखाई दे। वज़ीफ़ा खत्म करने के बाद हाथों पर दम करके तीन बार मुँह पर फेर लें और बिना बात किए सो जाएं। कोशिश करें कि नब्बे ९० दिन के इस अभ्यास में कोई खंडन न हो। यदि मजबूरी के कारण कुछ दिन न पढ़ सकें तो उन दिनों को गिनकर बाद में पूरा करें।

हड्डी की बीमारी जिसमें हड्डियाँ गलने लगती हैं और सूरासिफलस

प्लेट पर

رَحْمٌ رَفِيْقٌ يَا رَاحِيْلٌ مَعْنَى

Arham Rafiq ya Rahil Mani

लिखकर धोकर पिलाएं और साथ-साथ बड़े कागज पर लिखकर पूरे शरीर पर दिन-रात तीन बार लगाएं। एक लंबे समय तक यह उपचार जारी रखें। छह ६ महीने तक नमक बिल्कुल न खाएं। मांस की हड्डी, अंडा, मूली और लाल मिर्च से भी परहेज करें।

हैजा (कोलरा)

पीले रंग से फबी अयि अलाए रब्बिकुमा तुकेज़ज़िबान चीनी की प्लेट पर लिखें। और बार-बार चुने के साफ़ और शफ़ाफ़ पानी से धोकर पिलाएं। चुने का पानी प्राप्त करने का तरीका यह है: चुने का एक ढेला किसी बर्तन में डालकर पानी भर दें। चूना पकने के बाद ठंडा होने दें। अब पानी पर जो पपड़ी दिखाई दे, उसे धीरे से हटा कर ऊपर का पानी ले लें। पानी निकालते समय इस बात का ध्यान रखा जाए कि पानी जोर से न हिले, क्योंकि जोर से हिलने से बर्तन में बैठे हुए चुने के ज़रात पानी में शामिल हो सकते हैं, और चुने के ज़रात का पानी में मिलना हानिकारक है।

अगर इस प्रक्रिया में कठिनाई हो, तो सूखी लाल मिर्च के चार बीजों पर ऊपर की आयत पढ़कर दम करें और मरीज को मिर्च के ये बीज निगलने के लिए दें। ऊपर से

दो-तीन घंट पानी पिलाएं। पानी कच्चा नहीं होना चाहिए, पका कर ठंडा कर के पिलाएं। जब तक हैजा रहे, यह उपचार जारी रखें।

हड्डियों का पूर्ण न होना और हड्डियों में दर्द

इसके लिए टी.बी. (क्षय रोग) का उपचार पढ़ें और उस पर अमल करें।

हड्डियों का बढ़ना

सभी कार्यों से मुक्त होकर रात को सोने से पहले

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِنَّ الْإِنْسَانَ لَفِي خُسْرٍ

Innal insaan lafi khusr

सौ बार पढ़कर पानी पर दम करें और पिएं। इस प्रक्रिया की अवधि **नब्बे 90 दिन** है।

पीलिया या (Jaundice)

यह रोग यकृत (जिगर) की खराबी के कारण होता है। विभिन्न अनुभवों से यह सिद्ध हुआ है कि इस रोग के उपचार में तावीज़, गंडा और दम-दुआ अधिक प्रभावी हैं।

س	ر	ش	ك
ق	ع	ل	ت
خ	م	ف	ت
ن	ص	د	ض

ऊपर उल्लेखित तावीज़ को लिखकर रोगी के गले में डालें।

बसखपरा एक प्रकार की स्वयं उगने वाली घास है। इसे जमीन खोदकर इसकी जड़ें निकालें, फिर पानी से धोकर एक अंगूठे के बराबर काटकर रख लें। अब रोगी के कद के बराबर कच्चे सूत के इक्कीस या इकतालीस नाप लेकर चार तर्हों में लपेट लें। बसखप्रे की एक जड़ को एक गांठ में लपेटकर एक बार

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ۝

Iyaka nabudu wai iyaka nastayeen

पढ़कर उस पर फूंक मारें और गांठ कसकर बांध दें। इसी तरह इक्कीस जड़ों में इक्कीस गांठें लगाकर रोगी के गले में डालें। जैसे-जैसे रोग समाप्त होगा, यह गंडा बढ़ता जाएगा। पीलिया समाप्त होने पर इस गंडे को पीठ की ओर से निकालकर बहते हुए पानी में डाल दें।

आवाज़ को सुंदर बनाना

कुछ पुरुषों की आवाज़ में महिला जैसी नमी होती है, जबकि कुछ महिलाओं की आवाज़ फटी हुई और कर्कश होती है, जिसमें पुरुषाना पन होता है। मीठी और मधुर आवाज़ सुनकर सभी प्रभावित होते हैं। आवाज़ को मीठा और सुंदर बनाने के लिए,

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

۵	۵	۵	۵	۵
۹	۹	۹	۹	۹
۱۱	۱۱	۱۱	۱۱	۱۱
۹	۹	۹	۹	۹
۵	۵	۵	۵	۵

रोज़ाना काले रंग की स्याही से एक घड़े या मटका में यह लिखकर उसमें डाल दें। केवल इसी पानी का सेवन करें। पानी हर रोज़ नया बदलें। जो पानी बच जाए, उसे किसी साफ जगह या बगिया में बहा दें। इस प्रक्रिया की अवधि नब्बे 90 दिन है।

अल्सर या पेट में घाव

खाद्य पदार्थों में मिलावट के कारण यह रोग आम हो गया है। लाल मिर्च, गरम मसाले, तली हुई और खट्टी चीजों से परहेज करने के साथ-साथ यह तावीज़ रोज़ाना सुबह, शाम और रात को प्लेट पर लिखकर पानी से धोकर पिएं, इससे अल्सर और पेट में घाव की समस्या खत्म हो जाती है।

८१

१८	३२	२१	१	१५	१४	५
२३	१८	२३	२५	२	५	८
२२	२३	१९	२९	८	३	१०
३५	२८	३०	२०	९	१५	९
२८	३१	३२	३५	११	१५	१३

एपेंडिसाइटिस

दाएं पैर की जांघ में एक नस होती है, जो अक्सर पाचन तंत्र की खराबी और पेट में गंदगी की वजह से सूज जाती है या उसमें हवा भर जाती है। गैस का उत्सर्जन होने पर या मलत्याग होने पर दर्द में काफी कमी आ जाती है। इसका आध्यात्मिक उपचार

यह है: पीले या काले रंग की स्याही (जो बोर्ड लिखने में इस्तेमाल होती है) से सफेद चीनी की बड़ी प्लेट पर 21 बार رِيَا حِينَ مَاءٍ.Riya heen maayn लिखें और पानी से धोकर इसे दो बर्तन ठंडे पानी में मिला लें। इस पानी से दर्द वाली जगह पर धो लें। यह प्रक्रिया 24 घंटे में तीन बार करें।

आंखों में दर्द या लाली

लकड़ी की चौकी पर क़िबला की दिशा में बैठकर वजू करें और वहीं बैठे-बैठे 100 बार

قُلْ تَرَبَّصُوا فَإِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُتَرَبِّصِينَ

Qul tarabbasū fa innī ma'akum minal mutarabbişin.

पढ़कर गुलाब जल पर दम करें। फिर इसे ड्रॉपर से तीन-तीन बूँदें दोनों आँखों में डालें। आँखों में दर्द के दौरान लाल मिर्च से परहेज करना आवश्यक है।

असीब (बुरी आत्माओं) का तावीज़

किताब के प्रारंभ में असीब को दूर करने के लिए बातियों (फलीते) जलाने का उपचार बताया गया है। इस संबंध में हमें कई पत्र प्राप्त हुए हैं, जिनमें यह अनुरोध किया गया है कि इस विधि के साथ कोई नक़्श (तावीज़) भी होना चाहिए। यह नक़्श प्रस्तुत है:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
 یَا حَفِیْظُ یَا حَفِیْظُ یَا حَفِیْظُ
 یَا بَدِیْعُ یَا بَدِیْعُ یَا بَدِیْعُ
 یَا بَدِیْعُ الْعَجَائِبِ بِالْحَیْرِ یَا بَدِیْعُ
 ۹۹ ۹۹۹ ۹۹۹ ۹۹۹
 یَا حَفِیْظُ یَا حَفِیْظُ یَا حَفِیْظُ

इस तावीज़ को मोमी कागज़ पर लिखकर उसे मोमजामा कर लें और रोगी के गले में बाँध दें। गुरुवार के दिन, अस्त्र के बाद सूर्यास्त से पहले, तावीज़ को कपड़े के खोल से निकाले बिना लोबान की धूनी दें।

बच्चों के हृदय में छेद

सर्वप्रथम और अंत में ग्यारह-ग्यारह बार दुरूद शरीफ पढ़ें और फिर ग्यारह हजार बार निम्न आयत का पाठ करें:

"فَأَوْحَىٰ إِلَىٰ عَبْدِهِ مَا أَوْحَىٰ ۖ مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَىٰ"

Fa-awḥā ilā ‘abdihi mā awḥā. Mā kadhāba al-fu’ādu mā ra’ā.

यह पूरा पाठ एक ही बैठक में पढ़कर आधा सेर (लगभग आधा किलो) शुद्ध शहद पर दम (फूंक) करें। इस शहद को सुबह, शाम और रात में बच्चों को दें। खुराक की मात्रा उनकी आयु के अनुसार तय करें। छोटे बच्चों को उंगली से चटाएं और दस वर्ष

से अधिक उम्र के बच्चों को चाय की छोटी चम्मच से दिन में तीन बार दें। इस उपचार की अवधि छह माह है।

बगल और पैरों से दुर्गंध आना

बगल और पैरों से दुर्गंध आना एक कष्टप्रद समस्या है। ऐसे रोगी जब किसी सभा में बैठते हैं या अपने जूते उतारते हैं, तो तीव्र गंध उत्पन्न होती है, जिससे आस-पास के लोग परेशान हो जाते हैं। इस रोग से छुटकारा पाने के लिए ग्यारह सौ (1100) बार निम्न आयत पढ़ें:

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهْلَ بِهِ لِغَيْرِ اللَّهِ

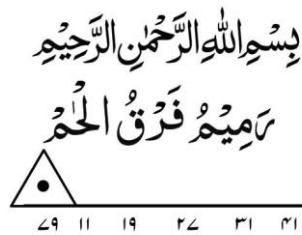
Innama harrama 'alaikumul maitata waddama walahmal khinzeeri wama
uhilla bihi lighayrillah

इसके बाद एक पाउंड शुद्ध शहद पर दम करें और इसे सुबह, शाम और रात में एक-एक चम्मच सेवन करें। उपचार के दौरान खाने में नमक की मात्रा न्यूनतम रखें।

पोलियो

टाइफाइड बुखार यदि पूरा समय पूरा होने से पहले समाप्त कर दिया जाए, तो अक्सर बच्चों को पोलियो हो जाता है। यह रोग अब इतना सामान्य हो गया है कि इसकी विस्तृत व्याख्या की आवश्यकता नहीं है।

इसका उपचार इस प्रकार करें: एक चुटकी चीनी और एक अत्यंत बारीक सुई लें। स्टेनलेस स्टील या चाँदी के कटोरे में दो-तीन घूँट पानी भरें। अब एक बार "ياودودو" .Ya wudoodo" पढ़ें और सुई पर फूँक मारें। इसके बाद सुई की नोक चीनी से स्पर्श कराएँ और फिर इसे पानी में डुबो दें। अब सुई को सफेद और साफ कपड़े से अच्छी तरह पोंछ लें ताकि उस पर पानी का कोई प्रभाव न रह जाए। इसी प्रक्रिया को **101 बार** दोहराएं। इसके बाद, इस पानी में केसर (जाफ़रान) मिलाकर एक विशेष स्याही तैयार करें। इस स्याही का उपयोग तावीज़ लिखने में किया जाए।



तीन प्लेटों पर लिखकर प्रातः, सायं और रात्रि में पानी से धोकर पिलाएँ। यही तावीज़ उसी रोशनाई से एक बालिशत चौड़े, चिकने एवं मोटे कागज़ पर लिखकर प्रभावित अंग पर दिन में तीन बार घड़ी की सुइयों की दिशा में हल्के हाथ से मलें। जब कागज़ फट जाए, तो नवीन कागज़ पर पुनः तावीज़ लिखें। चिकित्सा में समय लग सकता है, किंतु श्रद्धा एवं निरंतरता से इसका अनुपालन करें, लाभ सुनिश्चित है। आहार में शीतल, वायुवर्धक पदार्थों एवं अधिक नमक के सेवन से परहेज़ आवश्यक है।

नोट: प्रभावित अंग पर प्रयोग किए जाने वाले तावीज़ पर "बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्हीम" न लिखें।

मानसिक व्याकुलता (जहाँ भूत-प्रेत बाधा का संदेह हो)

रात्रि में शयन से पूर्व वुजू करें और रुई के दो फाहों पर एक बार आयत-उल-कुर्सी पढ़कर दम करें, तत्पश्चात् दोनों कानों में रखें। प्रातः जागरण के पश्चात् उन फाहों को किसी सुरक्षित डिब्बी में रख दें। प्रतिदिन रात्रि में पुनः यही प्रक्रिया अपनाएँ एवं कानों में रखें। इस विधि को कुछ सप्ताह तक नियमित रूप से जारी रखें।

पेट में पीड़ा

पेट दर्द के असंख्य कारण हो सकते हैं। उचित उपचार यही होगा कि पीड़ा के मूल कारण की पहचान कर उसके अनुसार चिकित्सा की जाए। किंतु अस्थायी एवं त्वरित राहत हेतु निम्नलिखित उपाय अपनाएँ...

मेदे की तरह बारीक पिसा हुआ निक एक चावल वजन के बराबर एक टी स्पून पानी में डाल दें और एक बार

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ

Allāhu Lā Ilāha Illā Huwa, Al-Ḥayyul-Qayyūm

पढ़कर पानी पर दम कर के पिएं। पानी पीते वक्त मुँह उत्तर दिशा में होना चाहिए।

तस्खीर अधिकारी और अफसरान

देखने में आया है कि दफ्तरों में कुछ जिम्मेदार अधिकारी अपने मातहतों से अच्छा सुलूक नहीं करते और उन्हें जाबे-बे-जाब परेशान करते हैं। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो अपनी व्यक्तिगत लाभ के लिए अपने मातहतों को खिलाफ-ए-दीआंत काम करने पर मजबूर करते हैं। ऐसी हालत में हरन की झिली, हुड़हुड़ के पंख या किसी पाक पक्षी जैसे फाख्ता, कबूतर या मोर आदि के पंखों के ऊपर नक़्श लिखकर सीधे हाथ पर बांध लें।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

ح ه + ی - ص + ل
ح - ه + ق - و + ن - ا ه

اللَّهُمَّ سَخِّرْ (अधिकारी का नाम पिता के नाम के साथ) فی حق आपका नाम और
आपकी माँ का नाम.

नोट: अगर अधिकारी या अफसर की माँ का नाम पता न हो तो उसके नाम के साथ उसका पद लिखें।

जादू टोने का समाधान

जब यह बात पुष्टि हो जाए कि किसी पुरुष या महिला पर जादू का असर है, तो ऐसी स्थिति में रोगी या रोगिणी के सिर से लेकर पैरों की अंगूठे तक नीले धागे के ग्यारह तार नापे जाएं। इन ग्यारह तारों की चार परतें बनाई जाएं। धागे के सिरों पर एक ढीली गाँठ लगाई जाए। एक बार "कुल आऊजु बिरब्बिल-फ़लाक़" पूरी सूरा पढ़कर

गाँठ में फूँक मारी जाए और तुरंत कस दी जाए, अर्थात फूँक को गाँठ में बंद कर दिया जाए। इसी प्रकार ग्यारह गाँठें लगाने के बाद धागे को जलते हुए अंगारों पर डाला जाए। जब धागा जलने लगेगा तो इससे बदबू या झनकार आएगी। जब तक यह बदबू या झनकार आए, रोज़ाना इस क्रिया को किया जाता रहे।

चीचक

निम्नलिखित तावीज़ गले में डाला जाए और जब स्थिति गंभीर हो, तो प्लेट पर लिखकर पानी से धोकर, हर चार घंटे बाद बड़े को एक बड़ा चम्मच और बच्चों को एक छोटा चम्मच पिलाया जाए। पानी हमेशा पका हुआ होना चाहिए, कच्चा पानी पिलाने से बचें।

ص	ع	ی	ح
ع	ع	ی	ح
ی	ی	ی	ح
ح	ح	ح	ح

खून में खराबी

खून में अस्वस्थ तरल पदार्थों का समावेश होने से खून खराब हो जाता है और इससे विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं, जिनमें त्वचा संबंधी रोग भी शामिल हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

لأی	لأی	لأی	لأی
لأی	لأی	لأی	لأی
لأی	لأی	لأی	لأی
لأی	لأی	لأی	لأی

यह नक्श, हलचल के अनुसार, पीले रंग और गुलाब के अर्क से लिखकर सुबह, शाम और रात एक-एक प्लेट पानी से धोकर 90 दिनों तक पिया जाए।

नोट: कोनों में दिए गए अंक नक्श की हलचल को दर्शाते हैं। नक्श में ये अंक नहीं लिखे जाएंगे।

रात को सोते समय चलना

यह रोग का बुरा संकेत है। निम्नलिखित तावीज़ 10 बार लिखे जाएं। एक तावीज़ को मोम से लपेटकर गले में डाला जाए और बाकी नौ तावीज़ों को एक-एक करके सुबह नंगे पेट पानी से धोकर रोगी को पिलाया जाए। पिलाने वाले तावीज़ को कागज पर पीले रंग की स्याही से लिखा जाए या प्लेट पर लिखा जाए। दोनों ही स्थितियों में लाभ होगा।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
 ك ه ع ص
 — x — x — x — x — x
 —————
 اَلْكَرِیْمُ الرَّحِیْمُ اَلْكَرِیْمُ الرَّحِیْمُ اَلْكَرِیْمُ الرَّحِیْمُ
 —————
 نُوْمُ الْعَرَبِ وَالْعَجَمِ

मनुष्य में दो दिमाग काम करते हैं। लेकिन ये दोनों दिमाग एक साथ पूरी तरह सक्रिय नहीं रहते। एक दिमाग हमेशा दबा रहता है और दूसरा प्रबल होता है। यदि किसी कारण से प्रबल और दबा रहने की प्रक्रिया प्रभावित हो जाए तो ज़वाल के बाद बेहोशी के दौर आने लगते हैं। इसका इलाज यह है:

रोगी को चाहिए कि दौरे के समय से आधा घंटा पहले आरामदेह बिस्तर पर लेट जाए और "या हफ़ीज़" का वर्त करता रहे। यदि नींद आ जाए तो सो जाए। "या हफ़ीज़" का वर्त इस समय तक किया जाए जब तक दौरा न पड़ जाए। लेकिन दौरा पड़ने के बाद भी एक घंटे तक बिस्तर पर ही रहें। इस प्रक्रिया की अवधि 40 दिन है।

व्यापार में बंदिश

कभी ऐसा भी होता है कि एक अच्छा खासा चल रहा व्यापार ठप हो जाता है और दुकान या व्यापार में ऐसी बंदिश आ जाती है कि सभी सामान और साधन उपलब्ध होने के बावजूद बिक्री नहीं होती और ऑर्डर नहीं आते। कहीं से ऑर्डर मिलता है तो उसकी पूर्ति नहीं हो पाती। दुकान में ग्राहक आते हैं, माल पसंद करते हैं, लेकिन खरीदी किए बिना चले जाते हैं, और वही माल दूसरी दुकान से अधिक कीमत पर खरीद लेते हैं। इसके समाधान के लिए यह उपाय करें:

सुबह सवेरे उठकर वजू करें। दुकान या दफ्तर में उस समय पहुंचें जब सूरज न निकला हो, एक बार "Qul A'udhu Birabbil-Nas" पूरी सूरा पढ़कर दुकान या दफ्तर के दरवाजे पर दम करें। पांच कदम पीछे हटकर पैरों के दोनों जूते उतार लें और जूतों को हाथ में लेकर तीन बार इस प्रकार झाड़ें कि जूतों के तले आपस में टकरा जाएं।

फिर जूते पहनकर दुकान या दफ्तर के अंदर लोबान की धूनी दें। यह उपाय केवल एक बार करना पर्याप्त है। इस उपाय में यह ध्यान रखना जरूरी है कि जूते चमड़े के तले वाले हों।

किसी सवाल का जवाब देते वक्त ज़बान का रुक जाना

नर्वसनेस (Nervousness) के कारण व्यक्ति पर अनजाना डर हावी हो जाता है। इसके बावजूद कि वह सामने वाले के सवाल का जवाब देने में पूरी तरह सक्षम होता है, लेकिन सामने वाले की शख्सियत से प्रभावित होकर वह जवाब नहीं दे पाता। और बाद में दिल ही दिल में पछताता है। इससे छुटकारा पाने के लिए सुबह सूरज निकलने से पहले वजू करके एक बार "Ya Wadudu" पढ़ें और सात बार हाथ के चुल्हू में ताजा पानी लेकर सात बार नाक में डालें और निकाल लें। यह उपाय पूरी तरह ठीक होने तक जारी रखना चाहिए।

कांच का बाहर आना

जिस तरह बड़ों को बवासीर की परेशानी होती है और शौच करते समय मस्से बाहर आ जाते हैं, ठीक वैसे ही बच्चों को भी यह बीमारी हो जाती है कि शौच के समय कांच बाहर आ जाती है। बच्चे रोते हैं, चिल्लाते हैं और इस गोश्त या कांच को अंगुली से दबा कर अंदर करना पड़ता है। इसका इलाज यह है कि बच्चे की ताजियत इस प्रकार कराएं कि उल्टे हाथ की बड़ी अंगुली शौच के स्थान से रगड़ती रहे। ताजियत कराते समय ज़बान से "

- فَعْلُنْ فَعْلُنْ فَعْلُنْ Fi'lun Fi'lun Fi'lun

पढ़ते रहें। दो-तीन बार के अभ्यास से यह रोग समाप्त हो जाता है।

घर में सभी का बीमार रहना

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह बहुत आवश्यक है कि घर साफ-सुथरा रहे और घर में नमी न हो। इसके साथ-साथ घर की हवा को शुद्ध करने के लिए लोबान या धूप की धूनी देते रहनी चाहिए और यह भी देखना चाहिए कि घर के सभी लोग क्यों बीमार रहते हैं। यदि कोई कारण न समझ में आए तो यह उपाय करें:

△ २२१९१२११११०३ ⊙
क ल क अ ल

लिखकर उस स्थान पर लटकाएं जहां तावीज़ हवा से हिलती रहे।

मन में खून भर जाना

दिमाग, गला, मसूड़े और फेफड़ों के प्रभावित हो जाने से या किसी अज्ञात कारण के आधार पर दिन या रात को सोते समय, मुँह में खून भर जाता है, और मरीज को बार-बार खून की कुलियाँ करनी पड़ती रहती हैं। इस तरह शरीर का सारा खून बाहर निकल जाता है। यह स्थिति अत्यधिक चिंताजनक और खतरनाक होती है। इलाज यह है:

उत्तम किस्म की रूई लेकर, दो फूएं पर एक बार

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

سَبِّحْ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى، الَّذِي خَلَقَ فَسَوَّى، وَالَّذِي قَدَّرَ فَهَدَى، وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعَى،
فَجَعَلَهُ غُثَاءً أَحْوَى

(Subbih Isma Rabbikal A'la, Alladhī Khalaqa Fasaawā, Waladhī Qaddara Fahadā, Waladhī Akhrajal Mar'ā, Fajālahu Ghusā'an Ahwā)

पढ़कर दम करें और एक-एक फूया दोनों कानों में रात को सोते समय रखें। अगली रात ये फूए निकालकर दूसरे दो फूएं पर दम करके कानों में रखें। इस प्रक्रिया की अवधि सात दिन है। फूएं इकट्ठा करके बहते पानी या कुएं में डाल दें।

अल्लाह के क़लाम की बरकत से यह बीमारी आसानी से ठीक हो जाती है। ऐसे कई मरीज मेरे पास आए जो महीनों से अस्पताल में भर्ती थे, चिकित्सक हैरान और परेशान थे कि यह खून कहाँ से आ रहा है? मरीज को बार-बार खून दिया जाता था और यह खून भी मुँह के रास्ते निकल जाता था। इस फ़कीर ने अल्लाह पर यकीन के साथ इलाज सुझाया और सभी मरीजों को खुदा के फज़ल और करम से स्वस्थ कर दिया। चिकित्सक समुदाय के लिए यह एक पहेली बन गई थी कि यह खून कैसे रुक गया?

नौकरी या व्यवसाय का प्राप्त करना

ऐसी स्थिति में जब प्रयासों का कोई परिणाम न निकलें, आशा टूट जाए, दिन, हफ्ते, महीने और कभी-कभी सालों तक कार्यालयों के चक्कर लगाने के बावजूद नौकरी न मिले या व्यापार में वृद्धि न हो, तो नौकरी या व्यापार में बरकत के लिए यह तावीज़

बाजू पर बांधें या गले में पहनें और हर समय वुजू में बिना वुजू के, चलते-फिरते, उठते-बैठते, सोते-जागते $يَا هَيُّ يَا قَيُّوْمُ$ (Ya Hayyu Ya Qayyum) का वज़न करें।

اللَّهُ لَطِيفٌ

۳۲۱ ^۱	۳۲۲ ^۲	۳۲۸ ^۳	۳۱۴ ^۴
۳۲۷ ^۵	۳۱۵ ^۶	۳۲۰ ^۷	۳۲۵ ^۸
۳۱۶ ^۹	۳۳۰ ^{۱۰}	۳۲۲ ^{۱۱}	۳۱۹ ^{۱۲}
۳۲۳ ^{۱۳}	۳۱۸ ^{۱۴}	۳۱۷ ^{۱۵}	۳۲۹ ^{۱۶}

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

कोणों में दिए गए संख्याएँ नक़्श की गति को व्यक्त करती हैं, इन्हें वास्तविक तावीज़ में अंकित न किया जाए।

बुरी नज़र

नज़र लगना एक ऐसा किस्सा है जिससे इनकार नहीं किया जा सकता। नज़र बड़ी, छोटी और जानवरों को भी लग सकती है और इसके विभिन्न प्रभाव होते हैं। जैसे कि किसी लड़की को नज़र लग जाए और उसकी शादी न हो, किसी आदमी को नज़र लग जाए और उसका दिमाग प्रभावित हो जाए और सोचने-समझने की क्षमता कम हो जाए, और उसकी सामान्य ज़िन्दगी के कामकाज में विघ्न आ जाए।

दूध देने वाले जानवर यदि नज़र बंद का शिकार हो जाएँ, तो वे दूध देना बंद कर देते हैं या उनके थनों से दूध के बजाय रक्त निकलने लगता है, अथवा दूध में मक्खन की मात्रा कम हो जाती है।

(अ) विवाह में बाधा

यदि किसी लड़की के रिश्ते आते हों लेकिन नज़र के प्रभाव के कारण तय न हो रहे हों, तो लड़की की माता या स्वयं लड़की **सूरह अल-फातिहा** इस प्रकार पढ़ें कि जब **اَللّٰهُمَّ** **اِنِّىْ اَسْئَلُكَ** (iyyāka na'budu wa iyyāka nasta'in) पर पहुँचे, तो इस आयत को ग्यारह बार पढ़ें, फिर पूरी सूरह पूरी करके पानी पर दम करें। इसी प्रकार, ग्यारह बार यह सूरह पढ़कर पुनः पानी पर दम करें और इस पानी को लड़की को तीन घूँट में पिलाया जाए या लड़की स्वयं इस अमल को करके पानी पी ले। यह अमल **चालीस (40) दिन** करना आवश्यक है।

(ब) नज़र उतारने की विधि

विवाह में रुकावट के अतिरिक्त नज़र उतारने के लिए नीचे दिया गया तावीज़ लिखकर कुछ मिनट तक सिर पर रखें, फिर जला दें। यदि एक तावीज़ से नज़र बंद का प्रभाव पूरी तरह समाप्त न हो, तो **तीन तावीज़** पर्याप्त हैं।

$$\frac{\triangle + 1 + 2 + 5 + 4}{\text{اَلْبَاسِطُ} \quad \text{اَلْيَاسِطُ}}$$

जानवरों पर से नज़र बंद को समाप्त करने के लिए यही तावीज़ बेर के पेड़ की लकड़ी या किसी ऐसी लकड़ी पर लिखें जिसमें गंध न हो और इसे प्रभावित जानवर के गले में डाल दें।